हज़रत इब्राहीम

हज़रत

इब्राहीम

आर. बख़्त

hazrat ibrāhīm

Hazrat Ibraheem

by R. Becht
(Urdu—Hindi script)

© 2019 MIK
published and printed by
Good Word, New Delhi

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

तआरुफ़

हमारी नज़र से शाज़ो-नादिर ही कोई ऐसी किताब गुज़री है जिसका मुसन्निफ़ तारीख़ के ख़ुश्क वाक़ियात में ज़िंदगी फूँकने और हमारे सामने जीती-जागती तस्वीर पेश करने में कामयाब हुआ हो। ताहम यह किताब इसी क़िस्म की एक कामयाब और क़ाबिले-तारीफ़ काविश है।

हज़रत इब्राहीम के हालाते-ज़िंदगी की तफ़सीलात तौरेत की पहली किताब पैदाइश के बाब 11 ता 25 में दर्ज हैं।

1

अठारवीं सदी क़बल अज़ मसीह के अवायल साल थे कि एक दिन बैठे-बिठाए दरयाए-यरदन की पुरअमन वादी में तहलका मच गया। ख़बर बिजली की तरह फैल गई कि दरयाए-फ़ुरात का हुक्मरान शाह किदरलाउमर जंग के लिए चढ़ा चला आ रहा है। न सिर्फ़ यह बल्कि वह कनान के बहुत-से क़बायल को शिकस्त दे चुका है।

उस वक़्त वादीए-यरदन के पाँच बड़े और मशहूर शहर बनाम सदूम, अमूरा, अदमा, ज़बोईम और ज़ुग़र थे। उनके अलग अलग हुक्मरान थे। बारह साल तक शाह किदरलाउमर को ख़राज अदा करने के बाद उन्होंने तेरहवें साल ख़राज देने से साफ़ इनकार कर दिया था। अब शाह किदरलाउमर दरयाए-यरदन की सरसब्ज़ो-शादाब वादी की तरफ़ पेशक़दमी करता चला आ रहा था। अब ना-फ़रमान रिआया को सज़ा देकर दिखाना था कि उस का क्या अंजाम होता है जो ख़राज देने से इनकार कर दे।

पाँचों हुक्मरान सख़्त घबरा गए। रात-दिन का चैन उन पर हराम हो गया। उन्होंने तेज़ी से अपनी अपनी फ़ौजों को मुनज़्ज़म और कील-काँटे से लेस करके लड़ने के लिए तैयार किया। एक ख़ुसूसी इजलास मुनअक़िद हुआ ताकि मिलकर तैयारियाँ करें। सब पर यह ख़याल हावी था कि इनकार करने से हमने ख़ुद अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारी है। हम किस तरह शाह किदरलाउमर और उसके क़वी लशकर का मुक़ाबला कर सकेंगे? सदूम का हुक्मरान अपने लबो-लहजे में एतमाद पैदा करने की कोशिश करते हुए बोला, “भाइयो! घबराते क्यों हो? हौसला रखो। हम अब की मरतबा किदरलाउमर के दाँत खट्टे कर देंगे। उसने हमें समझा ही क्या है! हम उसे बहीराए-शूर की वादी में जा लेंगे जहाँ

राल के गढ़े उसके शानदार रथों की पेशक़दमी को रोकेंगे और यों उसकी तनज़्ज़ुली और शिकस्त का सबब बनेंगे।"

ताहम वह सब सूरते-हाल की संगीनी से ख़ूब आगाह थे। ऐसी बातें कहना आसान था, लेकिन उन पर अमल करना मुश्किल। क्योंकि दरिया में रहकर मगरमच्छ से बैर रखने की हमाक़त उनसे सरज़द हो चुकी थी। पाँचों शहरों के बाशिंदे अजीब तज़बज़ुब में दिन बसर कर रहे थे। उनको हर वक़्त यही फ़िकर सता रही थी कि जाने दुश्मन बादशाह कहाँ तक बढ़ चुका है? वह हर आनेवाले दिन का ख़ौफ़ और दहशत से इंतज़ार कर रहे थे। हर एक पर यह सवाल सवार था : आज का जो सूरज तुलू हुआ है क्या हम उसके ग़ुरूब होने तक आज़ादी का साँस ले सकेंगे? या क्या हमारी क़िस्मत का सितारा डूब जाएगा और यह दिन हमें ग़ुलामी की ज़ंजीरें पहना देगा? क्या हम बाक़ीमाँदा ज़िंदगी किसी अजनबी मुल्क में असीरी की हालत में गुज़ारेंगे?

इस मुश्किल और सब्र-आज़मा वक़्त में उन्हें अपने देवताओं की याद आई : माज़ी में देवताओं ने हम पर बड़ी दया की है। क्या हम उन्हीं की मेहरबानी से ख़ुशहाल नहीं हैं? वह उनके सामने मख़सूस क़ुरबानियाँ गुज़रानने लगे। बाल नामी देवता उनका ख़ास देवता था, और उसी को सबसे ज़्यादा नज़रें गुज़रानी गईं। मगर हालात ज्यों के त्यों रहे और पाँसा पलटने के कोई आसार नज़र न आए। फिर ख़याल आया कि क्या हमें बाल की मंज़ूरी हासिल करने के लिए कुछ और करना चाहिए? क्या वह बच्चों की क़ुरबानियों से ख़ुश होगा? वह अपनी आज़ादी को बरक़रार रखने के लिए अपने अज़ीज़ और मासूम बच्चों तक को भेंट चढ़ाने पर आमादा थे। उन्होंने गिड़गिड़ाकर देवताओं के सामने मिन्नत-समाजत की और मन्नतें मानीं।

मगर बुतों की न झपकनेवाली आँखें उनकी परेशानी और ज़हनी कोफ़्त को न देख सकीं। वैसे सच तो यह है कि इस वादी के बाशिंदे अपनी बदकिरदारी के लिए मुल्क के तूलो-अर्ज़ में बदनाम थे। हक़ीक़त यह थी कि अगर आज भी हालात उनके हक़ में पलटा खाते तो उन में कोई अपनी बुरी राहों से बाज़ आने का इरादा नहीं रखता था। वह सिर्फ़ वक़्ती तौर पर बुरे वक़्त से बचाव के लिए आहो-बुका कर रहे थे।

फिर एक दिन वही हुआ जिसका ख़दशा था। शाह किदरलाउमर बहीराए-शूर की वादी में आ धमका। पाँचों शहरों की फ़ौजों ने उसका जी-जान से मुक़ाबला किया। मगर बरसों की तन-आसानी और ऐयाशी ने उन्हें सुस्त और आराम-तलब बना दिया था। वह ज़्यादा देर तक जमकर मुक़ाबला न कर सके। जल्द ही उनके हुक्मरान हवासबाख़्ता

होकर मैदाने-जंग से भाग निकले। जब सरदारों और सिपहसालारों का यह हाल हो तो फिर आम सिपाह का क्या कहना! वह सब भी हिम्मत हार गए और अपनी जान बचाने को भाग उठे। मैदाने-जंग से भागते हुए उन में से बहुत-से उन्हीं राल के गढ़ों में गिर गए जिनसे उन्होंने यह उम्मीद वाबस्ता की थी कि वह दुश्मन की हलाकत और शिकस्त का बाइस बनेंगे। भागते हुए सिपाहियों में से जो बाक़ी बचे वह अपनी जान को हथेली पर रखकर पहाड़ों में जा छुपे।

शाह किदरलाउमर और उसके तीन इत्तहादियों के लिए अब मौक़ा था कि सदूम, अमूरा और दीगर मालदार शहरों को लूट लें। ग़रज़ उन्होंने इन शहरों को ख़ूब ताख़्तो-ताराज करके किसी क़ीमती चीज़ या अनाज को शहर में बाक़ी न रहने दिया। जितने फ़रार न हो सके थे उनके हाथ लग गए। उन्हें ज़ंजीरें पहनाकर भेज दिया गया। फिर फ़तहमंद फ़ौज ने वादीए-यरदन के साथ साथ चलते हुए घर का रुख़ किया।

बचे हुए शहरियों में से एक ने अपनी छुपने की जगह से क़ैदियों का अलमनाक नज़ारा देखा—रोते हुए बच्चे, वावैला करती हुई माएँ, ख़ौफ़ज़दा नौजवान और मोमर लोग जिनकी कमरें ज़ईफ़ी से ज़्यादा पुर्ते-ग़म से झुक गई थीं। उसके दिल को इस मंज़र से सख़्त सदमा पहुँचा। बीच में उसने अजनबी लूत और उसके घराने को भी पहचान लिया। लूत को देखते ही उसे ख़याल आया कि मैं जाकर इस की ख़बर लूत के ताया हज़रत इब्राहीम को दूँगा। यक़ीनन यह अमीर और दिलेर ख़ानाबदोश अपने भतीजे लूत और दीगर बदक़िस्मत लोगों को बचाने की कोई तदबीर निकाल लेगा। लेकिन इसके लिए बहुत जल्द हज़रत इब्राहीम को ख़बर देनी चाहिए। यह सोचते ही वह वहाँ से भाग उठा।

तेज़ भागते हुए वह बिलकुल भूल गया कि उसे ख़ैमों से कुछ फ़ासिले पर रुकना चाहिए। लेकिन कुत्तों के भौंकने की आवाज़ ने उसे ख़बरदार कर दिया। तब एक घंबीर और बावक़ार आवाज़ ने तुंदख़ू कुत्तों को ख़ामोश रहने को कहा। क़ासिद यह देखकर बहुत ख़ुश हुआ कि क़बीले के सरदार इब्राहीम ख़ुद चले आ रहे हैं ताकि उसे अंदर आने की दावत दें।

“तुम पर सलामती हो” हज़रत इब्राहीम ने अजनबी को सवालिया निगाहों से देखते हुए कहा, “तुम हाँप रहे हो। अंदर आकर आराम करो।”

“जनाब माफ़ी चाहता हूँ। मैं वक़्त ज़ाया नहीं कर सकता।” क़ासिद ने तेज़ी से कहा, “मैं बुरी ख़बर लाया हूँ। दरयाए-फ़ुरात के हाकिमों ने सदूम और अमूरा को ख़ाली कर दिया और बहुतों को क़ैदी बना लिया है। आपका भतीजा लूत और उसका घराना भी

असीरों में शामिल हैं। मेहरबानी से उनकी मदद कीजिए। लेकिन जनाब, जल्दी कीजिए वरना उनके मुक़द्दर पर ग़ुलामी की मुहर लग जाएगी।"

हज़रत इब्राहीम अपने सफ़ेद बालों के साथ उस लंबे चोग़े में निहायत बा-वक़ार नज़र आ रहे थे। उनके चेहरे का पुरसुकून तअस्सुर गोया उनके चेहरे की ख़ुसूसी कशिश थी। इतमीनानो-सुकून बल्कि तवानाई और ताज़गी उनके चेहरे से निकलकर दूसरों तक पहुँचती मालूम होती थी। अब उनकी निगाहें क़ासिद पर नहीं बल्कि आसमान की तरफ़ उठी थीं। क़ासिद सोचने लगा कि क्या वह अपने ख़ुदा से दुआ कर रहे हैं? क्या वह राहनुमाई की इल्तिजा कर रहे हैं? अगले ही लमहे हज़रत इब्राहीम बोले, "आसमान का ख़ुदा इस काम में हमारी मदद करेगा। मैं अपने आदमियों को लेकर फ़ौरन उन क़ैदियों को छुड़वाने के लिए जाता हूँ। लेकिन मेरे दोस्त, तुम यहाँ आराम करो। फ़िकर करने की कोई ज़रूरत नहीं।"

जल्द ही पूरे डेरे में हलचल मच गई। हज़रत इब्राहीम ने अपने ख़ादिमों को वक़्त की ज़रूरत से आगाह किया और उन में से 318 तजरिबाकार जवान मर्दों का इंतख़ाब किया। वह सब ख़ानदान के अफ़राद की मानिंद थे और ख़ानदान और क़बीले की इज़्ज़त की ख़ातिर मर-मिटने को तैयार रहते थे। वह क़बीले की हिफ़ाज़त करना अपना फ़र्ज़े-मंसबी ख़याल करते थे। नीज़ वह सबके सब बा-ज़ब्त और जुर्रतमंद जियाले थे जिनकी बहादुरी और वफ़ादारी में किसी को कलाम न था। वह अपने आक़ा और सरदार हज़रत इब्राहीम की क़ियादत में हर वक़्त और हर जगह जाने को मुस्तैद रहते थे। अलावा अज़ीं तीन अमोरी भाइयों ममरे, इस्काल और आनेर ने हज़रत इब्राहीम के साथ इत्तहाद कर लिया। अब वह सब मिलकर दुश्मन के ताक़्क़ुब में तेज़ी से निकले।

शाह किदरलाउमर और उसके इत्तहादियों ने दान के मक़ाम पर डेरे डाले हुए थे। हज़रत इब्राहीम और उनके साथी उनका पीछा करते हुए वहाँ जा पहुँचे। रात का वक़्त था। उन्होंने तारीकी की ओट में हालात का जायज़ा लेने की ठानी। मगर क़रीब जाकर मालूम हुआ कि हमलाआवर फ़ौज अपनी फ़तह के नशे में इस क़दर चूर है कि उन्होंने डेरे की हिफ़ाज़त के लिए पहरेदार भी तैनात करने की ज़हमत न की थी। इस पर तुर्रा यह कि वह सब ख़्वाबे-ख़रगोश में मदहोश थे। ग़रज़ हज़रत इब्राहीम के लिए मैदान साफ़ और हालात साज़गार थे।

उन्होंने उन पर यकायक हल्ला बोल दिया। चूँकि दुश्मन ताहाल पूरी तरह बेदार भी न हुए थे और सख़्त हवासबाख़्ता थे, इसलिए वह समझे कि मिसरियों ने हम पर हमला

कर दिया है। वह बग़ैर मुज़ाहमत किए रात के अंधेरे में अपनी अपनी जान बचाकर भागे। हज़रत इब्राहीम और उनके आदमियों ने दमिश्क़ के शिमाल में वाक़े ख़ूबा के मक़ाम तक उनका ताक़्क़ुब किया। क़िस्साए-मुख़तसर यह कि अल्लाह ने अपने बंदे को फ़तहो-नुसरत से हमकिनार किया।

ख़ुशक़िस्मती से सब क़ैदी और उनका सारा मालो-मता महफ़ूज़ था। वह ज्यों का त्यों, सहीहो-सालिम इनके हाथ आ गया। लूत अपने ताया-जान की बर-वक़्त मदद और बचाव के लिए निहायत शुक्रगुज़ार था। लेकिन बुज़ुर्ग इब्राहीम ने जवाब दिया, "मेरे अज़ीज़! सच्चे ख़ुदाए-क़ादिर ने हमें फ़तह बख़्शी। उसी का शुक्र अदा करो।"

जब हज़रत इब्राहीम और उनके साथी कामयाबो-कामरान वापस आ रहे थे तो लोग उनका ख़ैरमक़दम करने और उन्हें मुबारकबाद देने के लिए निकले। उनके दरमियान सदूम का बादशाह भी था जो फ़रार होकर पहाड़ पर जा छुपा था। यह बुज़दिल बादशाह अब फ़िकरमंद था कि बुज़ुर्ग इब्राहीम उसके लोगों और उनके मालो-मता से क्या करेंगे! दस्तूर और क़ायदे के लिहाज़ से फ़तहमंदों को हक़ पहुँचता था कि वह सारे साज़ो-सामान और मालो-मता पर क़ब्ज़ा कर लें। लेकिन ताहाल इस ज़िम्न में किसी को उनके इरादे का इल्म न था। सदूम का बादशाह उनकी नीयत की टोह लेने के लिए बेताब था, लिहाज़ा वह बज़ाहिर बड़े इनकिसार से बोला, "बराहे-करम आप यह सारा मालो-मता रख लीजिए। लेकिन अगर आपको कोई एतराज़ न हो तो सदूम के शहरी मुझे वापस कर दीजिए।"

बुज़ुर्ग इब्राहीम ख़ूब जानते थे कि वादीए-यरदन के लोग किस क़िस्म के अफ़राद हैं और उनके बादशाह उनसे भी बदतर। इसलिए उन्होंने निहायत मतानत से जवाब दिया, "मैंने रब से क़सम खाई है, अल्लाह तआला से जो आसमानो-ज़मीन का ख़ालिक़ है कि मैं उस में से कुछ नहीं लूँगा जो आपका है, चाहे वह धागा या जूती का तसमा ही क्यों न हो। ऐसा न हो कि आप कहें, 'मैंने इब्राहीम को दौलतमंद बना दिया है।'"

पास खड़े हुए लोगों ने एक दूसरे की तरफ़ मानीख़ेज़ निगाहों से देखा, गोया कह रहे हों बुज़ुर्ग इब्राहीम ने बजा फ़रमाया। अगर वह सदूम के हुक्मरान से कुछ ले लेते तो वह कमज़र्फ़ इसी तरह की बातें बनाता फिरता।

बाद अज़ाँ सालिम (यरूशलम) के बादशाह मलिके-सिद्क़ ने बड़ी गरमजोशी से हज़रत इब्राहीम को मुबारकबाद पेश की। यह बादशाह हक़ तआला का इमाम भी था। उसने उनकी मेहमान-नवाज़ी की और उनके सामने खाने-पीने की चीज़ें रखकर उन्हें

बरकत देते हुए कहा, "अब्राम पर अल्लाह तआला की बरकत हो, जो आसमानो-ज़मीन का ख़ालिक़ है। अल्लाह तआला मुबारक हो जिसने तेरे दुश्मनों को तेरे हाथ में कर दिया है।"

इन हौसलाअफ़्ज़ा कलिमाते-बरकत से थके-माँदे जंगजू बुज़ुर्ग को बहुत तक़वियत हासिल हुई। उनका दिल शादमानी से भर गया जब उन्होंने देखा कि बुतपरस्तों की इस नगरी में मेरे अलावा कोई और भी वाहिद ख़ुदा का परस्तार है। कोई मेरा हम-एतक़ाद और अहले-ईमान है। चूँकि सालिम का बादशाह मलिके-सिद्क़ इमाम भी था इसलिए उन्होंने फ़ज़ीलत और बरतरी को तसलीम किया और उसकी ख़िदमत में माले-ग़नीमत की हर चीज़ का दसवाँ हिस्सा पेश किया। सबने हज़रत इब्राहीम को मुबारकबाद दी और उनकी जुर्रत और जवाँमर्दी की दाद दी।

लेकिन रात की तारीकी और तनहाई में जब बुज़ुर्ग इब्राहीम अपने बिस्तर पर लेट गए तो बेचैन ख़यालात उसे सताने लगे, "आख़िर क्या नतीजा निकलेगा? शाह किदरलाउमर और उसके जरनैल क़दमों के निशानों से जल्द ही इस नतीजे पर पहुँच जाएँगे कि मिसरियों की किसी बाक़ायदा मुनज़्ज़म फ़ौज ने इलाक़े के क़ुर्बो-जुवार में नक़लो-हरकत नहीं की, बल्कि यह चंद आदमियों का दस्ता था जिन्होंने उन पर गोरिल्ला अंदाज़ में अचानक धावा बोल दिया था। ऐन मुमकिन है कि वह हमलाआवरों का खोज लगाते इसी तरफ़ चले आ रहे हों। शाह किदरलाउमर इंतक़ाम लेने की ज़रूर कोशिश करेगा।"

हज़रत इब्राहीम बिस्तर पर लेटे ऐसे हौसलाशिकन अंदेशों में ग़रक़ करवटें बदलते रहे। आख़िरकार थकान की शिद्दत से उन्हें नींद आ ही गई। चूँकि उन्हें आज रात हौसलाअफ़्ज़ाई की ख़ास ज़रूरत थी इसलिए अल्लाह उन पर रोया में ज़ाहिर हुआ और फ़रमाया, "ऐ इब्राहीम, मत डर। मैं ही तेरी सिपर हूँ, मैं ही तेरा बहुत बड़ा अज्र हूँ।"

यह सुनते ही उनके सारे अंदेशे दूर हो गए। वह जान गए कि अल्लाह ने मेरी हिफ़ाज़त के लिए मेरे गिर्द बाड़ लगा दी है। किदरलाउमर भी इसे तोड़ नहीं सकता। ताहम ख़ुदा के कलाम के दूसरे फ़िक़रे से बुज़ुर्ग इब्राहीम ज़्यादा मुतअस्सिर हुए। अल्लाह ने फ़रमाया था कि "मैं ही तेरा बहुत बड़ा अज्र हूँ।" ख़ुदाए-जलील अपनी तमामतर बरकात के साथ उनका अज्र था! कितना अज़ीम करम था अल्लाह का उन पर।

चूँकि हज़रत इब्राहीम इस लमहे अल्लाह को इंतहाई क़रीब महसूस कर रहे थे, इसलिए उन्हें खुलकर बात करने की दिलेरी हुई। उन्होंने मुनासिब जाना कि अपने दिल के पोशीदा ग़म को उसके सामने पेश करें। उन्होंने कहा, "ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, तू मुझे क्या देगा

जब कि अभी तक मेरे हाँ कोई बच्चा नहीं है और इलियज़र दमिश्क़ी मेरी मीरास पाएगा। तूने मुझे औलाद नहीं बख़्शी, इसलिए मेरे घराने का नौकर मेरा वारिस होगा।" यह कहते ही बुज़ुर्ग इब्राहीम को ख़याल आया कि मुझे ख़ुदा से इतनी बेबाकी से बात नहीं करनी चाहिए।

लेकिन अल्लाह ने बड़े तहम्मुल से जवाब दिया, "यह आदमी इलियज़र तेरा वारिस नहीं होगा बल्कि तेरा अपना ही बेटा तेरा वारिस होगा।"

दरअसल अल्लाह हज़रत इब्राहीम की परेशानी को तब ही से जानता था जब वह उसके दिल में पैदा हुई थी। वह ख़ुश था कि उसके महबूब ने अपने दिली अंदेशे को उस पर ज़ाहिर किया है। अब ख़ुदा इब्राहीम को बाहर ले गया। तारों-भरी रात थी। ठंडी ठंडी रेत उनके क़दमों को चूम रही थी। उनके सर के ऊपर आसमान की साफ़-शफ़्फ़ाफ़ नीलगूँ चादर पर लातादाद सितारे जगमगा रहे थे। अल्लाह ने फ़रमाया, "आसमान की तरफ़ निगाह कर। अगर तू सितारों को गिन सकता है तो गिन। तेरी औलाद ऐसी ही होगी। आसमान की तरफ़ देख और सितारों को गिनने की कोशिश कर। तेरी औलाद इतनी ही बेशुमार होगी।"

हज़रत इब्राहीम ख़ुदाए-वाहिद की आवाज़ को ख़ूब पहचान गए थे। उन्होंने अपने कानों को इस आवाज़ को सुनने का ऐसा आदी कर लिया था कि वह सोते-जागते इस मानूस आवाज़ को सुन सकते थे। वह हक़ तआला के अहकाम को अच्छी तरह सुनकर ज़हन-नशीन कर लेते थे। अब फिर उन्हें अल्लाह की आवाज़ सुनाई दी। उसने फ़रमाया : "मैं रब हूँ जो तुझे कसदियों के ऊर से निकाल लाया कि तुझको यह मुल्क मीरास में दूँ।"

यह कैसी बात थी? हज़रत इब्राहीम की अब तक कोई औलाद न थी, और वह और उनकी बीवी सारा दोनों उम्ररसीदा होते जा रहे थे। ऐसी सूरत में अल्लाह के वादों पर यक़ीन करना आसान न था। और मुल्के-कनान उनकी मीरास में किस तरह आ सकता था? कनानी तो वहाँ आबाद होकर मुल्क पर पहले ही क़ाबिज़ हो चुके थे। फिर वह पसमाँदा लोग भी नहीं थे जिन पर ग़लबा पाना आसान होता। तारीख़ शाहिद है कि वह उस वक़्त भी लिखाई के फ़न से आशना थे और उनके हाँ सिक्के का इस्तेमाल रायज था। उनके शहरों के फाटकों पर अदलो-इनसाफ़ की चौकियाँ थीं जहाँ झगड़े चुकाए जाते और मामले तय होते थे। ग़रज़ यह बात नामुमकिन नज़र आती थी कि इस बेऔलाद

ख़ानाबदोश की नसल ऐसे तरक़्क़ीयाफ़्ता लोगों को मुल्क से निकाल बाहर करती और ख़ुद उस पर क़ब्ज़ा जमा लेती।

हज़रत इब्राहीम इस सूरते-हाल से ख़ूब वाक़िफ़ थे। तो भी उन्हें अल्लाह के वादे पर यक़ीन आया, और वह पुकार उठे, "मैं ख़ुदा पर ईमान रखता हूँ।"

यह कितना अज़ीम ईमान था। गो अब तक हज़रत इब्राहीम को न बेटा और न ही मुल्क हासिल था, तो भी उसका अल्लाह पर ईमान मज़बूत रहा। यही पुख़्ता ईमान देखकर क़ादिरे-मुतलक़ ने उन्हें रास्तबाज़ क़रार दिया। इसलिए नहीं कि ख़ुदा के यह ख़ादिम कामिल थे बल्कि इसलिए कि ख़ुदाए-रहीमो-करीम ने उनका ईमान देखकर उनको उनकी तमामतर ख़ामियों और कमज़ोरियों के बावुजूद मंज़ूर कर लिया था। लेकिन अब वह रफ़्ता रफ़्ता, क़दम बक़दम उनकी ऐसी राहनुमाई करेगा कि वह बिलआख़िर ऐसे इनसान बन जाएँगे जो हक़ तआला के दिल के मुताबिक़ हों। और याद रहे कि इस बतदरीज तरक़्क़ी की बुनियाद अल्लाह के वादे पर ईमान था।

यह बुज़ुर्ग इब्राहीम कौन थे जिन्हें लोग आज भी ख़लीलु-ल्लाह यानी अल्लाह का दोस्त कहकर पुकारते हैं? क्या यह बेवुक़ूफी न थी कि उन्होंने अपना अच्छा-भला वतन तर्क कर दिया ताकि दूसरे मुल्क में जाकर किसी नए मज़हब की बुनियाद रखें? या क्या उनका कारनामा सिर्फ़ यही था कि उन्होंने बहुत-से देवताओं में एक और देवता का मज़ीद इज़ाफ़ा कर दिया? या क्या वह फ़क़त मुहिमजू थे? क्या उनके पास सच्चे ख़ुदा का कोई ठोस सबूत था? जो भी हो, क्या यह अमर क़ाबिले-ग़ौर नहीं कि इस वाहिद सच्चे ख़ुदा का उनके दिलो-दिमाग़ पर ऐसा गहरा असर हुआ कि वह उसके इशारे पर अपना सब कुछ तर्क करने को तैयार थे। हाँ अपने वतन और बड़े क़बीले का तहफ़्फ़ुज़ भी उनकी नज़र में अल्लाह के हुक्म के मुक़ाबले में कोई वुक़अत न रखता था।

हज़रत इब्राहीम कहाँ से आए थे? उन्होंने किस वजह से उस इलाक़े को ख़ैरबाद कहा जो इनसान की पहली तहज़ीब का गहवारा था, जहाँ गल्लों के लिए सरसब्ज़ चरागाहें और इनसान के लिए ख़ुराक बा-इफ़रात थी?

आइए उस मुल्क की तरफ़ चलें जहाँ हज़रत इब्राहीम पैदा हुए और परवान चढ़े थे।

2

हज़रत इब्राहीम के आबाई मुल्क मसोपुतामिया (इराक़) में सूरज आहिस्ता आहिस्ता तुलू हो रहा था। अब उसकी ताबनाक शुआएं लहलहाते खेतों, हंसते-बोलते देहातों, ख़ानाबदोशों के ख़ैमों और बड़े बड़े फ़सीलदार शहरों पर पड़ने लगीं। दिजला और फ़ुरात के बड़े दरियाओं का शफ़्फ़ाफ़ पानी धूप में जगमग जगमग करने लगा। इन्हीं दो दरियाओं की वजह से इस इलाक़े को मसोपुतामिया का नाम दिया गया था जिसका मतलब "दरियाओं के दरमियान" या "दोआब" है।

सुबह के इस सुहाने वक़्त में एक किसान अपने अशया से ख़ूब लदे-फंदे गधे को शहर ऊर की तरफ़ हाँकता नज़र आया। वह मुल्क की उन बेशुमार नहरों में से एक के किनारे चलता गया जो खेतों की आबपाशी के लिए इस्तेमाल की जाती थीं। आस-पास हदे-निगाह तक सरसब्ज़ो-शादाब फलदार पेड़, झाड़ियाँ और सब्ज़ा बकसरत देखने में आता था। इस मैदानी इलाक़े में कोई पहाड़ी या टीला न था। खजूर के ख़ुशनुमा दरख़्त मैदानी इलाक़े की यकसानियत को कम करके उस में अनोखे हुस्नो-दिलकशी का जादू जगाते थे।

मुसाफ़िर गधे पर रखे टोकरे में से अंगूर का एक गुच्छा निकालकर उसके ज़ायक़े से लुत्फ़अंदोज़ होने लगा। उसके चेहरे पर मुसकराहट फैल गई। यह अंगूर और सेब कितने अच्छे दामों बिक जाएँगे। साथ ही गंदुम की दूसरी फ़सल तैयार हो रही है। अचानक एक आवाज़ ने किसान की सोचों का सिलसिला मुंक़ते कर दिया, "देवता की रहमत तुम पर हो।"

एक आदमी खेतों की किसी पगडंडी से निकलकर क़रीब आ गया। उसके सर पर खजूर के रेशे से बनी हुई रस्सियों और चटाइयों का वज़नी गठा था। वह भी क़दीम शहर ऊर को जा रहा था। इस तिजारती शहर पर काहिन की हुक्मरानी थी।

किसान उसे देखकर मुसकराने लगा। "चंद हफ़्ते पहले भी हमारी इसी तरह मुलाक़ात हुई थी। मऽरी फ़सल बहुत उम्दा हुई है। उम्मीद है देवता तुम पर भी उसी तरह मेहरबान रहे हैं जिस तरह मुझ पर।" लेकिन यह कहते हुए उसके माथे पर फ़िकरमंदी से बल पड़ गए। वह कहने लगा, "लेकिन देवताओं की नवाज़िश का क्या भरोसा...कौन जाने वह कब नाराज़ हो जाएँ।"

रस्सियोंवाले मर्द ने अपनी पेशानी पर से पसीना पोंछा, हालाँकि उसने कूल्हों के गिर्द कसकर बाँधे हुए लंगोट के अलावा कुछ नहीं पहना था। उसे गरमी लग रही थी। अपने गठे के बोझ-तले एहतियात से क़दम मारते हुए उसने हाँ में सर हिलाया और बोला, "अरे हाँ, थोड़ी देर हुई मैं बिलकुल यही सोच रहा था।" उसने राज़दाराना लहजे में कहा, "हम ख़ुशनसीब हैं कि इन सर्दियों में बड़े दरियाओं में सैलाब नहीं आया। सैलाब अपने साथ कैसी कैसी मुसीबतों का तूफ़ान लाया करता है। भई, देवताओं का जो जी चाहे करते हैं। कभी बड़ी नवाज़िश करते और कभी पल भर में सब कुछ मलियामेट कर डालते हैं। हमें तो जो कुछ मुक़द्दर दे वही लेना पड़ता है। लेकिन भाई, मालूम होता है कि देवता हमारी मुसीबत और बदहाली से ख़ुश होते हैं। काश कोई बताए कि ऐसा क्यों है!" उसने आख़िरी जुमला फिर सरगोशी के लहजे में कहा।

दोनों मुसाफ़िर इसी तरह की बातें करते अच्छी रफ़्तार से चले जा रहे थे। अब उन्हें अपने सामने ऊर का शहर साफ़ दिखाई दे रहा था। उसका सीढ़ीनुमा 70 फ़ुट ऊँचा मीनार आसमान से बातें करता दिखाई दे रहा था। रस्सीवाले ने कहा, "चाँद-देवता सीन का मंदिर कितना शानदार है। यक़ीनन वह बड़ा ताक़तवर देवता है। आज वापसी पर उसी से प्रार्थना करूँगा।"

"सीन-देवता की जय," किसान ज़ेरे-लब बुड़बुड़ाया।

दोनों लमहे भर को ठहरकर ऊँचे शानदार मीनार का नज़ारा करते रहे। यह मीनार नीचे से ऊपर तक चौड़ाई में कम होती हुई कई सीढ़ियों और चबूतरों पर मुश्तमिल था। सबसे ऊँचे चबूतरे पर देवता की मूर्ति का मंदिर था। दोनों राहगीर मीनार और उसके आस-पास खजूर के झुंडों पर आख़िरी निगाह डालकर अपनी अपनी राह चल दिए। हर

एक ने फ़ैसला किया कि वापसी पर मैं आसमानी पहाड़ी पर जाऊँगा। (लोग मंदिर को आसमानी पहाड़ी समझते थे)।

उस वक़्त मंदिर के एक कमरे में एक आदमी बड़ा मसरूफ़ था। वह मिट्टी की तख़्ती पर लिख रहा था। कितने फ़ख़्र की बात थी कि ऊर के शहर में कुतुबख़ाना भी मौजूद था! उसके सारे मालूमात मिट्टी की तख़्तियों पर महफ़ूज़ की गई थीं। यक़ीनन एक क़ाबिले-नाज़ मक़ाम था। चार हज़ार साल पहले किस शहर को ऐसी बेशक़ीमत मिलकियत रखने का शरफ़ हासिल था। यही वह ज़माना था जब मोहिंजोडरो और हडप्पा की क़दीम तहज़ीब अपने उरूज पर थी। लेकिन उन जैसे शहरों में ऐसे कुतुबख़ाने नहीं थे। मसोपुतामिया के लोग अपनी इस ख़ुशनसीबी के लिए निहायत शुक्रगुज़ार थे।

बाज़ औक़ात यह कातिब बंदरगाह पर जाकर मल्लाहों से बातें किया करता था जो दूर-दराज़ इलाक़ों की सैर करके आते और वहाँ के हालात की ख़बरें सुनाते थे। शहर के मग़रिब में फ़सील के साथ साथ दरयाए-फ़ुरात बहता था। समुंदर से आनेवाले बहरी जहाज़ हिंदुस्तान और दीगर मशरिक़ी ममालिक से तरह तरह का सामान लाकर उसकी पुरहुजूम बंदरगाह पर उतारते थे। नहरें भी तिजारत के फ़रोग़ में अपना हिस्सा अदा करती और छोटे छोटे जहाज़ों को दूसरे मराकिज़ तक ले जाती थीं। यही नहरें खेतों में पानी भी बहम पहुँचाती थीं, क्योंकि बारिश सिर्फ़ सर्दी के मौसम में होती थी। बग़ैर आबपाशी के फ़सलें नहीं उगती थीं।

अब कातिब कमरे से निकलकर बाज़ार की तरफ़ चला। वह तंग गलियों में से गुज़रने लगा जो इमारतों में से पेचो-ख़म खाती गुज़रती थीं। मकान कच्ची और पक्की ईंटों से बनाए बए थे, और उन में कोई खिड़की न थी। चलते चलते कातिब बाज़ार में पहुँच गया। सब्ज़ी और फल बेचनेवाले ज़रख़ेज़ मुल्क की रंगा रंग पैदावार पेश कर रहे थे। सौदागर हिंदुस्तान, यूनान, श्रीलंका बल्कि दुनिया के हर कोने के माल की नुमाइश कर रहे थे। जो सामान बहरी जहाज़ न ला सके वह कारवाँ ख़ुश्की के रास्ते से लाते थे। यहाँ दुनिया की हर चीज़ बराए-फ़रोख़्त मौजूद थी।

कातिब ज़रा रुककर एक माहिर सुनार को औरत के माथे का झूमर बनाते देखने लगा। उसका सर फ़ख़्र से ऊँचा हो गया। क्या ऊर के कारीगर मासिवा मिसर के दुनिया में अपनी मिसाल नहीं रखते? हर तरफ़ रौनक़ और चहल-पहल देखकर उसे उस वक़्त का ख़याल आया जब इस इलाक़े की मुख़तलिफ़ रियासतों पर मुख़तलिफ़ रईस हुकूमत करते थे। उस वक़्त उन रियासतों में आपस में अकसर झगड़े-तनाज़े रहते थे जो आम

तौर पर आबपाशी से ताल्लुक़ रखते थे। एक रियासत ज़्यादा नहरों पर क़ब्ज़ा कर लेती थी तो दूसरी के हिस्से में कम पानी आता था वग़ैरा वग़ैरा। लेकिन अब इन सब शहरों पर एक ही बादशाह की हुकूमत थी। पहले-पहल तो एक ही बादशाह की हुकूमत लोगों के नज़दीक क़ाबिले-क़बूल नहीं था। लेकिन तजरिबे ने साबित कर दिया कि यह निज़ाम सबसे बेहतर है। कातिब ने सोचा कि हमारे अज़ीम बादशाह हमूराबी[1] ने हमारे मुल्क की फ़लाहो-बहबूद और ख़ुशहाली के लिए कितना कुछ किया है। अब सारे मुल्क में अमन-चैन है और लोग हंसी-ख़ुशी ज़िंदगी बसर करते हैं। यक़ीनन वह दानिशमंद बादशाह है। उसी ने सबसे मशहूर क़वानीन नाफ़िज़ किए हैं। बेशक उसने बाबल के शहर को ख़ूब बड़ा और मशहूर कर दिया है जिससे ऊर की अहमियत कुछ कम हो गई है। मगर इससे क्या होता है, ऊर फिर भी ऊर है!

यकायक उसे याद आया कि अपनी कमसिन बीमार बेटी के लिए तावीज़ ख़रीदना है। काश वह जानता कि बेचारी को क्या तकलीफ़ है! पहले तो वह भली-चंगी, सेहतमंद और ख़ुशबाश रहती थी, लेकिन अब वह अचानक बीमार रहने लगी थी। बुख़ार तो उसे छोड़ने का नाम ही नहीं लेता। बाप के माथे पर बल पड़ गए। “क्या देवता मेरे ख़िलाफ़ हो गए हैं? मुझे सीन-देवता के सामने एक और क़ुरबानी चढ़ानी चाहिए ताकि वह बच्ची पर रहम करे। काश कि देवता इनसानों से फ़रक़ होते। काश वह मेहरबान, मददगार और पाक होते! इसके बरअक्स वह अकसर औक़ात इनसानों को अज़ियत पहुँचाकर ख़ुश रहते हैं। वह ख़ुद ऐयाश और गुनाहगार ज़िंदगी बसर करते हैं। वह ना-इनसाफ़ी से काम लेते और एक दूसरे से हसद भी करते हैं। भला इनसान उन्हें किस तरह ख़ुश कर सकते हैं?” यह हाल इस बेचारे कातिब ही का नहीं था। सब लोग अनदेखी ताक़तों से ख़ायफ़ और दहशतज़दा रहते थे।

अब सूरज ग़ुरूब होने लगा। रफ़्ता रफ़्ता शहर पर ख़ामोशी छा गई। जहाज़ों से सामान उतारने का शोर बंद हो गया। सिर्फ़ दरियाओं में लंगरअंदाज़ जहाज़ हौले हौले ऊपर नीचे जुंबिश करते रहे। शहर की फ़सील से बाहर ख़ैमों में ख़ानाबदोशों की आवाज़ें धीमी धीमी सुनाई दे रही थीं। सामी क़बीले का सरदार तारह बाज़ दीगर बुज़ुर्गों के साथ गुफ़्तगू में मसरूफ़ था। उसका बेटा इब्राहीम पास बैठा था। क़रीब क़रीब औरतें रोटी पकाने के लिए आग सुलगा रही थीं।

[1] Hammurabi

नौजवान इब्राहीम शाम के पहले सितारों पर ध्यान देने लगा। पहले-पहल तो वह बहुत मधम दिखाई दिए। मगर ज्यों-ज्यों शाम ढलती गई वह ज़्यादा शोख़ और ताबनाक होते चले गए। इब्राहीम सितारों को बड़े इनहिमाक और इश्तयाक़ से देखते रहे। वह सोचने लगा, "एक अज़ीम ख़ुदा ने चाँद, सितारों और सूरज को बनाया है। आसमान इस बात का शाहिद है कि वह ख़ुदा उन देवताओं से बिलकुल मुख़तलिफ़ है जिन्हें लोग जानते हैं। लेकिन सवाल यह है कि चाँद-सितारों का ख़ुदा कहाँ है? मैं उसे किस तरह मालूम कर सकता हूँ?"

होते होते यह सवाल उसके दिमाग़ में जुनून की तरह समा गया। आख़िरकार खाना तैयार हो गया तो क़बीले के हर फ़रद ने जी भरकर खाना खाया। जब तारह भी खाने से फ़ारिग़ हुआ तो उसके बेटे ने पूछा, "अब्बा जान! आप इन देवताओं की परस्तिश क्यों करते हैं? हमारे लोग इस इलाक़े के बुतों की पूजा क्यों करते हैं? क्या आसमान और ज़मीन का ख़ुदा सच्चा ख़ुदा नहीं है? क्या यह दुरुस्त नहीं कि हमारे आबाओ-अजदाद जो असूरिया के शिमाल से आए थे वह इस वाहिद ख़ुदा की इबादत करते थे?" जवाँ-साल इब्राहीम ने एक ही साँस में कई सवाल कर डाले।

तारह ख़ूब बौखला गया। वह शर्मसारी से दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए बोला, "मियाँ, तुम भी ठीक कहते हो और मसोपुतामिया के लोग भी।" लबो-लहजे और आँखों से मालूम हो रहा था कि उसके ख़याल में नौजवान इब्राहीम हद से ज़्यादा सर-गरम है। ख़ैर एक दिन वह भी ठंडा होकर बैठ जाएगा और मालूम कर लेगा कि कोई वुसूक़ से यह नहीं बता सकता कि सच्चा ख़ुदा कौन है। उसने कहा, "बेटा मैंने तुम्हें खुले आसमान के नीचे मज़बह बनाकर अल्लाह की परस्तिश करना सिखाया है। अगर तुमने उसकी इबादत करने का फ़ैसला किया है तो बख़ुशी ऐसा करो। लेकिन मेहरबानी करके दूसरे देवताओं के ख़िलाफ़ कोई सख़्त कलिमे न कहो। लोग यह बात पसंद नहीं करेंगे। अगर तुमने मेरी बात न मानी तुम हम सबको अपने साथ ले डूबोगे।"

हज़रत इब्राहीम दोदिला नहीं थे। वह बोले, "अब्बा जान! सच्चा ख़ुदा सिर्फ़ एक ही है। रात का आसमान, कायनात की हर शै और हर साल अपने वक़्त पर बदलते मौसम इसकी शहादत देते हैं कि सब चीज़ों का ख़ालिक़ एक है। उसी ने इन सबको तरतीब दिया है। वही इन सब पर इख़्तियार रखता है, और वही इन सब चीज़ों से पहले मौजूद था। सिर्फ़ वही हम्द और परस्तिश के लायक़ है न कि यह देवता जो लोगों को तमाम

वक़्त दहशतज़दा और हिरासाँ रखते हैं। मैं तब तक चैन से नहीं बैठूँगा जब तक उस सच्चे वाहिद ख़ुदा को जान न लूँ।"

उनके वालिद सुस्ती से सर हिलाकर मुसकरा दिए। वह भला कर भी क्या सकते थे? वह जानते थे कि जब बड़ा बेटा किसी काम को करने का तहैया कर ले तो उसे रोका नहीं जा सकता। और आख़िर कौन जाने वह इस वाहिद हक़ीक़ी ख़ुदा को तलाश कर लेने में कामयाब भी हो जाए।

3

क्या हज़रत इब्राहीम से ग़लती तो नहीं हुई थी? क्या वह एक ऐसे ख़ुदा की तलाश में थे जिसका वुजूद ही न था? बरसों की बेक़रारी और तलाश के बाद ऐसा ही मालूम होता था।

हज़रत इब्राहीम की शादी क़बीले की हसीनतरीन ख़ातून सारा से हुई थी। अब वह भी मसोपुतामिया की ख़ुशहाल सरज़मीन में बाक़ी सब लोगों की तरह हंसी-ख़ुशी ज़िंदगी बसर कर सकते, उनके रस्मो-रिवाज में घुल-मिलकर उनके देवताओं की पूजा कर सकते थे। उनकी सारी ज़िंदगी यहाँ तक कि उनके वालिदैन की भी उसी मुल्क में गुज़री थी, इसलिए यह फ़ितरी बात थी कि वह उन्हीं लोगों में घुल-मिल जाते। अपने एतक़ाद पर अड़े रहने से क्या हासिल था? लेकिन हज़रत इब्राहीम की अल्लाह के लिए तड़प उनके दिल में आग की मानिंद थी। उन्होंने हर क़ीमत पर ज़िंदा और वाहिद ख़ुदा की तलाश करने का तहैया किया हुआ था कि जब तक वह उसे पा न लें वह हरगिज़ चैन न पाएँगे।

एक दिन इस उक़्दे को हल करने की ज़बरदस्त ख़्वाहिश उन पर दुबारा ग़ालिब आ गई। तब उन्होंने फ़ैसला किया कि ख़ामोशी और तनहाई में कुछ वक़्त गुज़ारूँ, कि गाँव के शोर-शराबे और हंगामे से दूर होकर इस सवाल का जवाब मालूम करूँ। वह गधे पर कुछ खाना और पानी का मशकीज़ा रखकर घर से चल निकले। रास्ते में उनका दिमाग़ तरह तरह की सोचों की आमाजगाह बना हुआ था। कभी वह पुरउम्मीद होते और दिल ही दिल में कहने लगते, “वह ज़रूर मौजूद है। मैं उसे मालूम करके रहूँगा।” और कभी शक की परछाइयाँ उनके ख़यालों पर छा जातीं और वह कहने लगते, “अगर वह है तो मुझे मिलता क्यों नहीं? उसे मेरी बेक़रारी का इल्म क्यों नहीं?”

उम्मीद और शक के इसी शशो-पंज में सफ़र तय होता रहा। गधे और उसके सवार के पीछे गर्दो-ग़ुबार का एक बगूला ताक़्क़ुब करता हुआ नज़र आ रहा था। लेकिन हज़रत इब्राहीम अपनी सोचों में इस क़दर गुम थे कि नहर के किनारे सफ़र करते हुए उन्होंने खजूर के दरख़्तों पर निगाह तक न डाली, गो उनकी सब्ज़ शाख़ें आँखों को तरावत बख़्शती थीं और उनका अक्स नहर के शफ़्फ़ाफ़ पानी में ख़ूब नज़र आ रहा था। परिंदों की सुरीली आवाज़ें उन्हें नहीं सुनाई दे रही थीं, क्योंकि उनका दिल बार बार "तू कहाँ?" "तू कहाँ?" का वज़ीफ़ा कर रहा था। इसी धुन में सफ़र तय होता रहा। सच्चे ख़ुदा को जान लेने की ख़्वाहिश जो शुरू शुरू में दबी हुई चिंगारी की तरह सीने में सुलग रही थी आज भड़कता हुआ शोला बन चुकी थी।

पहले-पहल तो उनके रास्ते में कई दूसरे लोग भी देखने में आए—ग़ुलाम जो खेतों में काम कर रहे थे, ताजिर और कारोबारी हज़रात जो अपना माल जानवरों पर लादे या सिरों पर रखे ऊर की तरफ़ रवाँ-दवाँ थे। लेकिन रफ़्ता रफ़्ता लोगों का यह हुजूम कम होता गया और आख़िरकार बिलकुल ख़त्म हो गया। हज़रत इब्राहीम अकेले रह गए। तब उन्होंने आराम करने की ठानी। उन्होंने गधे को छोड़ दिया ताकि कुछ घास चरकर नहर से पानी पी सके। उन्होंने ख़ुद भी मशकीज़ा निकालकर अपनी प्यास बुझाई। थोड़ी देर दम लेने के बाद वह फिर गधे पर सवार होकर आगे चल पड़े। चलते चलते वह एक बड़े से खजूर के दरख़्त के नीचे ठहर गए। गधा उनके क़रीब ही घास चरने लगा तो वह ख़ुद पानी पीकर दरख़्त के नीचे दराज़ होकर आराम करने लगे। वह ख़ासे थक गए थे। जल्द ही उनकी पलकें नींद से बोझल होने लगीं, और वह गहरी नींद सो गए।

सूरज ग़ुरूब होने लगा। ऊपर दरख़्त पर तोतों का झुंड टीं टीं करके ख़ूब शोर मचाने लगा। हज़रत इब्राहीम ने करवट ली और फिर यकायक चौंककर उठ बैठे। वह अपना क़ीमती वक़्त नींद में गँवाना नहीं चाहते थे। फिर वह कुछ झुँझलाकर सोचने लगे कि कौन-सा तरीक़ा इख़्तियार किया जाए कि ज़िंदा ख़ुदा अपने आपको उन पर ज़ाहिर कर दे। इसी परेशानी में उन्होंने उठकर आसमान की तरफ़ अपने दोनों हाथ फैलाए और निहायत इनकिसार और ख़ुलूस से दुआ की, "ऐ ख़ुदा मैं जानता हूँ कि तू मौजूद है। मेरी मिन्नत है कि अपने बंदे पर अपने आपको ज़ाहिर कर। मैं तुझे जानना और यह मालूम करना चाहता हूँ कि किस तरह तेरी ख़ुशनूदी हासिल करूँ।"

शाम की शफ़क़ में उनके मुअद्दब, सीधे और दराज़-क़ामत जिस्म की शक्ल साफ़ दिखाई दे रही थी। फिर यकायक उस में हरकत आई। कोई ग़ैरमामूली क़ुव्वत उन्हें

सिजदारेज़ होने पर मजबूर कर रही थी। चंद लमहे इसी तरह सिजदे में रहने के बाद उनके लबों को जुंबिश हुई तो यह अलफ़ाज़ निकले, "हाँ ऐ ख़ुदा। मैं जाऊँगा।"

ढलती शाम के सुरमई साय रात की सियाही में तबदील हो चुके थे। हज़रत इब्राहीम अभी तक अल्लाह की हुज़ूरी में सर-निगूँ थे। उनका दिल ख़ुदा के लिए गहरी अक़ीदत और सताइश से भरा था। उनकी सोचों पर यह ख़याल हावी था कि "वाहिद सच्चा ख़ुदा मौजूद है, और उसने अपने आपको मुझ नाचीज़ पर ज़ाहिर किया है। वह मझसे हमकलाम हुआ है।" उन्हें इस सच्चे ख़ुदा का कहा हुआ हर लफ़्ज़ ख़ूब याद था। इस अनजानी आवाज़ को सुनकर वह पहले किसी क़दर ख़ौफ़ज़दा से हो गए थे, लेकिन फिर फ़ौरन उनके दिल में इतमीनान की लहर दौड़ गई थी। शक की जगह यक़ीनो-ईमान ने ले ली थी, हाँ ऐसा कामिल ईमान जो मरते दम तक उनके किरदार का नुमायाँ जुज़ बना रहा। वह यह जानकर कितने ख़ुश हुए कि "मैं तारीकी की ताक़तों के रहमो-करम पर नहीं। मेरी ज़िंदगी का एक मक़सद और इलाही मनसूबा है। अगर मुझे अपने मुताल्लिक़ अल्लाह की रज़ा का पूरी तरह इल्म न भी हो तो भी कोई नुक़सान नहीं। मेरे लिए यही जानना काफ़ी है कि अल्लाह का क़वी हाथ मेरी राहनुमाई कर रहा है।"

जब वह आख़िरकार अपने क़दमों पर खड़े हुए तो पौ फट रही थी। एक नया दिन तुलू हो रहा था। उन्होंने मशकीज़े में से पानी पिया और ताज़ादम हुए। फिर गधे पर सवार होकर घर का रुख़ किया। फ़िज़ा में किसी क़दर ख़ुनकी थी, मगर उन्हें किसी बात की परवा न थी। उनका दिल बेपायाँ मुसर्रत और जज़बे से भरा था। सारी रात जागने के बावुजूद वह अपने आपको ताज़ादम और हश्शाश-बश्शाश महसूस कर रहे थे। हर तरफ़ ख़ामोशी ही ख़ामोशी थी। इस ख़ामोशी में उनके गधे की ढीनचूँ ढीनचूँ दूर तक साफ़ सुनाई दे रही थी। उन्होंने उसे थपकी दी और ख़ुद थैले में से मुट्ठी भर खजूरें निकालकर खाने लगे।

गुज़श्ता रोज़ के रूहानी तजरिबे की हर एक बात उनकी याददाश्त में महफ़ूज़ थी। उन्हें अल्लाह की आवाज़ तक ख़ूब याद थी। ख़ुदा के कलाम का एक एक लफ़्ज़ उनकी लौहे-दिमाग़ पर नक़्श हो गया था। अल्लाह ने फ़रमाया था, "अपने वतन, अपने रिश्तेदारों और अपने बाप के घर को छोड़कर उस मुल्क में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा। मैं तुझसे एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा, तुझे बरकत दूँगा और तेरे नाम को बहुत बढ़ाऊँगा। तू दूसरों के लिए बरकत का बाइस होगा। जो तुझे बरकत देंगे उन्हें मैं भी बरकत दूँगा। जो तुझ पर लानत करेगा उस पर मैं भी लानत करूँगा। दुनिया की तमाम क़ौमें तुझसे

बरकत पाएँगी।" अल्लाह ने उसे दूसरे मुल्क में जाने का हुक्म दिया था, और उसने जवाब में बड़ी सादगी से यह कह दिया था, "हाँ ऐ ख़ुदा। मैं जाऊँगा।"

अब जब इस फ़िकरे का पूरा मफ़हूम उनकी समझ में आया तो वह चौंककर रह गए। वह सोचने लगे कि क्या मैं अपने इस वादे को पूरा भी कर सकूँगा? क़बीला और बिरादरी इनसान के लिए तहफ़्फ़ुज़ का ज़ामिन हुआ करते हैं। मैं उनसे किस तरह अलग हो सकूँगा? फिर उन्हें उस मुल्क का ख़याल आया जिसको छोड़ देने का हुक्म उन्हें मिला था। यह वह ख़ित्ता था जहाँ पुश्तों से उनके क़बीले के अफ़राद बूदो-बाश करते आए थे। बेशक वह पूरे मुल्क में अपने रेवड़ों और गल्लों के साथ फिरते रहते थे। लेकिन वह कभी इस इलाक़े से ज़्यादा दूर नहीं जाते थे। वह हमेशा तहवारों और मेलों-ठेलों के लिए ऊर के शहर में ही वापस आ जाते थे। कोई भी अपने वतन को छोड़ देने पर आमादा न होता था। अलबत्ता मुल्क और मुआशरे के क़वानीन को तोड़नेवाले लोग कभी कभार फ़रार होकर दूसरी जगह चले जाते थे। मगर वह भी आख़िर में मुल्क में वापस आकर सज़ा भुगतने को बाहर रहने पर तरजीह देते थे। हाँ तर्के-वतन का मुतालबा तो वाक़ई बहुत बड़ा मुतालबा था।

अचानक एक ना-गवार ख़याल आया। उनकी पेशानी पर बल पड़ गए। क्या मेरा ख़ुदा भी दूसरे देवताओं की तरह ज़ालिम और ख़ुदग़रज़ है? लेकिन अगले ही लमहे उनके दिल की हरकत एहसासे-मुसर्रत से तेज़ हो गई। क्योंकि उन्हें याद आया कि जिस ख़ुदा ने उन्हें वतन और ख़ानदान का तहफ़्फ़ुज़ तर्क करने को कहा था उसी ने उनको यह हौसलाअफ़्ज़ा ख़बर भी सुनाई थी कि "मैं तुझसे एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा, तुझे बरकत दूँगा और तेरे नाम को बहुत बढ़ाऊँगा।" यक़ीनन जो ख़ुदा इस क़दर तसल्लीआमेज़ कलिमे कह सकता है वह ज़ालिम नहीं हो सकता। अगर अल्लाह ने मझसे मुश्किल काम करने का मुतालबा किया है तो क्या हुआ। उसने साथ ही मेरी राहनुमाई और हिफ़ाज़त करने का भी वादा किया है। यक़ीनन अल्लाह के फ़रमान में मेरे लिए कोई बेहतरी और मसलहत होगी। फिर उन्होंने दुबारा अल्लाह की ताज़ीम में सर झुकाकर बड़े इतमीनान से पुरज़ोर लहजे में कहा, "हाँ ऐ ख़ुदा! मैं जाऊँगा।"

हज़रत इब्राहीम को शोरो-ग़ुल और गहमा-गहमीवाले ख़ैमों में वापस जाने की जल्दी न थी। वह जगह बजगह ठहरते, आराम करते और सोच-बिचार करते हुए सफ़र तय करते रहे। गाहे गाहे वह रुककर दुआ करते और अपनी जिस्मानी ताक़त को बहाल रखने के लिए कुछ खाकर ताज़ादम हो जाते। इस तरह मनज़िल बमनज़िल सफ़र तय होता रहा।

ग़ुरूबे-आफ़ताब के वक़्त उन्हें दूर से बावक़ार मीनारवाला ऊर का शहर नज़र आया। लेकिन सीन-देवाता और उसका मशहूर मंदिर उनके लिए कोई वुक़अत न रखता था। उनका दिल यह याद करके शुक्रगुज़ारी से छलक उठा कि मुझे इन देवताओं के मुक़ाबले में कहीं बेहतर ख़ुदा का इल्म हो चुका है। "काश सब लोग मेरे ख़ुदा पर ईमान ले आएँ," उन्होंने ख़ुलूसदिली से तमन्ना की। और फिर सोचने लगे, "हाँ मेरा फ़र्ज़ है कि मैं अल्लाह की गवाही देकर दूसरों को क़ायल करूँ कि सिर्फ़ वही सच्चा ख़ुदा है।"

अब ख़ैमों की बस्ती की मानूस आवाज़ें उनके कानों में पड़ने लगीं। कहीं कहीं जलती हुई आग आरामदिह घरेलू ज़िंदगी की मज़हर थी। जब वह गाँव में दाख़िल हुए तो उन्हें एहसास हुआ कि लोग उन्हें अजीब अजीब निगाहों से देख रहे हैं। क्या उनकी आवाज़ में कोई तबदीली थी या उनकी आँखों की चमक में कोई फ़रक़ था कि लोग मुड़ मुड़कर उन्हें देख रहे थे? उनकी बीवी सारा भी सलाम करने के बाद रोटियाँ पकाते पकाते यकायक रुक गईं। जो सवाल देर से उसकी ज़बान पर मचल रहे थे वह धरे के धरे रह गए। वह हैरत से देखती रह गईं।

ख़ुशक़िस्मती से उनके अब्बा जान ख़ैमे से बाहर अकेले ही बैठे थे। उन्होंने एकदम पहचान लिया कि प्यारे फ़रज़ंद की आँखों से बेक़रारी की झलक जाती रही है। अब ईमान की चमक और मक़सदियत की दमक है। वह एकदम बोल उठे, "तो तुमने उसको पा लिया?" उनकी आवाज़ में किसी क़दर लरज़िश थी।

"हाँ अब्बा जान। मैंने उसको पा लिया है। अब से मेरी ज़िंदगी उसके ताबे है। मैं उसका हुक्म मानने को तैयार हूँ।"

इब्राहीम ने अपना रूहानी तजरिबा अपने वालिद बुज़ुर्गवार को सुनाया। बुज़ुर्ग तारह ने जाँच लिया कि बेटा हरफ़ बहरफ़ सच कह रहा है। वह यह भी जानते थे कि बेटा ख़याली पुलाव पकानेवाला नहीं बल्कि हक़ीक़त-पसंद आदमी है। वह क़दरे झिजक के बाद फ़िकरमंदी के लहजे में बोले, "और उसका हुक्म क्या है?"

"मुझे अपने मुल्क और अज़ीज़ो-अक़ारिब को ख़ैरबाद कहकर दूसरे मुल्क को जाना होगा। फ़िलहाल मुझे यह इल्म नहीं कि वह मुल्क कौन-सा है, लेकिन अल्लाह जानता है।"

सारा जो दूसरों की नज़र से ओझल खड़ी सब कुछ सुन रही थीं दम बख़ुद रह गईं। उन्होंने अपना सर दोनों हाथों में थाम लिया। वह अपने आपसे कह रही थीं, "यह नहीं हो सकता। यह कभी नहीं होना चाहिए। कितनी अनहोनी बात है। मैं भला अपनी सहेलियों

और इस घर को किस तरह छोड़ सकती हूँ जिसे मैं इतना प्यार करती हूँ। मेरा सुसर भी कभी इस बात पर रज़ामंद नहीं होगा।"

पहले तो सिर्फ़ चंद बुज़ुर्ग ही तारह और उनके बेटे के पास आए, लेकिन जल्द ही यह ख़बर सारे डेरे में फैल गई कि तारह के ख़ैमे में कोई ख़ास बात वाक़े हुई है। आन की आन में एक जमघटा लग गया। अब वह सब हैरान बैठे हज़रत इब्राहीम की सरगुज़श्त सुनने लगे। इब्राहीम का ख़ुदा सुननेवालों को कितना भला और हक़ीक़ी मालूम होता था। लमहे भर के लिए वह इस शशो-पंज में पड़ गए कि क्या हम भी उसे अपना ख़ुदा तसलीम कर लें? लेकिन जब बुज़ुर्ग तारह के बेटे इब्राहीम ने अल्लाह के हुक्म को दोहराया जिसकी रू से उसे अपने मुल्क और अज़ीज़ों को अलविदा कहना था तो उनके रिश्तेदारों ने उनकी मुख़ालफ़त शुरू कर दी। "तुम्हारा ख़ुदा तो दूसरे देवताओं से भी गया-गुज़रा है," बाज़ चिल्ला उठे।

"कम अज़ कम कोई देवता किसी से अपना मुल्क और महफ़ूज़ घर-बार छोड़ने की तवक़्क़ो नहीं करता," एक और ने राय दी।

"इब्राहीम, तुम उस दिन ज़रूर ज़्यादा थक गए होगे। तुमने यह बातें महज़ तसव्वुर की हैं। इस हुक्म पर ठंडे दिल से ग़ौर करो।"

"क्या तुम्हारा अपना दिमाग़ तुमसे यह नहीं कहता कि वतन छोड़ना अनहोना क़दम है?" किसी और ने अपनी-सी कही।

"अरे मियाँ, तुम चले गए तो तुम्हारे बुज़ुर्ग बाप का क्या बनेगा? और हाँ तुम्हारी बीवी भी तो है। तुम्हें उसका कोई ख़याल नहीं?"

ग़रज़ जितने मुँह उतनी बातें। लोग इसी तरह की बातें कहते-सुनते अपने अपने ख़ैमों को चले गए, मगर रात का सुकून हराम हो चुका था। हर ख़ैमे में हज़रत इब्राहीम और उनके ख़ुदा के बारे में तबसिरे हो रहे थे। ख़ैर कुछ भी था वह सब एक बात पर मुत्तफ़िक़ थे और वह यह कि इब्राहीम के साथ कोई ग़ैरमामूली वाक़िया पेश आया है। क्योंकि सालों बाद ज़िंदगी में वह पहली बार ख़ुश और पुरसुकून नज़र आ रहे थे हालाँकि अल्लाह ने उन्हें इस क़दर कड़ा हुक्म दिया है।

उधर अपने ख़ैमे में हज़रत इब्राहीम अपने वालिद से कह रहे थे, "अब्बा जान! आपकी क्या मरज़ी है, क्या आप मेरे भाई नहूर के साथ रहेंगे या मेरे साथ?"

"मैं तुम्हारे साथ जाऊँगा। हम हारान के बेटे लूत को भी साथ ले लेंगे।"

वालिद के बेसाख़्ता जवाब से हज़रत इब्राहीम दंग रह गए। वह सोचने लगे कि "क्या मेरी बातचीत इस क़दर पुरअसर थी कि उसने मेरे वालिद को सच्चे ख़ुदा पर ईमान लाने पर मजबूर कर दिया है? या क्या वह अपने बड़े बेटे के जज़बे से मग़लूब होकर यह फ़ैसला कर रहे हैं? क्या वह इस इलाक़े को आसानी से छोड़ सकते हैं जहाँ उनका बेटा हारान दफ़न है?" जो भी हो वह शुक्रगुज़ार थे, क्योंकि यह मामूली-सी बात नहीं थी कि उनके वालिद बुज़ुर्गवार इस अहम मामले में उनके साथ शरीक हों।

जल्द ही लंबे सफ़र के लिए तैयारियाँ शुरू हो गईं। इस दौरान उन्हें यह ज़बरदस्त एहसास हुआ कि उन अज़ीज़ों और रिश्तेदारों से नाता तोड़ना आसान नहीं जो वहीं रह जाने को थे।

होते होते बहार का मौसम आन पहुँचा। एक दिन एक बड़ा कारवाँ रवानगी के लिए तैयार नज़र आया। जानेवालों ने कई बार मुड़ मुड़कर शहर ऊर के मानूस नज़ारे को देखा और अज़ीज़ो-अक़ारिब को अलविदा कहते हुए हाथ हिलाते देखा जो दूर खड़े उन्हें बौनों की तरह छोटे छोटे नज़र आ रहे थे। कारवाँ रवाना हुआ तो अजब समाँ था। कहीं भेड़-बकरियों के बड़े रेवड़ के ममयाने की आवाज़ के साथ हाँकनेवालों की आवाज़ें मिल रही थीं तो कहीं औरतों के रोने-धोने के साथ मर्दों की संजीदा घंबीर आवाज़ सुनाई दे रही थी। ग़रज़ इस तरह यह क़ाफ़िला सफ़र पर रवाना हो गया।

रास्ते में शानदार शहर, जगमग करते महल और कई क़ाबिले-दीद ज़राएये-आबपाशी जो रेगिस्तान को नख़लिस्तान और बंजर ज़मीन को ज़रख़ेज़ी में तबदील कर रहे थे नज़र आए। लेकिन कारवाँ आहिस्ता आहिस्ता हारान की तरफ़ बढ़ता रहा। दिन भर के सफ़र के बाद रात को ख़ैमे लगाकर आराम करना बहुत ख़ुश-आयंद मालूम होता था। बाज़ औक़ात रात की ख़ामोशी में गीदड़ों की आवाज़ें उन्हें चौंका देतीं, लेकिन जल्द ही ख़ैमों के मुहाफ़िज़ कुत्ते भौंककर तेज़ी से उनको जवाब देते और बात वहीं ख़त्म हो जाती। मुसाफ़िर बेफ़िकरी से सोते रहते, लेकिन हज़रत इब्राहीम बिलउमूम रात की ख़ामोशी से फ़ायदा उठाकर कुछ वक़्त अल्लाह की इबादत और उसके साथ रिफ़ाक़त में गुज़ारते। उनके नज़दीक यह रिफ़ाक़त निहायत बेशक़ीमत और क़ाबिले-क़दर थी। ऐसा करने से उन्हें सफ़र को जारी रखने के लिए ख़ास तक़वियत हासिल होती थी।

यह लोग हर रोज़ तक़रीबन 20 मील चलते थे। रफ़्ता रफ़्ता उन्होंने हारान की जानिब तक़रीबन 600 मील का फ़ासिला तय कर लिया। हारान का शहर मशहूर तिजारती मरकज़ था। वह मशरिक़ से मग़रिब जानेवाली शाहराह पर वाक़े था। जब यह लोग यहाँ

पहुँचे तो हज़रत इब्राहीम ने देखा कि वालिद साहिब बहुत ख़ुश हैं। उन्होंने अपने बेटे से कहा, “यहाँ हम कुछ ज़्यादा देर ठहरेंगे। मैं सफ़र करते करते उकता गया हूँ।”

यह मशवरा नहीं बल्कि हुक्म था, क्योंकि बहुत-सी ज़िम्मेदारियाँ बेटे के सपुर्द कर देने के बावुजूद बुज़ुर्ग तारह ने सरदारी की बाग-डोर मज़बूती से अपने हाथ में थाम रखी थी। बेटे ने बा-दिले-नख़्वास्ता बाप के हुक्म का एहतराम किया। वह दिल ही दिल में आह भरकर ख़ामोश हो रहे। मुसाफ़िरों ने यहीं डेरे डाल दिए। दिन गुज़रते गए और बुज़ुर्ग तारह ने कभी सफ़र को दुबारा शुरू करने का ज़िक्र तक न किया। हत्ता कि कई साल गुज़र गए। हज़रत इब्राहीम के वालिद कमज़ोर और ज़ईफ़ हो गए। अब वह सफ़र करने पर बिलकुल आमादा न थे। उन्हीं दिनों में उनका बेटा नहूर हारान में उनसे आ मिला। अब यह बात रोज़े-रौशन की तरह अयाँ थी कि वह हमेशा के लिए वहाँ आबाद हो गए हैं।

हज़रत इब्राहीम अजीब तज़बज़ुब में थे। एक तरफ़ तो बुज़ुर्ग वालिद का एहतराम करना लाज़िम था। लेकिन दूसरी तरफ़ अल्लाह ने फ़रमाया था कि वह हारान नहीं बल्कि उससे आगे बढ़ें। नाचार उन्होंने अपने वालिद की ख़्वाहिशात के सामने सरे-तसलीम ख़म कर दिया था जिसके लिए उन्हें एक भारी क़ीमत अदा करनी पड़ी। ख़ुदा के साथ उनकी रिफ़ाक़त पहले की तरह मज़बूत न रही, यहाँ तक कि आइंदा पंद्रह सालों में अल्लाह उनसे हमकलाम न हुआ और न रोया ही में उनको दिखाई दिया। आख़िर हज़रत इब्राहीम को एहसास हुआ कि ख़ुदा के हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी उनकी ज़िंदगी में गोया रूहानी काल का बाइस बनी थी। यह सूरते-हाल कब तक बरदाश्त की जा सकती थी?

4

हारान के पुर-रौनक़ शहर के बाहर हज़रत इब्राहीम ने ख़ैमों की बस्ती आबाद कर रखी थी। अब जब कि नहूर भी अपने अहलो-अयाल के साथ उनसे आ मिला था तो इस गाँव की वुसअत और फैलाओ में मज़ीद इज़ाफ़ा हो गया था। इसी गाँव के एक ख़ैमे में हज़रत इब्राहीम आराम फ़रमा रहे थे कि उनकी बीवी सारा ने उन्हें गरम दूध का प्याला पेश किया। जब वह रग़बत से दूध नोश करने लगे तो सारा को ख़याल आया कि क्या मेरे मियाँ भी उसी क़दर ख़ुश और मुतमइन हैं जिस क़दर मैं? दरअसल नहूर के आने से सारा की तबीयत बहुत बहल गई थी। नहूर के बच्चों की सोहबत और उनकी मासूम बातों में वह अकसर अपने बेऔलाद होने के ग़म को भूल जातीं। अब उन्होंने देखा कि उनके ख़ावंद ख़ैमों की बस्ती के मानूस नज़ारे पर नज़र दौड़ा रहे हैं तो उनकी अपनी निगाह भी उनकी नज़र का ताक़्क़ुब करने लगी। चंद हश्शाश-बश्शाश मेमने एक तरफ़ उछल-कूद रहे थे। कहीं कहीं कोई गधा बँधा हुआ नज़र आता था तो कहीं अपनी हर बात मनवा लेनेवाले बच्चे खेल रहे थे।

दूसरी तरफ़ चंद औरतें सिरों पर लकड़ियों के गठे उठाए चली आ रही थीं। इन मेहनती औरतों की कमरें कितनी सीधी और मज़बूत मालूम होती थीं। हज़रत इब्राहीम ख़ाली प्याला बीवी के हाथ में थमाते हुए बोले, “यह इलाक़ा अच्छा है” गोया उन्होंने बीवी के ख़यालात को भाँपकर उन पर रज़ामंदी की मुहर कर दी। “यहाँ अंजीर, अंगूर, ज़ैतून और शहद इफ़रात से है और मवेशी और पालतू जानवर बेशुमार। लेकिन फिर भी...”

वह यकायक रुक गए क्योंकि बीवी पर निगाह डालते ही उन्होंने उसकी आँखों में अंदेशे की झलक देख ली थी। उनका दिल अपनी ख़ूबसूरत बीवी के लिए नरम हो गया

जिसने उनके साथ ज़िंदगी के इतने साल गुज़ारे थे। उन्होंने सारा की आँखों में यह उम्मीद और इल्तिजा सफ़ाई से पढ़ ली, "सफ़र और ख़तरे की ज़िंदगी दुबारा शुरू न करो। यहाँ रहना अच्छा है, मैं यहीं ख़ुश हूँ।"

तब सारा जल्दी से बोल उठीं, "हारान जैसा इलाक़ा आसानी से न मिलेगा। यहाँ पर मुख़तलिफ़ ज़बानें बोलनेवाले मुख़तलिफ़ नसलों के लोग इकट्ठे अमन से रहते हैं।"

हज़रत इब्राहीम ने हाँ में सर हिलाया हालाँकि वह जानते थे कि उन्हें अपनी बीवी के जज़बात को फिर से मजरूह करना पड़ेगा। जल्द या बदेर उन्हें फिर यहाँ पर रहनेवाले रिश्तेदारों को अलविदा कहकर सफ़र इख़्तियार करना होगा। इसलिए कि अब उन पर ख़ूब वाज़िह हो चुका था कि अल्लाह ने उन्हें अपने अज़ीज़ और रिश्तेदार छोड़ने के लिए क्यों हुक्म दिया था। जब से नहूर और उसका घराना हारान आए थे वह अपने साथ बहुत-से बुतों को भी लेते आए थे। वह तवह्हुम-परस्त भी थे। उनकी ज़िंदगी तवह्हुमपरस्ती और बुतपरस्ती से इस क़दर वाबस्तगी इख़्तियार कर चुकी थी कि हज़रत इब्राहीम को ख़दशा था कि उनके अपने ख़ानदान में भी यह बुराई जड़ न पकड़ ले। वह हर मुमकिन कोशिश करके ऐसी सूरते-हाल को पैदा होने से रोकना चाहते थे।

यह अल्लाह की बड़ी नवाज़िश थी कि हज़रत इब्राहीम के ख़ानदान से ताल्लुक़ रखनेवाले बहुत-से लोग वाहिद और सच्चे ख़ुदा पर ईमान ले आए थे। अब उनकी कोशिश थी कि बाक़ी अफ़राद को भी इसी रास्ते पर ले आएँ। वह उठ खड़े हुए और बोले, "मैं अब्बा जान को देखने जा रहा हूँ। उनकी तबीयत गुज़श्ता चंद दिनों से ठीक नहीं है।"

"वह अब बहुत उम्ररसीदा हैं, इस उम्र में आप क्या तवक़्क़ो कर सकते हैं," सारा ने अफ़सुरदा लहजे में कहा।

ऐन उस वक़्त नहूर भागता हुआ उनके ख़ैमे की तरफ़ आया। चूँकि नहूर आम हालात में कभी नहीं दौड़ता था इसलिए हज़रत इब्राहीम उसे भागता देखकर भाँप गए कि वालिद की तबीयत ज़्यादा ख़राब है। "जल्दी आओ" नहूर ने उन्हें दूर ही से इशारा किया। "वालिद साहिब की हालत बहुत नाज़ुक है।"

वह दोनों तेज़ी से बुज़ुर्ग तारह के ख़ैमे की तरफ़ चल दिए जो इतनी मुद्दत तक उनका रहबर और दस्तगीर रहा था। इतने में सारे क़बीले को इत्तिला कर दी गई थी कि बुज़ुर्ग तारह क़रीबुल-मौत हैं। हर सिम्त से लोग ख़ैमे के आस-पास इकट्ठे हो रहे थे। वह निहायत अदब से ख़ामोश खड़े थे। ख़ामोश, मुअद्दब और मुंतज़िर!

नहूर और उसकी बीवी मिलकाह और दीगर क़रीबी रिश्तेदार तारह के बिस्तर के क़रीब खड़े थे। वह बिलकुल साकित लेटे थे। हज़रत इब्राहीम और उनकी बीवी जब पहुँचे तो समझे कि बहुत देर से पहुँचे हैं। औरतों ने रोना और बैन करना शुरू किया तो अचानक बुज़ुर्ग तारह ने आँखें खोल दीं और अपनी निगाहें हज़रत इब्राहीम के चेहरे पर गाड़ दीं। वह कुछ कहना चाहते थे मगर क़ुव्वते-गोयाई जवाब दे चुकी थी। हज़रत इब्राहीम को अपने वालिद की निगाहों में अफ़सोस का तअस्सुर नज़र आया गोया वह उनसे ख़ास तौर पर माज़रत-ख़्वाह हों। इब्राहीम सोच रहे थे कि क्या मेरे वालिद को मालूम हो गया है कि वह मेरे बड़े मिशन की राह में हाइल रहे हैं! फिर बुज़ुर्ग तारह की रूह बदन से परवाज़ कर गई और यह मसला हमेशा हमेशा के लिए सीग़ाए-राज़ में रह गया।

वालिद की वफ़ात दूसरों की तरह हज़रत इब्राहीम के लिए भी दिली सदमे का बाइस बनी। वह देर तक उनकी कमी महसूस करते रहे। लेकिन वह दूसरों के बेबस रोने और बैन करने में शरीक न हुए। क्योंकि उन्हें इस उम्मीद से तसल्ली थी कि मौत के बाद भी ज़िंदगी है। जो ख़ुदा जीते-जी वालिद की राहनुमाई करता रहा था वह मौत के बाद उसे इससे ज़्यादा ख़ूबसूरत जगह अता करेगा।

लेकिन मातम के ऐयाम में नहूर और दीगर रिश्तेदारों की सोचें इतनी पुरउम्मीद न थीं। तजहीज़ो-तकफ़ीन की आख़िरी रुसूम की अदायगी के दौरान उनका रोना-धोना इतना दर्दनाक था कि हज़रत इब्राहीम को शक गुज़रने लगा कि आया यह लोग ऐसे ख़ुदा पर एतक़ाद रखते भी हैं या नहीं जो ज़िंदों और मुरदों दोनों पर इख़्तियार रखता है।

वालिद की वफ़ात के ग़म के साथ उन पर अपने पूरे कुंबे की ज़िम्मेदारियों का बोझ आ पड़ा था। अब वह क़बीले के सरदार थे। लेकिन वालिद से जुदाई के सदमे और क़बीले की नई ज़िम्मेदारियों के अलावा एक और बात उन्हें चुभोने लगी, और वह यह कि ज़िंदगी चंद-रोज़ा है। मेरे भाई हारान को तो क़ुदरत ने इतनी मोहलत भी अता नहीं की थी जितनी कि मुझे मिली है। क्या मालूम मेरी अपनी ज़िंदगी का दिया कब बुझ जाए। मेरा चलन कैसा रहा है? क्या मैं अल्लाह के हुज़ूर फ़रमाँबरदारी से चलता रहा हूँ? हरगिज़ नहीं, बल्कि मैं अपने वालिद के जज़बात का ख़ुदा के अहकाम से ज़्यादा एहतराम करता रहा हूँ। अल्लाह के हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी ने मेरे और अल्लाह के दरमियान जुदाई की ख़लीज हाइल कर दी है। मेरे दिल में अब अल्लाह की मुहब्बत का पहले जैसा जोशो-जज़बा नहीं रहा। उन्हें इस बात का दिली अफ़सोस हुआ, और उन्होंने फ़ैसला किया कि आइंदा मैं दोदिली ज़िंदगी बसर नहीं करूँगा। आइंदा मैं अल्लाह को अव्वलियत दूँगा

और तन, मन, धन से उसकी ख़िदमत करूँगा। मेरी तमामतर दिलचस्पी, मरज़ी और मुहब्बत सब अल्लाह की आला रज़ा के मातहत और ताबे होगी।

ज़िंदगी के इस मोड़ पर हज़रत इब्राहीम का दिल एक बार फिर सच्चे ख़ुदा की रिफ़ाक़त के लिए तड़पने लगा। वह ख़ुदा की आवाज़ सुनने के लिए बेताब हुए। अब वह अल्लाह से नए तौर पर आगाही हासिल करना चाहते थे। वह अज़-सरे-नौ यह मालूम करना चाहते थे कि क्या अल्लाह वाक़ई चाहता है कि मैं इस सफ़र को जारी रखूँ? क्या ख़ुदा अपने इस कमज़ोर बंदे को अपने जलाल के लिए इस्तेमाल कर सकता है?

एक मरतबा फिर हज़रत इब्राहीम हारान के मैदान में अल्लाह की जुस्तजू में सरगर्दाँ हो गए। इस मरतबा फिर उन्हें एहसास हुआ कि मेरी आहो-ज़ारी, दौड़-धूप या इबादत ज़िंदा ख़ुदा को इस बात पर मजबूर नहीं कर सकती कि वह अपने आपको मुझ पर ज़ाहिर कर दे। मुझे सब्र से उस घड़ी का इंतज़ार करना होगा जब ख़ुदाए-करीम अपने रहमो-करम से अपनी ज़ात और अपनी रज़ा को मुझ पर आशकारा करेगा।

अब भी अल्लाह उन पर उस वक़्त ज़ाहिर हुआ जब वह इसकी तवक़्क़ो नहीं कर रहे थे। उसने उनसे हमकलाम होकर फ़रमाया, "अपने वतन, अपने रिश्तेदारों और अपने बाप के घर को छोड़कर उस मुल्क में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा। मैं तुझसे एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा, तुझे बरकत दूँगा और तेरे नाम को बहुत बढ़ाऊँगा। तू दूसरों के लिए बरकत का बाइस होगा। जो तुझे बरकत देंगे उन्हें मैं भी बरकत दूँगा। जो तुझ पर लानत करेगा उस पर मैं भी लानत करूँगा। दुनिया की तमाम क़ौमें तुझसे बरकत पाएँगी।"

हज़रत इब्राहीम ने जोशो-जज़बे से काँपते हुए हक़ तआला की आवाज़ सुनी और उसके कलाम का एक एक लफ़्ज़ ज़हन-नशीन किया। अब साफ़ ज़ाहिर था कि ख़ुदाए-रहीम ने मुझे माफ़ कर दिया है, वह करीम दुबारा मझसे हमकलाम हुआ है। इस एहसास ने उनके दिल को बेबयान शादमानी से भर दिया। यों लग रहा था कि वह गोया पंद्रह साल की तवील मुद्दत तक अलील रहने के बाद आज यकायक तनदुरुस्त हो गए हों। मुसर्रत से उनका पाँव ज़मीन पर न टिकता था। हलके-फूलके क़दमों से घर जाते हुए वह दिल ही दिल में हारान से रवानगी के मनसूबे बनाने लगे। कूच के लिए आनेवाले बहार का मौसम ऐन मुनासिब था।

गाँव में दाख़िल होते वक़्त हज़रत इब्राहीम को भाई नहूर मिला जो खेतों से वापस आ रहा था।

"ख़ुदा की सलामती तुम पर हो" नहूर ने बड़े भाई को सलाम करते हुए कहा।

"ख़ुदा की सलामती तुम पर भी हो" हज़रत इब्राहीम ने शिगुफ़्ता मुसकराहट के साथ जवाब दिया।

वह सोचने लगे नहूर और उसके घराने ने ख़ासी हद तक वाहिद ख़ुदा को तसलीम कर लिया है। काश वह अपने बुतों को भी ख़ैरबाद कह सकें। उम्मीद है नहूर मौसमे-बहार में हमारे साथ चलने के मुताल्लिक़ सोचेगा। इन्हीं सोचों में ग़रक़ वह नहूर के साथ साथ उसके ख़ैमे की तरफ़ चल दिए ताकि उससे बात करें। लेकिन उनका इरादा पक्का था कि मैं मशवरा लेने नहीं बल्कि महज़ उसे अपने फ़ैसलों से आगाह करूँगा।

ख़ैमे में पहुँचे तो मिलकाह ने सलाम-दुआ के बाद मर्दों की ख़िदमत में दूध के गलास पेश किए। जब दोनों भाई दूध पी रहे थे तो मिलकाह कुछ फ़ासिले पर बैठी शाम के खाने के लिए सब्ज़ियाँ काटते हुए बोली, "यह इलाक़ा बहुत ज़रख़ेज़ है। मैं ख़ुश हूँ कि हम इस जगह आए। अराम के मैदान हम ख़ानाबदोश लोगों के लिए निहायत मौज़ूँ हैं।"

नहूर ने हाँ में सर हिलाकर कहा, "यहाँ पर आज़ादी और वुसअत का ख़ास एहसास होता है।"

"हो न हो, लेकिन मैं आपको यह बताने आया हूँ कि बहार का मौसम आते ही मैं हारान-से रवाना हो जाऊँगा।" हज़रत इब्राहीम की इस इत्तिला पर दोनों मियाँ-बीवी भौंचक्के से रह गए।

नहूर ने कहा, "नहीं नहीं। वालिद साहिब की वफ़ात के बाद हम भाइयों का इकट्ठे रहना और भी ज़्यादा लाज़िमी हो गया है। यकजा रहने में हम दोनों की भलाई है। इस तरह हम बैरूनी ख़तरों के ख़िलाफ़ मज़बूत रहेंगे, और कोई हमारी ख़फ़गी मोल लेने की जुर्रत नहीं करेगा।"

मिलकाह बोली, "हम अगले दिन आपस में बातें कर रहे थे कि सारी उम्र ख़ानाबदोश रहने की क्या ज़रूरत है। क्यों न कहीं टिककर ज़िंदगी के चार दिन आराम से गुज़ारें? और इस जगह से बेहतर और कौन-सी हो सकती है! हमारी ख़्वाहिश है कि हम हारान के दीगर बाशिंदों की तरह यहाँ अपना मकान तामीर करें और शहरियों की तरह ज़िंदगी बसर करें।"

लेकिन हज़रत इब्राहीम ने सर हिलाकर कहा, "मुझे ज़िंदा ख़ुदा की तरफ़ से आगे बढ़ने का हुक्म मिला है।" उनके लबो-लहजे में अफ़सोस के तअस्सुर के बजाए मुसर्रत का उनसुर था। उन्होंने अपनी बात जारी रखी, "मैं अपनी सारी ज़िंदगी ख़ैमे ही में बसर

करूँगा। हाँ उस वक़्त भी जब मैं उस मुल्क में पहुँच जाऊँगा जहाँ अल्लाह मुझे ले जा रहा है।"

फिर भाई और भाबी की आँखों में हैरत के आसार देखकर उन्होंने विज़ाहत की और बोले, "इसलिए कि मैं जानता हूँ कि मेरा असली घर सितारों के उस पार है। और मेरी ख़ानाबदोश ज़िंदगी और ना-पायदार ख़ैमे मुझे याद दिलाते रहेंगे कि ज़िंदगी कितनी आरिज़ी है। नीज़ यह कि हम इस दुनिया में मेहमान और परदेसी हैं। मेरे भाई, पक्की बुनियादोंवाला शहर दरअसल अगले जहान में है, यहाँ कहीं नहीं। मैं एक दिन उसी जन्नत में जाने का मुंतज़िर हूँ। असल में इस दुनिया के फ़सीलदार शहर कमज़ोर और ना-पायदार हैं। यह हक़ीक़ी तहफ़्फ़ुज़ नहीं दे सकते।"

मिलकाह ने सर हिलाकर कहा, "आप जानते हैं कि हम भी सच्चे ख़ुदा पर एतक़ाद रखते हैं। जो कुछ आपने कहा है उससे हम इत्तिफ़ाक़ करते हैं। लेकिन इस क़दर इंतहा-पसंद होने की भी क्या ज़रूरत है! अल्लाह यक़ीनन इससे ख़ुश होगा कि आप उसके हुक्म के मुताबिक़ ऊर के शहर से निकल आए हैं। आप यहाँ भी अल्लाह की ख़िदमत कर सकते हैं। सफ़र के ख़तरों का ख़याल कीजिए और सारा बेचारी का भी।"

नहूर ने देखा कि सारा के नाम से हज़रत इब्राहीम के चेहरे पर फ़िकर की परछाइयाँ छा गई थीं। वह बोला, "आप फ़िलहाल यह भी नहीं जानते कि मनज़िल बिलआख़िर कौन-सी होगी। ताहम आप कनान की जानिब जाने का इरादा रखते हैं। लेकिन मैं आपको बताऊँ कि इस रास्ते में बहुत-से ख़तरे हैं। यह वह रास्ता है जिसके साथ साथ वहशी लोग बूदो-बाश करते हैं और उनके मुताल्लिक़ हमने मुतअद्दिद दासतानें सुनी हैं। अगर उस मुल्क के बादशाह ने सारा भाबी की एक झलक देख ली तो आपका सर सलामत नहीं। वह उसको हासिल करने के लिए कोई कसर उठा न रखेंगे और आपका काम तमाम करने से भी दरेग़ न करेंगे।"

हज़रत इब्राहीम ख़ुद इस ख़तरे से बेख़बर न थे। वह यह भी जानते थे कि सारा के लिए इस जगह और यहाँ के अज़ीज़ों से नाता तोड़ना किस क़दर तकलीफ़दिह होगा। ताहम उन्होंने फ़ैसलाकुन लहजे में कहा, "अल्लाह हमारी मदद करेगा। वह जो हमें कूच करने का हुक्म देनेवाला है, वही हमें सब ख़तरों से बचाएगा। मुझे मालूम है कि अल्लाह के हुक्म की पैरवी करने में कई लोगों से जुदाई और कई चीज़ों से अलहदगी इख़्तियार करनी होगी। इसके बावुजूद मैं अपने ख़ुदा के हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी नहीं कर सकता, न करना चाहता हूँ। मेरी सबसे बड़ी और अव्वलीन तमन्ना यही है कि अपनी ज़िंदगी

इस तरह गुज़ारूँ कि कोई शख़्स या चीज़ ज़िंदा ख़ुदा के साथ मेरे रिश्ते और राबिते में रख़ना-अंदाज़ न हो। पंद्रह साल की इस तवील मुद्दत में मैं इस राबिते में कई तरह की कमज़ोरी और कोताही को शिद्दत से महसूस करता रहा हूँ।"

नहूर और उसकी बीवी हज़रत इब्राहीम को हैरानी से देखने लगे। उन्हें तो इस बात का मुतलक़ एहसास न हुआ था कि अल्लाह के साथ हज़रत इब्राहीम के रिश्ते और राबिते में कोई शै हाइल है। दरअसल हज़रत इब्राहीम उन सालों में भी अपने घरवालों, नौकर-चाकरों और ग़ुलामों को सच्चे ख़ुदा के मुताल्लिक़ तालीम देते रहे थे, और बहुत-से लोग उनके वाहिद ख़ुदा पर ईमान भी ले आए थे।

आख़िर नहूर ने फ़ैसलाकुन लहजे में कहा, "मेरा ख़याल है कि फ़िलहाल इस मामले पर मज़ीद गुफ़्तगू करना मुनासिब नहीं। शायद कल आप ठंडे दिल से इस पर ग़ौर कर सकें। क्योंकि इस में शक नहीं कि इस फ़ैसले के नतीजे दूर-रस होंगे।"

हज़रत इब्राहीम उदास हुए। अपने रिश्तेदारों के पास रहते हुए भी वह अपने आपको उनसे कोसों दूर पा रहे थे। दरअसल उनके अज़ीज़ो-अक़ारिब की ज़िंदगी का मक़सद दुनियावी मालो-असबाब इकट्ठा करना और इस दुनिया में आराम से ज़िंदगी बसर करना था जब कि उनकी अपनी ज़िंदगी का मक़सद ज़िंदा ख़ुदा के अहकाम पर चलना और उसी की तबलीग़ करना था। हाँ उन में और हज़रत इब्राहीम में ज़मीन-आसमान का फ़रक़ था। नहूर बुतों के अलावा अल्लाह की भी परस्तिश करता था जब कि हज़रत इब्राहीम ने अपने सारे घराने में से बुतों को निकाल बाहर किया था। बुतों के लिए उनके घर और दिल में क़तई कोई जगह न थी। फ़क़त क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा उनकी ज़िंदगी में अफ़ज़ल और आला था।

जब हज़रत इब्राहीम उठकर अपने ख़ैमे में गए तो आनेवाली बड़ी ज़िम्मेदारियों के मुताल्लिक़ सोचने लगे—मवेशियों और भेड़-बकरियों की निगरानी और लातादाद लौंडे-लौंडियों की देख-भाल। वह सब उनके ख़ानदान के अफ़राद ही बन गए थे। सफ़र के दौरान सबकी हिफ़ाज़त का बोझ इब्राहीम के कंधों पर पड़ेगा। लेकिन फिर उन्हें अल्लाह का ख़याल आया जिसने क़दम क़दम पर उनकी मदद करने का वादा किया था। तब उन्होंने इतमीनान का साँस लेकर अपनी सारी फ़िकरें उसके क़वी हाथ के सपुर्द कीं।

5

आख़िरकार रवानगी का वक़्त आ पहुँचा। हज़रत इब्राहीम और उनके साथ जानेवाले अपने अज़ीज़ो-अक़ारिब से आख़िरी बार गले लगे और कारवाँ रवाना हो गया। कारवाँ अनोखा समाँ पेश कर रहा था। कोई एक हज़ार नुफ़ूस के दरमियान बहुत-सी भेड़-बकरियाँ जो छोटे छोटे रेवड़ों में मुनक़सिम कर दी गई थीं चली जा रही थीं। बैलों को भी छोटे गुरोहों में बाँट दिया गया था ताकि उनको क़ाबू में रखना आसान हो। काली बकरियों की पशम से तैयार किए गए ख़ैमों को गधों पर लादा गया था और घरेलू ज़रूरत की दीगर अशया भी उन्हीं सख़्तकोश जानवरों पर लादी गई थीं जो क़ाफ़िले के अक़ब में कहीं कहीं चलते नज़र आ रहे थे।

हज़रत इब्राहीम चंद बुज़ुर्गों के हमराह कारवाँ के आगे आगे जा रहे थे जब कि उनकी बीवी सारा और बाज़ दीगर ख़ास ख़ास ख़वातीन को इजाज़त थी कि जब चाहें गधों पर सवार हो जाएँ। चंद लौंडियाँ सारा के पीछे अपने सिरों पर सरकंडों से बनी हुई टोकरियों में खाने की चीज़ें उठाए चली जा रही थीं। बाज़ दीगर मुलाज़िमीन मज़ीद अश्याए-ख़ुरदनी और पानी के मटके उठाए हुए जा रहे थे जिन्हें दो दो आदमियों ने कंधे पर रखे बाँस के दोनों तरफ़ उठाने का ख़ास बंदोबस्त किया था।

हारान से रवानगी का वक़्त सबके लिए बड़ा तकलीफ़दिह था। ख़ुद हज़रत इब्राहीम इतने बड़े हुजूम के बावुजूद अपने आपको बिलकुल तनहा और अलग-थलग महसूस कर रहे थे। उन्हें साफ़ मालूम था कि किसी को उनके मनसूबों से कोई हमदर्दी नहीं। कोई उनका हमख़याल नहीं। उनके क़रीबी रिश्तेदार भी सफ़र इख़्तियार करने के मुताल्लिक़ उनकी राय से इत्तिफ़ाक़ नहीं करते थे। वह उनका साथ इसलिए दे रहे थे कि अपने

सरदार का हुक्म मानना उन पर फ़र्ज़ था। सारा के चेहरे पर इंतहाई ग़मो-तअस्सुफ़ और उनकी आँखों में आँसू नज़र आ रहे थे। उनका दरिया के उस पार खड़े अज़ीज़ों को मुड़ मुड़कर बार बार देखना इस बात का शाहिद था कि यह क़दम उनके लिए कितना मुश्किल था।

अब वह अपने भतीजे लूत को सवालिया निगाहों से देखते हुए सोचने लगे कि यह जवान मेरे हमराह किस मक़सद से चला आ रहा है? क्या मुहिम्म-जूई के जज़बे ने उसे यह क़दम उठाने पर मग़लूब कर दिया है? या क्या वह अपने ताया को अपना हीरो बना बैठा है जो इस उम्र की ख़ास ख़ुसूसियत हुआ करती है? क्या वह वाक़ई सच्चे दिल से अल्लाह की परस्तिश की ख़्वाहिश से घर-बार छोड़ने पर रज़ामंद हो गया है? लूत की ख़ुदग़रज़ी की आदत को याद करके हज़रत इब्राहीम ने ठंडी साँस ली। काश कि लूत के मिज़ाज में चंद कमज़ोरियाँ न हों। तब वह सफ़र में अच्छा साथी साबित हो सकता है, क्योंकि उसकी बातचीत से मेरी तबीयत बहल जाया करती है।

अब वह दमिश्क़ को जानेवाली शाहराह पर चले जा रहे थे। उम्मीद थी कि इस राह में ज़रूरियाते-ज़िंदगी आसानी से दस्तयाब हो सकेंगी। फिर चूँकि यह रास्ता रेगिस्तान से हटकर निकलता था इसलिए रेगिस्तान के ख़तरात से बचे रहेंगे। सौदागर और फ़ौजें मुतवातिर इसी रास्ते से नक़लो-हरकत करती थीं। हज़रत इब्राहीम का ख़याल था कि दमिश्क़ के शिमाल में वाक़े नख़लिस्तान में डेरे डाल दें।

वह कई दिन तक चटियल मैदान में सफ़र करते गए जिस पर कहीं कहीं थोड़ी-सी घास थी। मवेशी और भेड़-बकरियाँ जो हारान की लंबी सरसब्ज़ घास के आदी थे, अब छोटी छोटी सूखी घास और झाड़-झंकार पर गुज़ारा कर रहे थे। आहिस्ता आहिस्ता वह उस मुल्क की तरफ़ बढ़ते जा रहे थे जिसको अल्लाह ने उन्हें मीरास में देने का वादा किया था। एक जगह डेरे डालना और फिर थोड़ी देर बाद कूच के वक़्त बोरिया-बिस्तर लपेटना उनका मामूल बन चुका था।

हज़रत इब्राहीम को इस दौरान हर रोज़ यही एहसास रहता था कि अल्लाह मेरे साथ है। कूच करते वक़्त भी उन्हें यह यक़ीन रहता था कि ख़ुदा मेरी रहबरी कर रहा है। पाक ख़ुदा की क़ुरबत और हुज़ूरी की वजह से उनकी सबसे बड़ी तमन्ना यह थी कि वह अपने चलन से अल्लाह की ख़ुशी का बाइस बनें। सफ़र में वह रफ़्ता रफ़्ता अल्लाह की मरज़ी के मुताल्लिक़ ज़्यादा हस्सास बनते जा रहे थे। होते होते वह ऐसी बातों को भी गुनाह समझने लगे जिनकी पहले वह कभी परवा भी नहीं करते थे। क़बीले के सरदार होने की

हैसियत से उनकी बेशुमार ज़िम्मेदारियाँ थीं। हर रोज़ कई झगड़े निपटाने पड़ते और कई मुआमलात तय करने होते थे। अब जब कभी वह यह महसूस करते कि उन्होंने कोई फ़ैसला या मामला महज़ अपनी मरज़ी से तय कर दिया है तो उन्हें सख़्त रंज और सदमा होता था।

लेकिन सारा का क्या हाल था? क्या उनका ईमान ख़ावंद की तरह पक्का था? बेशक वह अल्लाह पर ईमान रखती थीं, लेकिन उनका ईमान अब तक बहुत महदूद और कम था। उनका ईमान था कि एक ख़ुदा ने सब चीज़ों को पैदा किया है, और वही अल्लाह राहनुमाई करता और परस्तिश के लायक़ है। ताहम वह सोचती रहती कि यह कैसा ख़ुदा है जो हमसे इस क़दर ईसार और ख़ुद-इनकारी की तवक़्क़ो करता है, जो अपना वतने-अज़ीज़, आरामदिह घर, माँ-बाप, बहन-भाई और रिश्तेदार तर्क करने का मुतालबा करता है? क्या वाक़ई वह दिलों का जाननेवाला मेहरबान ख़ुदा है? ग़रज़ सफ़र के दौरान सारा के दिल में अजीब तूफ़ान बरपा रहता था।

सिर्फ़ शौहर से वफ़ादारी ने उन्हें हिम्मत न हारने दी थी। उन्हीं से मुहब्बत के बाइस सारा उनके रब को ख़ुश करना चाहती थीं। ताहम अब तक उनका ईमान महज़ अपने ख़ावंद के ईमान का अक्स ही था। ख़ैर यह ज़्यादा हैरत की बात न थी, क्योंकि सच तो यह है कि आख़िर अल्लाह ने अपने आपको हज़रत इब्राहीम पर ज़ाहिर किया था न कि सारा पर। उनकी ज़िंदगी में अभी तक कोई ग़ैरमामूली रूहानी तजरिबा रूनुमा न हुआ था। उनके लिए तो यही बड़ी बात थी कि वह दिलेराना अपने ख़ावंद के साथ क़दम मिलाकर चलने की कोशिश करती रहें। गो उनके सीने में बारहा शुकूक सर उठाते रहे और वह ख़ैमे की तनहाई में बारहा आँसू बहाती रहीं तो भी वह अपने ख़ावंद के साथ मुल्के-मौऊद की तरफ़ रवाँ-दवाँ रहीं।

चलते चलते वह कनान के एक मक़ाम बनाम सिकम के नज़दीक आए। मुसाफ़िरों ने जल्द ही जान लिया कि यह इलाक़ा रिहाइश के लिए ख़ूब है। वह वहाँ के पहाड़, वादी, नदी-नाले और चश्मों के नज़ारों से महज़ूज़ होने लगे। साथ साथ इनसान और हैवान के लिए कसरत की ख़ुराक दस्तयाब थी : कनान में गंदुम, जौ, अंगूर, अंजीर, अनार, ज़ैतून के पेड़ और शहद ख़ूब मिलता था।

मुसाफ़िरों ने सिकम के नज़दीक बलूत के पेड़ों के साय में अपना पहला डेरा डाला। जगह का नाम मोरिह था। ख़ैमे जल्दी से गाड़ दिए गए। इधर-उधर काम-काज करते हुए सब लोगों के ज़हन पर एक ही ख़याल सवार था : यह कि काश हम यहाँ ज़्यादा देर

ठहर सकें। सिकम का इलाक़ा दो पहाड़ों के दरमियान महफ़ूज़ वादी में फैला हुआ था। बेशुमार चश्मों से गुनगुनाते नदी-नाले निकलकर मुक़ाबिल की ढलान से वादी में नीचे उतर रहे थे। इर्दगिर्द के किसी क़दर चटियल पहाड़ों के मुक़ाबले में वादी की सरसब्ज़ चरागाहें और अंगूरिस्तानों की हरियाली बड़ी दिलकश नज़र आ रही थी। हज़रत सारा भी इस जगह की ख़ूबसूरती से बेहद मुतअस्सिर हुईं।

जब शाम हुई तो ख़ैमों के दरमियान जा बजा आग रौशन हो गई और ख़ैमों में मर्दो-ज़न इलाक़े के मुताल्लिक़ अपनी अपनी राय देने लगे। सब कह रहे थे कि यह इलाक़ा तो पहले ख़ित्ते से बेहतर है। सिर्फ़ हज़रत इब्राहीम मामूल से भी ज़्यादा ख़ामोश नज़र आ रहे थे। दरअसल कनान आते हुए वह रास्ते में आने-जानेवालों से कनान के बाशिंदों के मुताल्लिक़ मालूमात हासिल करते रहे थे। उन्हें मालूम हुआ कि यहाँ के बाशिंदे और उनका मज़हब ऊर के लोगों से बेहतर न था। बल्कि शायद उनसे बदतर। यहाँ पर तो बाज़ औक़ात लोग अपने देवता बाल को ख़ुश करने के लिए बच्चों की क़ुरबानी करने से भी दरेग़ न करते थे। अब वह संजीदगी से यह सोच रहे थे कि क्या मैंने यहाँ आने में ग़लती तो नहीं की? उनके दिलो-दिमाग़ पर मायूसी के बादल छा गए। वह परेशानीओ-फ़िकरमंदी के आलम में ही बिस्तर पर दराज़ हो गए।

कुछ देर तो वह बेक़रार करवटें बदलते रहे, मगर थोड़ी देर बाद जो उनकी आँख खुली तो उनका दिमाग़ सारी फ़िकरों से साफ़ और दिल पुरसुकून और पुरइतमीनान था। उन्होंने दिल ही दिल में सोचा, "क्या गहरी नींद सोने से मेरी फ़िकरें दूर हो गई हैं?" फिर यकायक उन्हें याद आ गया कि आलमे-ग़ुनूदगी में मैंने अल्लाह की आवाज़ सुनी। हाँ ख़ुदा एक मरतबा फिर हज़रत इब्राहीम पर आशकारा हुआ था ताकि उन्हें यक़ीन दिलाए कि वह सहीह रास्ते पर हैं। इसी सिकम के मक़ाम पर अल्लाह ने पहली मरतबा उन पर इस अहम हक़ीक़त को ज़ाहिर किया कि यही वह मुल्क है जिसका वादा मैं कर चुका हूँ। हज़रत इब्राहीम की याददाश्त से सारे धुँधलके दूर हो गए। उनके दिमाग़ की लौह पर अल्लाह का एक एक लफ़्ज़ यों उभर आया गोया उन्हें ज़बानी याद हो। रब ने फ़रमाया था, "मैं तेरी औलाद को यह मुल्क दूँगा।" इससे उनका दिल फिर से मुसर्रत और अल्लाह के लिए जज़बाए-तशक्कुर से लबरेज़ हो गया।

एक मरतबा फिर हज़रत इब्राहीम ने अल्लाह की बात का यक़ीन किया। अब तक वह यह नहीं जानते थे कि यह क्योंकर होगा। आख़िर वह इलाक़ा पहले ही से आबाद था। फिर वह अभी तक बेऔलाद थे। उनका एक भी बेटा न था। लेकिन इसके बावुजूद

उन्होंने ख़ुदा के वादे का यक़ीन किया। अपने दिल में मौजज़न जज़बाए-तशक्कुर का इज़हार करके उन्होंने वहाँ एक क़ुरबानगाह बनाई और एक बेऐब जानवर लेकर क़ुरबानी गुज़रानी। यह क़ुरबानी रस्मी तौर पर नहीं बल्कि निहायत ख़ुलूस के साथ पेश की गई। जब जानवर क़ुरबानगाह पर आग से भस्म हो रहा था तो उसने अपनी ज़िंदगी को नए सिरे से अल्लाह के हाथ में सौंपकर अल्लाह के साथ अपने अहद की तजदीद की।

इसके बाद रास्ते में जहाँ कहीं हज़रत इब्राहीम डेरे डालते वहाँ वह क़ुरबानगाह तामीर करते। डेरे को छोड़ने के बाद भी यह मज़बह या क़ुरबानगाह कनान के बाशिंदों को इस मर्दे-ख़ुदा की याद दिलाती रहती। और हाँ हज़रत इब्राहीम अल्लाह के बारे में क़ीमती मालूमात को अपने तक महदूद नहीं रखना चाहते थे बल्कि उनके दिल में ज़बरदस्त तहरीक होती कि वह अपने घराने के लोगों और मक़ामी बाशिंदों के सामने अल्लाह की तबलीग़ और उसकी रहमतों का बयान करें।

कई मरतबा पूरे घराने के अफ़राद मज़बह के गिर्द जमा हो जाते। ख़ानदान के अलावा उनके ग़ुलाम भी हाज़िर होते जो ऊर में या रास्ते में ख़रीदे गए थे। वह मुलाज़िम भी शामिल होते जो उनके घराने ही में पैदा होकर बड़े हुए थे। बच्चे, वालिदैन, जवान, बूढ़े सब ही वहाँ इकट्ठे होते और ख़ामोशी और एहतराम से अपने आक़ा और सरदार को क़ुरबानी गुज़रानते और मुनाजात करते देखते। इस तरह उनके दिल में सच्चे ख़ुदा की परस्तिश का जज़बा जड़ पकड़ता और रफ़्ता रफ़्ता पुख़्ता होता गया।

अल्लाह की तरफ़ से यक़ीन-दिहानी के बावुजूद कुछ देर के बाद हज़रत इब्राहीम के चेहरे पर फ़िकरमंदी फिर नज़र आने लगी। उनके कानों में आस-पासवालों की ज़बानी यह इत्तिला पड़ रही थी कि गुज़श्ता मौसमे-सरमा में बारिश कम हुई थी। मुमकिन है कि इससे पहली सर्दी में भी बारिश कम हुई हो। हाँ खेत और बाग़ात से पता चलता था कि ज़मीन को मौसमे-सरमा की बारिश की सख़्त ज़रूरत है। हज़रत इब्राहीम ने चरागाहों को माल-मवेशी पालनेवाले की निगाह से देखा। उन्होंने अंदाज़ा लगाया कि यह चरागाहें ज़्यादा देर तक उनके लातादाद जानवरों को ख़ुराक फ़राहम न कर सकेंगी। उनकी यह फ़िकरमंदी ज़्यादा देर तक सारा की निगाहों से छुपी न रह सकी। वह घबरा गईं और उठते-बैठते यही सोचने लगीं कि अब आगे कहाँ जाएँगे। सिकम के नज़दीक क़ियाम और आराम से उन्हें निहायत फ़रहत और राहत हासिल हुई थी। ख़ैर वह अपने ख़ावंद की फ़रमाँबरदार बीवी थीं। जब कूच का वक़्त आया तो वह बेचूनो-चिरा उनके हमराह चल पड़ीं। चलते चलते वह बैत-एल के शहर जा पहुँचे।

हज़रत सारा की लौंडीए-ख़ास ने देखा कि मालिकन बहुत थकी हुई हैं। उसकी तजरिबाकार निगाह ने जान लिया कि यह थकान सफ़र की नहीं बल्कि बातिनी कशमकश की वजह से भी है। सारा इस औरत दबोरा को अरसे से जानती थीं। दबोरा का ख़ावंद मर चुका था। बच्चे पलकर जवान हो गए थे और शादी-ब्याह करके अपने अपने ख़ानदानों में ख़ुश थे। इसलिए दबोरा अपनी तमामतर तवज्जुह और दिलचस्पी अपनी मालिकन पर निछावर करती थी।

रफ़्ता रफ़्ता उम्ररसीदा दबोरा और हज़रत सारा के दरमियान माँ-बेटी जैसी मुहब्बत क़ायम हो गई थी। अब दबोरा अपनी हसीन मालिकन को बड़ी शफ़क़त से देख रही थी। उनकी थकान महसूस करके उसका दिल उनके लिए नरम हो गया। वह सोचने लगी कि बेशक मेरे आक़ा की बीवी होने के बाइस सारा बीबी डेरे में अपनी हैसियत जताती हैं। कभी कभी वह मग़रूर और सख़्तगीर भी मालूम होती हैं। फिर भी वह दिल की बुरी नहीं। वह मुलाज़िमों और ग़ुलामों दोनों ही के मिज़ाज को ख़ूब समझती हैं। उमूमन वह उनके साथ अपने सुलूक में बड़ी समझ-बूझ से काम लेती हैं। अब दबोरा सारा के चेहरे पर उकताहट के आसार देखकर फ़िकरमंद होने लगी।

बैत-एल में ख़ैमा लगते ही दबोरा ने सारा से कहा, "आप थक गई हैं। आराम कीजिए। रात होने से पहले हम कुछ बातें करेंगी। आप अपना ख़याल रखा करें। मैं वारिस के सिलसिले में आपसे अभी तक ना-उम्मीद नहीं हुई।"

सारा बीबी ठंडी साँस लेकर बोलीं, "वारिस का तो अब सवाल ही पैदा नहीं होता। तुम जानती हो कि मेरी उम्र ज़्यादा होती जा रही है। ख़ैर इस में शक नहीं कि आज मुझे थकान महसूस हो रही है।" बुज़ुर्ग दबोरा ने अब फ़र्श पर ख़ूबसूरत क़ालीन बिछा दिया था जिस पर वह शोख़ रंग की गद्दियाँ रखती जा रही थी। ख़ैमा आन की आन में आरामदिह घर में तबदील हो गया था। इसी ख़ैमे में सारा की लौंडियाँ भी रहती थीं। अचानक सारा बोल उठीं, "क्या तुमने किसी से यह मालूम किया कि यहाँ के लोग-बाग कैसे हैं?"

"कनान में मुतफ़र्रिक़ क़बीलों के लोग बस्ते हैं, और सबके सब ख़ासे दिलचस्प मालूम होते हैं," दबोरा ने जवाब दिया। फिर वह बोली, "बीबी जी, मैं एक बूढ़ी दादी-अम्माँ से मिली थी जो लकड़ियाँ चुन रही थी। बातों ही बातों में उसने कहा कि पहाड़ों में रहनेवाले अमोरियों से बचकर रहना, वह वहशी और जंगजू लोग हैं।"

"यह अच्छा हुआ कि उसने ख़बरदार कर दिया। हम ज़रूर मुहतात रहेंगे। और कुछ?"

"और हाँ हित्ती क़बीले के लोग उनके बिलकुल बरअक्स मालूम होते हैं। वह तहज़ीब-याफ़्ता और अमनपसंद हैं। और हाँ उनके एक शहर का नाम कुतुब-शहर है जिस में उनका एक कुतुबख़ाना है।"

"यह बात तो बहुत दिलचस्प है। क्या तुम जानती हो कि वह लोग देखने में कैसे हैं? मुझे मालूम है कि तुम जब तक कुरेद कुरेदकर सब कुछ मालूम न कर लो दम नहीं लेतीं।"

"आपका ख़याल दुरुस्त है। वह बूढ़ी दादी भी मेरी दरियाफ़्त करने की आदत का मज़ाक़ उड़ा रही थी। हाँ वह कह रही थी कि अगर तुम किसी को ऐसे जूते पहने हुए देखो जिनके पंजे ऊपर की तरफ़ मुड़े हुए हों तो वह हित्ती होंगे। यह लोग क़द के छोटे मगर हटे-कटे होते हैं। उनके बाल काले और रंगत पीली-सी होती है। और हाँ यह लोग दाढ़ी नहीं रखते।"

"बहुत ख़ूब। दिलचस्प।" सारा दिलचस्पी से उठकर बैठ गईं।

"और हाँ जिरार शहर में और समुंदर के साहिल पर फ़िलिस्ती रहते हैं। यह भेड़-बकरियाँ पालकर पुरसुकून ज़िंदगी बसर करते हैं। उनका मज़हब कुछ हद तक वही है जो ऊर के बाशिंदों का था। क़ुदरत की पूजा-पाट करते करते यह लोग ज़ुल्म, फ़हशी और बद-अख़लाक़ी की तरफ़ मायल हो गए हैं।"

"लेकिन जिस औरत से तुम बातें कर रही थीं वह ख़ुद कैसी थी? क्या वह भी इन्हीं क़बायल में से थी?"

"नहीं बीबी, यह तो बताना ही भूल गई कि वह इस मुल्क के असली बाशिंदों की नसल से थी। उसने फटे-पुराने कपड़े पहन रखे थे। यों मालूम होता था कि उसका क़बीला सबसे ज़्यादा ग़रीब है। जब मैंने पूछा कि क्या तुम्हारे क़बीले में औरतों की क़दर की जाती है तो वह खिलखिलाकर हंस पड़ी और बोली, 'तुम्हारा इससे क्या मतलब है? हमारी औरतें गधों की तरह डटकर काम करती हैं। भला हमारे बग़ैर उनके काम-काज कैसे चल सकते हैं! इससे ज़्यादा हम उनसे क्या उम्मीद कर सकती हैं! मर्द आख़िर मर्द है और औरत, औरत! उन में कोई बात मुश्तरक नहीं'।"

हज़रत सारा पर ग़ुनूदगी के आसार देखकर दबोरा ख़ामोश हो गई और सोचने लगी कि उस क़बीले की आज़ाद औरत होने से अपने आक़ा के डेरे में ग़ुलाम होना कई दर्जे बेहतर है। उनकी सरदारी में हर एक के साथ इनसाफ़ का सुलूक किया जाता है। ग़ुलामों

के साथ भी वही बरताव होता है जैसा आज़ाद नौकरों के साथ, बल्कि सच तो यह है कि हम मिल-जुल कर एक बड़े-से ख़ानदान की तरह रहते हैं।

सारा अब अच्छी तरह लेट चुकी थीं। उनकी पलकें नींद से बोझल हो रही थीं, मगर सोने से पहले वह सोचने लगीं कि मेरे ख़ावंद के दिमाग़ पर कोई बोझ और फ़िकर है। उनके दिमाग़ में कोई तजवीज़ तशकील पा रही है। यह फ़िकर क्या हो सकती है? हो न हो उन्हें इलाक़े में कह्त पड़ने का ख़दशा है। और इसका मतलब यह है कि हम सबको फिर से सफ़र करना होगा, फिर किसी दूसरी जगह जाना होगा!

6

जब बीबी सारा जाग उठीं तो शाम ख़ासी हद तक ढल चुकी थी। गो वह गहरी नींद सोई थीं तो भी उनके दिमाग़ पर किसी बोझ का-सा एहसास हो रहा था जैसे कोई ख़ास काम करना बाक़ी हो। फिर यकायक उन्हें याद आया कि ख़ावंद से कुछ ज़रूरी बातें करनी हैं। हाँ जल्द बातचीत करके अपने दिमाग़ी बोझ को दूर करना चाहिए। सारा के ज़रा-सी हरकत करने पर उनकी वफ़ादार लौंडी दबोरा झट उनके पास आ पहुँची। उसने अपनी बीबी से खाना लाने की इजाज़त चाही। दबोरा के लबो-लहजे में माँ जैसी शफ़क़त और मुहब्बत थी तो भी सारा ने खाना खाने से दोटूक इनकार कर दिया। उनके भिंचे हुए होंट और आँखों का ख़ास तअस्सुर बता रहा था कि वह खाना नहीं खाएँगी। सारा ने अपने लंबे स्याह बालों में कंघी करते हुए कहा, "मेरे लिए नया लिबास लाओ।"

बाल बनाने के बाद उन्होंने बड़ी एहतियात से ओढ़नी ओढ़ी और लंबे बावक़ार लिबास को ज़ेबतन किया। दबोरा उन्हें तहसीन-भरी निगाहों से देख रही थी। उसकी मालिका नए लिबास में कितनी दीदाज़ेब दिखाई दे रही थी। बीबी सारा बोलीं, "मेरे लिए जागती न रहना। मुमकिन है वापस आने में देर हो जाए। मैं अपने मियाँ से चंद ज़रूरी बातें करने जा रही हूँ।"

थोड़ी देर बाद जब वह हज़रत इब्राहीम के ख़ैमे के क़रीब पहुँचीं तो डेरे के मर्द छोटे छोटे गुरोहों में मुनक़सिम जा बजा दम तोड़ती आग के गिर्द बैठे बातें कर रहे थे। सब बच्चे और बेशतर औरतें मीठी नींद के मज़े लूट रहे थे। सिर्फ़ चंद औरतें अभी तक अपने घरेलू काम-काज निपटा रही थीं। बरतन धोने का शोर दिन की कारवाइयों का आख़िरी शोर था।

हज़रत इब्राहीम के ख़ैमे के सामने बैठे कुत्ते ने उन्हें एक आँख खोलकर देखा और पहचानकर अपनी दुम हिलाकर थोड़ी-सी गर्द उड़ाई। लेकिन वह अपनी जगह से न हिला, और न उसने अपना सर ऊपर उठाया। बीबी सारा ने ख़ैमे का परदा उठाया और ख़ामोशी से अंदर दाख़िल हो गईं। शमा की मधम रौशनी हर तरफ़ फैली हुई थी और फ़र्श पर बिछे क़ालीन पर रखी बहुत-सी गद्दियाँ बड़ी आरामदिह मालूम हो रही थीं। सारा यह देखकर ख़ुश हो गईं कि उनके शौहर बेदार हैं। ऐसा मालूम होता था कि वह देर से अपने मसायल पर सोच-बिचार कर रहे हों।

“सारा तुम?” उन्होंने ख़ूबसूरत लिबास में मलबूस सुडौल जिस्म का जायज़ा लेते हुए कहा। वह बड़े नाज़ से यह सोच रहे थे कि बीवी जवानी ढल जाने के बावुजूद कितनी हसीनो-जमील नज़र आ रही हैं।

“मैं तो आपके किसी काम में रुकावट नहीं बनी? लेकिन मेरा आना ज़रूरी था। दरअसल मैं आपको बताना चाहती थी कि मुस्तक़बिल के बारे में आपके मनसूबे ख़्वाह कैसे ही क्यों न हों मैं आपके साथ हूँ। मैं आपको अपनी रज़ामंदी का यक़ीन दिलाने आई हूँ।”

“आओ, आओ यहाँ बैठो।” इब्राहीम सारा की बात से मोम हुए। वह सोच रहे थे कि सारा संगदिल औरत नहीं। वह मेरे मनसूबों की राह में हाइल नहीं होना चाहतीं, हालाँकि ऐसा करना उनके लिए आसान नहीं। तब उनकी आँखें चार हुईं जो इफ़हामो-तफ़हीम से भरी हुई थीं, गोया एक दूसरे से कह रहा हो मुझे तुम्हारे दिमाग़ की सोचों और तुम्हारे दिल के दर्द का ख़ूब इल्म है।

“अच्छा किया कि तुम आ गई हो क्योंकि बाज़ उमूर के मुताल्लिक़ तुम्हारे ख़यालात का मुझे इल्म हो तो मैं मुआमलात को ज़्यादा आसानी से निपटा सकता हूँ। क्या तुम जानती हो कि हारान से चलते वक़्त तुम्हारे लबों की आहें और तुम्हारी आँखों के आँसू मेरे लिए किस क़दर तकलीफ़दिह थे?” हज़रत इब्राहीम ने अपनी निगाहें अपनी बीवी के चेहरे से हटाते हुए कहा। उनके लहजे में उदासी थी। “और अब हमें एक नया मसला दरपेश है।”

बीबी सारा अपना नरमो-नाज़ुक हाथ अपने ख़ावंद के मज़बूत हाथ पर रखते हुए बोलीं, “क्या वाक़ई इस इलाक़े में काल पड़नेवाला है?”

“हाँ इस में कोई शक नहीं। तुम जानती हो कि अपने पूरे क़बीले और उसके ग़ुलामों, लौंडियों और लातादाद मवेशियों की जानों की ज़िम्मेदारी मुझ पर आइद होती है। मुझे

लगता है कि कूच किए बग़ैर कोई चारा नहीं। मैं जुनूब की जानिब मिसर जाने का ख़याल कर रहा हूँ। हम फ़िलहाल वहाँ जाकर रहेंगे। बाद अज़ाँ जब इस इलाक़े में हालात तसल्लीबख़्श हुए तो वापस आ जाएँगे।"

"हम मिसर में तो नहीं रहेंगे ना?"

"नहीं, हम वहाँ नहीं रहेंगे। क्या तुम्हें याद है कि अल्लाह सिकम में मझसे हमकलाम हुआ? उसने मझसे उस वक़्त एक वादा भी किया। मैंने जान-बूझकर अब तक तुमसे उस वादे का ज़िक्र नहीं किया इसलिए कि वारिस का ज़िक्र हमेशा तुम्हें कई दिनों तक परेशान कर दिया करता है।"

सारा ने लंबी साँस लेकर कहा, "तो ख़ुदा ने वारिस के मुताल्लिक़ कुछ कहा है?"

हज़रत इब्राहीम ने अपनी बीवी पर एक भरपूर निगाह डाली ताकि यह जान लें कि इस ज़िक्र से उनके दिल का ज़ख़म हरा तो नहीं हो गया। लेकिन बीबी सारा के दिल में जो कुछ भी था उनकी निगाहों से छुपा रहा इसलिए कि उनकी बीवी ने तहैया कर रखा था कि वह अपने आँसुओं को सिर्फ़ अपने ख़ैमे में जाकर बहाएँगी। वह यहाँ आँसू बहाने नहीं बल्कि अपने ख़ावंद का ग़म ग़लत करने आई थीं। पस हज़रत इब्राहीम ने कहा, "अल्लाह ने वादा किया है कि वह यह मुल्क मेरी औलाद की मिलकियत में कर देगा। सारा, ख़ुदा हमें बेटा देगा।" उनके लबो-लहजे में ईमानो-यक़ीन का वज़न था।

सारा ने अपनी बेयक़ीनी को दिल के किसी गोशे में दबा दिया और फिर अपने दिल के तमामतर ख़ुलूस के साथ बोलीं, "काश मैं इस ज़िम्न में आपकी मदद कर सकती! लेकिन यह मेरे बस की बात नहीं। आप जानते हैं कि आपको ख़ुशो-ख़ुर्रम देखना मेरी ज़िंदगी का वाहिद मक़सद है। मैं सिर्फ़ इतना कर सकती हूँ कि आप इस सिलसिले में जो क़दम उठाएँ मैं ख़ुशी से आपकी हिमायत करूँ। यह बेटा आपके हाँ किसी और बतन से भी हो सकता है।"

मज़ीद गुफ़्तगू के बाद जब हज़रत इब्राहीम उन्हें उनके ख़ैमे तक छोड़ने के लिए आए तो रात भीग चुकी थी। अपने ख़ावंद के साथ साथ क़दम मारते हुए सारा को उनकी मुहब्बत का क़वी एहसास था। इसके बावुजूद उनका दिल उस घाव की तरह दुख रहा था जिस में काँटा चुभ गया हो। वह चुप-चाप अपने बिस्तर पर लेट गईं। उनकी सोचों पर ना-ऊम्मीदी की काली घटाएँ छाई हुई थीं। उनकी निगाहें अंधेरे में ख़ला को घूरती रहीं। अब वह सबकी नज़रों से दूर थीं। अब वह आज़ादी से आँसू बहाकर अपने दिल का बोझ हलका कर सकती थीं, मगर न जाने क्यों उनकी आँखों में आँसू न आए।

"मैं माँ क्यों नहीं बन सकती? मेरे सेहतमंद जिस्म में क्या कमी है? आह! क़बीले के सारे अफ़राद मेरे बतन से वारिस की तवक़्क़ो करते हैं। क़बीले की बहुत-सी औरतें मुझे हिक़ारत की निगाह से देखने लगी हैं, सिर्फ़ इसलिए कि वह औलादवाली हैं और मैं बेऔलाद। मैं जो उनके सरदार की रफ़ीक़ाए-हयात हूँ ज़िंदगी की सबसे बड़ी बख़्शिश से महरूम हूँ। बेऔलाद होना मेरे माथे पर कलंक का टीका है। लगता है कि अब अल्लाह ने भी मुझे इस हालत में छोड़ दिया है कि लोग मेरा मज़हका उड़ाएँ। उसने मेरे ख़ावंद के दिल में उम्मीद की किरन क्यों जगाई? आह! यह कैसा ख़ुदा है जिसने मेरे पुराने ज़ख़म को हरा करके मेरी दुखती रग को छेड़ दिया है? क्या साफ़ ज़ाहिर नहीं है कि मैं इस उम्र में बच्चेवाली नहीं हो सकती?"

उनकी बदनसीबी का ख़याल उन पर हावी हुआ, और उनके ख़यालात इसी क़िस्म के एहसासात की रौ में बहते चले गए। फिर वह अपने मुस्तक़बिल के बारे में सोचने लगीं जो बिलकुल तारीक और ख़ुशी से ख़ाली नज़र आ रहा था। लेटे लेटे उन्होंने दिल ही दिल में इल्तिजा की, "ऐ ख़ुदा तू कहाँ है? मैं तुझे जानना चाहती हूँ। तेरी ख़िदमत करना चाहती हूँ।"

लेकिन उन्हें कोई जवाब न मिला, न उन्हें किसी तक़वियत देनेवाली हुज़ूरी का एहसास हुआ। तब सब्र के सब बंद टूट गए और आँसू सावन-भादों की झड़ी की तरह उनके रुख़सारों पर बह निकले। यों आठ आठ आँसू रोते हुए वह तलख़ी से सोचने लगीं कि अगर अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ है तो मुझे बच्चा अता करने पर ज़रूर क़ादिर है। वह क्यों मेरी ख़स्ताहाली पर रहम नहीं करता? रोते रोते उनकी हिचकी बँध गई। जब उन्हें अपनी हिचकियों पर क़ाबू न रहा तो उनकी वफ़ादार लौंडी घबरा गई और बोली, "बीबी जी आपकी तबीयत तो ठीक है ना? क्या पीने के लिए कुछ लाऊँ?"

मगर सारा ने कोई जवाब न दिया। दबोरा ने जान लिया कि मालिकन कुछ देर के लिए मुदाख़लत पसंद नहीं करेंगी। पस वह फिर लेट गई। वह मालिकन के लिए ऐसे परेशान थी गोया उनका दुख-दर्द उसका अपना हो।

हज़रत इब्राहीम अपने मनसूबे के मुताबिक़ क़ह्तसाली से वक़्ती बचाव की ख़ातिर आहिस्ता आहिस्ता मिसर की तरफ़ क़दम मारने लगे। लेकिन उनके दिल में एक अजीब बेचैनी-सी थी। अल्लाह की धीमी आवाज़ उन्हें उस पर कामिल तवक्कुल रखने को कह रही थी। यह कह रही थी कि जिस ख़ुदा ने तुझे माज़ी में लातादाद ख़तरात से बचाया है

वह तुझे मुस्तक़बिल में भी भूक और तंगी से बचाएगा। सोच ले कि मिसर जाना ख़तरे से ख़ाली न होगा। लेकिन हज़रत इब्राहीम अपनी अक़्ल पर भरोसा करके अपने फ़ैसले पर क़ायम रहे।

एक बात तो उन्हें चुभती रहती कि अल्लाह के साथ उनकी रिफ़ाक़त में पहले जैसा लुत्फ़ न रहा था। मुसर्रत का उनसुर ग़ायब था। इस बात से वह बहुत परेशान हुए। उन्हें उस वक़्त यह ख़याल क्यों न आया कि अल्लाह की परस्तिश की सबसे अहम बात ख़ुदा पर कामिल भरोसा है? अब मिसर की हद साफ़ नज़र आ रही थी और आख़िरकार फ़ैसला करने का दिन आ गया। चूँकि उन्हें ख़ुराक मुहैया करनेवाले ख़ुदा के बजाए सिर्फ़ सूखी घास नज़र आ रही थी, इसलिए वह हुदूद पार करके मुल्के-मिसर में दाख़िल हो गए। उन्होंने अल्लाह में पनाह लेने के बजाए मिसर में पनाह ली।

पहले-पहल तो महसूस हुआ कि मुल्के-मिसर आने से उनके दिन फिर गए हैं क्योंकि कम अज़ कम यहाँ ख़ुराक की क़िल्लत नहीं थी। गल्लों के लिए सरसब्ज़ चरागाहें और लोगों के लिए मिसर के बाज़ारों में अनाज, सब्ज़ी और फलों की गूनागूँ अक़साम दस्तयाब थीं। काल का इमकान माज़ी की दासतान बन गया था।

ताहम एक फ़िकर हज़रत इब्राहीम के दिल में जड़ पकड़ने लगी। उन्होंने देखा कि मिसरी उनकी हसीन बीवी की तरफ़ ललचाई हुई नज़रों से देखते हैं। उनका दिल ख़ौफ़ से भर गया। वह सोचने लगे कि क्या वही कुछ होगा जिसका मुझे ख़दशा है? क्या यह लोग मुझे क़तल कर देंगे ताकि आज़ादी से सारा पर हाथ डाल सकें? यक़ीनन यह लोग सारा के हुस्न के चर्चे फ़िरऔन के दरबार तक पहुँचाएँगे। इससे पहले ज़िंदगी में इब्राहीम कभी इस क़दर परेशान और ख़ौफ़ज़दा नहीं हुए थे। उन्हें अपनी जान के लाले पड़ गए। आख़िर वह जानते थे कि मिसर आना अल्लाह की रज़ा के मुताबिक़ न था। क्या यह भी परेशानी की एक वजह थी?

एक और था जो उनका ग़ौर से जायज़ा ले रहा था। इबलीस अपने लाव-लशकर समेत हज़रत इब्राहीम के ख़ुदा पर बढ़नेवाले ईमान पर ध्यान दे रहा था। वह उनकी रूहानी ज़िंदगी को उदास और हसद-भरे निगाहों से देख रहा था। वह भी उनकी ज़िंदगी में अपना किरदार अदा करना चाहता था, क्योंकि वह हज़रत इब्राहीम की ज़िंदगी में अल्लाह का मनसूबा नाकाम बनाना चाहता था। अपने इस मक़सद को पाने के लिए वह अनवाओ-अक़साम के हीले-हरबे इस्तेमाल करता और हज़ारों क़िस्म के जाल फैलाता था।

क़िस्साए-मुख़तसर यह कि जहाँ अल्लाह हज़रत इब्राहीम का निगरान था वहाँ इबलीस भी घात लगाए बैठा था कि मौक़ा पाकर वार करे। अल-ग़ारज़ आँखों से ओझल इन दो राहबरों के साथ हज़रत इब्राहीम मिसर में आगे ही आगे बढ़ते चले गए। एक दिन इबलीस जो "अज़ल से झूटा" कहलाता है उन पर किसी क़दर ज़्यादा ग़लबा हासिल कर गया। उस दिन तो यों मालूम होता था कि वह एक ही हरबे में ख़ुदा की तजवीज़ को चौपट करके रख देगा।

हुआ यों कि एक दिन मिसर के बादशाह फ़िरऔन की तरफ़ से क़ासिद उनके ख़ैमे तक आ पहुँचे। रस्मी सलाम-दुआ के बाद उन्होंने थोड़ी देर तक इधर-उधर की बातें कीं और फिर हसीनो-जमील बीबी सारा के मुताल्लिक़ पूछा कि वह कौन हैं और क्या आप उन्हें फ़िरऔन की बीवी बनने के लिए उसके हरमसरा में भेज सकते हैं?

हज़रत इब्राहीम सोच-बिचार में पड़ गए कि क्या कहें कि ऐन उस वक़्त इबलीस ने उनके कान में सरगोशी की, "देखते क्या हो, कह दो वह तुम्हारी बहन है और यह झूट भी नहीं है क्योंकि वह तुम्हारी सौतेली बहन है। वैसे भी क्या तुमने सारा के साथ मुआहदा नहीं किया था कि ख़तरे के वक़्त तुम उसे अपनी बहन ही बताओगे? यह बात तो तुमने ऊर शहर से चलते वक़्त ही उसके साथ तय कर ली थी।"

अब क़ासिद हज़रत इब्राहीम की रज़ामंदी हासिल करने के लिए बादशाह की तारीफ़ों के पुल बाँधने लगे। हज़रत इब्राहीम धड़कते दिल से सब कुछ सुनते गए। दिल में उन्होंने सोचा कि सारा ग़ालिबन वहाँ ख़ुश रहेगी। ख़ुद मुझे भी बेशुमार तोह्फ़े-तहायफ़ मिलेंगे। दूसरी बात यह है कि अगर मैं इनकार करूँ तो एकदम मौत के घाट उतार दिया जाऊँगा। ख़ैर शैतान उन पर अपना जादू चला चुका था। उधर फ़िरऔन के क़ासिदों ने फिर से अपना सवाल दोहराया, "जनाब हम आपके पास एक दरख़ास्त के साथ आए हैं। क्या आपको यह दरख़ास्त मंज़ूर है?"

"आपका उसके साथ क्या रिश्ता है?" एक और ने सवाल किया।

हज़रत इब्राहीम कपकपाती आवाज़ में बोले, "सारा मेरी बहन है। अगर फ़िरऔन की यही ख़्वाहिश है तो आप उसे ले जा सकते हैं।"

बीबी सारा को बुलवाया गया, और फ़िरऔन के क़ासिद उन्हें साथ ले जाने को उठ खड़े हुए। उनके साथ जाने से पहले सारा ने अपने ख़ावंद पर एक अलविदाई निगाह डाली, मगर यह निगाह बग़ैर अलफ़ाज़ के बहुत कुछ कह गई। पहले यह कि "ऐ मेरे मालिक, मैं आपसे मुहब्बत करती हूँ और करती रहूँगी।" लेकिन दूसरे यह कि "मुझे

आपसे ऐसी तवक़्क़ो न थी।" और शायद तीसरी बात जो ख़ावंद ने अपनी बीवी की उस एक निगाह में पढ़ी वह यह थी कि "क्या अल्लाह पर तवक्कुल रखना इसे कहते हैं?"

ग़रज़ वह निगाह हज़रत इब्राहीम को पानी पानी कर गई और पहरों तक कचोके लगाती रही। अब उन्हें याद आया कि बीवी बहुत बार उनसे सच्चे ख़ुदा के मुताल्लिक़ सवाल पूछा करती थीं। मसलन हम किस तरह वुसूक़ से कह सकते हैं कि वह मौजूद है? इब्राहीम तिलमिला उठे कि मेरे इस फ़ेल से उसके ईमान को कितना धचका लगा होगा। कितना सदमा पहुँचा होगा! मेरी इस हरकत ने ज़ाहिर किया कि मेरा ईमान कितना कमज़ोर है। मझसे कितनी बड़ी लग़ज़िश सरज़द हुई है। मैं इबलीस के जाल में फंस गया हूँ। झूट के दो लफ़्ज़ों ने मेरे लिए कितनी बड़ी मुश्किलात खड़ी कर दी हैं। सारा हाथ से निकल गई है। मैंने बीवी के एतमाद को चकनाचूर कर दिया था।

इन तमाम ख़यालों से इब्राहीम की बेचैनी बढ़ती गई। फ़िरऔन के भेजे हुए तोह्फ़े-तहायफ़ उन्हें गोया काँटों की तरह चुभोते रहते थे। ऊँट, गधे, बैल, बकरियाँ, लौंडे-लौंडियाँ—क्या यह सब कुछ वफ़ा-शिआर सारा का नेमुल-बदल हो सकता था? यह सब कुछ क्यों और कैसे हो गया, उन्होंने इंतहाई करब और शर्म से सोचा।

उधर डेरे में इस मामले में लोग तरह तरह के ख़याल पेश कर रहे थे। बाज़ की राय थी कि सरदार ने जो किया मुनासिब था, क्योंकि इससे हर एक के सर से ख़तरा टल गया है। अब हमें फ़िरऔन के ग़ज़ब से डरने की ज़रूरत नहीं। और वैसे भी ग़ालिबन हमारी मालिकन ख़ुशबाश ज़िंदगी बसर करेंगी। लेकिन बाज़ ऐसे भी थे जिन्हें बीबी सारा पर तरस आता था। उन्हें अपनी बेचारी मालिकन से बड़ी हमदर्दी थी। वह तो जानते थे कि वह अपने शौहर से बेहद मुहब्बत करती हैं। उनसे जुदा होकर वह किस तरह ख़ुश हो सकती हैं?

एक और गुरोह अपने महबूब लीडर की इस हरकत को सवालिया निगाहों से देख रहा था। वह इसको "बुज़दिलाना हरकत" का नाम दे रहा था और पूछता था कि हमारे सरदार की जुर्रत और दिलेरी कहाँ सो गई है। यक़ीनन सरदार का यह फ़ेल उनके आम किरदार के मुताबिक़ नहीं। क्या यह वही हमारे आक़ा हैं जो हम सबको यह दरस देते आए हैं कि सब हालात में सच्चे ख़ुदा पर तवक्कुल करो?

ग़रज़ पूरे डेरे में तहलका मच गया। इस में शक नहीं कि हालात बड़े मायूसकुन थे और पानी सर से गुज़र चुका था। लेकिन जहाँ इनसान बेबस है वहाँ क़ादिर ख़ुदा सब कुछ कर सकता है। वह अब तक हालात पर हावी था और बिगड़ी बात को बना सकता

था। वह हज़रत इब्राहीम के ज़ाहिरो-बातिन को जानता था। उसने इस पेचीदा मसले को इस्तेमाल किया ताकि अपने ख़ादिम को चंद क़ीमती सबक़ सिखाए। वह चाहता था कि इब्राहीम इस मुश्किल वक़्त में अपनी छान फटककर अपने आपको अच्छी तरह जान लें। वह अपनी कमज़ोरी को पहचानकर अल्लाह की ज़्यादा क़ुरबत में रहने की ज़रूरत को महसूस करें और उसकी हुज़ूरी में चलने के लिए कोशाँ रहें।

जब हज़रत इब्राहीम अपने किए पर पशेमान होने लगे तो अल्लाह का क़ादिर हाथ इस उक़्दे को हल करने में लग चुका था। ऐसा हुआ कि ज्योंही सारा फ़िरऔन के महल में पहुँचाई गईं तो ख़ुदा ने फ़िरऔन के घराने में सख़्त वबा फैला दी। सूरते-हाल यकायक ऐसी संगीन हो गई कि उसे अपनी नई बीवी की तरफ़ तवज्जुह देने की कोई फ़ुरसत ही न मिली। तब अल्लाह ने ख़्वाब में बादशाह पर ज़ाहिर किया कि यह सारी सख़्ती और मुसीबत सारा की वजह से है जो पहले ही से ब्याही हुई है। फ़िरऔन ने एकदम हज़रत इब्राहीम को बुला भेजा और उन्हें सख़्त लहजे में कहा, "तूने मेरे साथ क्या किया? तूने मुझे क्यों नहीं बताया कि सारा तेरी बीवी है? तूने क्यों कहा कि वह मेरी बहन है? देख, तेरी बीवी हाज़िर है। इसे लेकर यहाँ से निकल जा!"

हज़रत इब्राहीम और बीबी सारा के लिए यह निहायत ही शर्मनाक मौक़ा था। उस बेदीन के मुँह से ऐसी बातें सुनना दोनों के लिए बड़ी नदामत का बाइस था। बेशक बादशाह ने हज़रत इब्राहीम को सख़्त सज़ा महज़ इसलिए न दी कि वह उनके ख़ुदा के इंतक़ाम से डरता था। तो भी मियाँ-बीवी शर्मसार हुए कि इस वक़्त एक बेदीन बादशाह हमारी निसबत अल्लाह के हुक्म की पैरवी बेहतर तौर पर कर रहा है।

जब हज़रत इब्राहीम बीबी सारा को साथ लेकर अपने डेरे पर पहुँचे तो उन्हें अपनी लग़ज़िश पर बेहद अफ़सोस हुआ। अगर यह एहसासे-नदामत उनके ज़मीर को मलामत न करता होता तो एक दूसरे को दुबारा पा लेने पर वह दोनों ख़ुशी के शादियाने बजाते। वैसे हक़ीक़त तो यह है कि उनके पास शादियाने बजाने की कोई फ़ुरसत ही न थी क्योंकि साथ साथ फ़िरऔन के सिपाही आ मौजूद हुए। वह उनके कारवाँ को मिसर से बाहर ले जाने में रहबरी करने आए थे। हज़रत इब्राहीम को ख़ूब मालूम था कि यह सिपाही हमारी इज़्ज़त करने को साथ नहीं दे रहे बल्कि इसलिए कि फ़िरऔन हमें शक की निगाह से देखने लगा है।

कारवाँ रवाना होकर दुबारा उसी रास्ते पर हो लिया जिस पर चलकर मिसर पहुँचा था। दिन, हफ़्ते और महीने सफ़र में गुज़र गए। ख़ैमे गाड़े और उखाड़े गए। डेरा उठाते वक़्त

जिस तरह ख़ैमों की बहुत-सी मेख़ें उखाड़ी जाती थीं उसी तरह अल्लाह ने बहुत-सी ख़राबियाँ हज़रत इब्राहीम के दिल से निकाल बाहर कीं।

इस तरह आहिस्ता आहिस्ता बैत-एल की तरफ़ क़दम मारते हुए ख़ुदा ने अपने ख़ादिम को बहुत-से क़ाबिले-क़दर सबक़ सिखाए। जब आख़िरकार वह उस जगह के मुक़ाबिल आए जहाँ से रवाना हुए थे तो उन्होंने इस हक़ीक़त को पहचान लिया कि अल्लाह नीमगरम ज़िंदगी पसंद नहीं करता। चुनाँचे उन्होंने बैत-एल के मज़बह को दुबारा तामीर किया। याद रहे कि अपनी मरज़ी से बैत-एल से चलने के बाद से अब तक उन्होंने कोई मज़बह न बनाया था क्योंकि ख़ुदा के साथ गहरी रिफ़ाक़त का सिलसिला मुंक़ते हो चुका था। आज वह वहाँ दुबारा अल्लाह की इबादत करने के ख़्वाहाँ थे। उन्होंने जानवर की क़ुरबानी गुज़रानकर ज़ाहिर किया कि मैं फिर से अपनी ज़िंदगी को कपल्ली तौर पर अल्लाह के हाथ में सौंप रहा हूँ। और ऐसा करते हुए हज़रत इब्राहीम का दिल बेपायाँ मुसर्रत से लबरेज़ हो गया। ख़ुदा की अज़ीम बख़्शिश उन्हें दुबारा राहे-मुस्तक़ीम पर ले आई थी।

7

ख़ैमों का गुंजान गाँव आज भी पुरसुकून नज़र आ रहा था, लेकिन हक़ीक़त कुछ और ही थी। यहाँ के रहनेवाले अफ़राद दो गुरोहों में बट गए थे। एक गुरोह हज़रत इब्राहीम के भतीजे हज़रत लूत के हक़ में नारे लगा रहा था जब कि दूसरा गुरोह अपने आक़ा इब्राहीम के हक़ में था। क्या हुआ था? दोनों सरदारों के पास बहुत-से माल-मवेशी और भेड़-बकरियाँ थीं। चरागाहें दोनों के मवेशियों के लिए नाकाफ़ी थीं। इसलिए जब से वह मिसर से आए थे दोनों के चरवाहों के दरमियान आए दिन तकरार रहती। वक़्त के साथ साथ यह झगड़ा संजीदा सूरत इख़्तियार करता गया।

होता यों कि हज़रत इब्राहीम के चरवाहे हज़रत लूत के गल्लाबानों को डाँट-डपट कर दूर हटाने की कोशिश करते। लेकिन वह भी मुँह में ज़बान रखते थे। वह भी तुरकी बतुरकी जवाब देते। बात तू तू मैं मैं से हाथा-पाई तक पहुँच जाती और देखते ही देखते लाठी-सोंटे तक की नौबत आ जाती। अब यह तमाशा आए दिन होने लगा। आस-पास के बेदीन लोग रोज़ाना यह ड्रामा देखते रहे।

पहले-पहल तो यह झगड़े चरागाहों या खुले मैदानों ही में होते थे और गाँव के लोग ज्यों के त्यों अमन से रहते। लेकिन रफ़्ता रफ़्ता अब उनके घरवालों ने भी अपने अपने आदमियों की हामी भरनी शुरू की। इस तरह बाहर का फ़ितना-फ़साद घर की चारदीवारी तक आ पहुँचा, यहाँ तक कि पूरा गाँव दो गुरोहों में बट गया।

हज़रत इब्राहीम ने हालात को जल्दी क्यों न सँभाला? क्या वह नज़मो-ज़ब्त को क़ायम न रख सकते थे? या क्या वह जान-बूझकर मुदाख़लत से बाज़ रह रहे थे ताकि अपने भतीजे पर साबित करें कि आइंदा वह इकट्ठे नहीं रह सकेंगे? शायद हज़रत लूत उतने

में सोच रहे थे कि जिस दिन मामला हद से बढ़ा ज़मीनों या चरागाहों का बटवारा होकर रहेगा। ग़ालिबन बुज़ुर्ग ताया मुझे कम ज़रख़ेज़ चरागाहें देकर रास्ते से हटा देंगे। आख़िर अल्लाह ने उन्हें यह मुल्क देने का वादा किया है मुझे नहीं।

एक दिन अच्छी-ख़ासी झड़प के बाद हज़रत इब्राहीम के गल्लाबान अपने आक़ा की ख़िदमत में हाज़िर हुए। बुज़ुर्ग मालिक ने सब्रो-तहम्मुल से उनके गिले-शिकवे सुने और उन्हें समझा-बुझाकर वापस भेज दिया। लेकिन उनके जाते ही हज़रत लूत को तलब फ़रमाया। मुमकिन है कि उस दिन लूत इस बुलावे का इंतज़ार कर रहे हों ताकि अपने आदमियों की तरफ़ से सफ़ाई पेश करें और यह फ़ैसला हो जाए कि कौन हक़ पर है। वह उनके पास आए तो उन्होंने निहायत तहम्मुल और बुर्दबारी से उन्हें समझाते हुए कहा, "ऐसा नहीं होना चाहिए कि तेरे और मेरे दरमियान झगड़ा हो या तेरे चरवाहों और मेरे चरवाहों के दरमियान। हम तो भाई हैं।"

हज़रत इब्राहीम ने अपने भतीजे को समझाया कि इस तरह दोनों ख़ानदानों में ना-इत्तिफ़ाक़ी बढ़कर जुदाई की दीवार बन जाएगी। क़रीबी रिश्तेदारों को मुत्तहिद होकर रहना चाहिए। हज़रत लूत ने हाँ में सर हिलाया। वह सोच रहे थे कि अगर सूरते-हाल ऐसी ही रही तो मुमकिन है कनानी इससे फ़ायदा उठाकर हम पर हमला करके ग़लबा हासिल कर लें। हज़रत इब्राहीम के नज़दीक एक और बात ज़्यादा अहम थी। यह कि लोग आए दिन का यह झगड़ा देखकर सच्चे ख़ुदा के मुताल्लिक़ क्या सोचेंगे। अगर वह अपनी ज़िंदगी से अच्छी मिसाल पेश नहीं कर सकते तो उन्हें अल्लाह की शफ़क़त और सीरत का प्रचार नहीं करना चाहिए। बातें करते करते हज़रत इब्राहीम अपने भतीजे को बाहर एक बुलंद जगह पर ले गए जहाँ से बैत-एल की सारी सरज़मीन ख़ूब नज़र आ रही थी। वहाँ उन्होंने हज़रत लूत से कहा, "बेहतर है कि तू मझसे अलग होकर कहीं और रहे। अगर तू बाएँ हाथ जाए तो मैं दाएँ हाथ जाऊँगा, और अगर तू दाएँ हाथ जाए तो मैं बाएँ हाथ जाऊँगा।"

यह कितनी फ़राख़दिल पेशकश थी! लेकिन हज़रत लूत ने जवाब में कोई रख-रखाव या कुशादा-दिली न दिखाई। उन्होंने इस बात का ख़याल न किया कि ताया जी को उम्र और रिश्ते में बड़ा होने के बाइस पहले चुनाव का मौक़ा दें। इसके बरअक्स उन्होंने सारे इलाक़े पर नज़र दौड़ाई और देखा कि तीन तरफ़ चटियल पहाड़ी इलाक़ा है जहाँ ज़्यादा हरियावल नहीं। फिर उनकी निगाहें जुनूब-मशरिक़ की तरफ़ जमकर रह गईं। वहाँ दरयाए-यरदन एक चौड़ी वादी में से बह रहा था, और उसके हर तरफ़ हद्दे-नज़र

तक सब्ज़ा ही सब्ज़ा नज़र आ रहा था। उन्होंने फ़ौरन फ़ैसला कर लिया कि यही मेरा इलाक़ा होगा। घटिया इलाक़ा ताया जी को मुबारक हो।

हज़रत इब्राहीम ने बेचूनो-चिरा उनके फ़ैसले को तसलीम कर लिया। लेकिन जब हज़रत लूत वादीए-यरदन में सदूम के शादाब लेकिन बद-किरदार शहर की तरफ़ बढ़ने लगे तो ताया को बहुत सदमा हुआ। उन्होंने देखा कि सदूम का शहर उस नातजरिबाकार जवान को मिक़्नातीस की तरह खींच रहा है। पहले तो हज़रत लूत ने शहर के क़रीब डेरे लगाए। लेकिन रफ़्ता रफ़्ता सदूमियों के साथ उनकी सलाम-दुआ बढ़ती चली गई। कुछ अरसे बाद उन्होंने उन्हें दावत दी कि वह बुज़ुर्गों के साथ क़ाबिले-एहतराम जगह पर बैठकर मुंसिफ़ की हैसियत से उनके झगड़े चुकाएँ। हज़रत लूत जो इस ज़िंदगी में कामयाबी के ख़्वाहाँ थे और मालो-मता इकट्ठा करने के मुतमन्नी थे उनकी बातों में आ गए और उनके दरमियान जाकर रहने लगे।

हज़रत लूत एक अरसे से अपने बुज़ुर्ग ताया के साथी रहे थे। यह क़ुदरती बात थी कि हज़रत इब्राहीम उनके जाने के बाद उनकी कमी को महसूस करते। वह उनकी ख़ुदग़रज़ी और बेदीन लोगों में बूदो-बाश को देखकर अकसर उदास हो जाते थे। अब वह जान गए कि लूत का मज़हबी जोशो-ख़ुरोश महज़ वक़्ती और सतही था। अब वह जोशो-जज़बा हंडिया के उबाल की तरह बैठ गया था। उनकी मरज़ी, उनकी दिलचस्पी और उनकी ज़िंदगी का नस्बुल-ऐन अल्लाह की रज़ा के ताबे नहीं था। अपनी ज़िंदगी के इस अहम मोड़ पर उन्होंने अल्लाह को ख़ातिर में लाए बग़ैर फ़ौरन फ़ैसला कर दिया कि वह सदूम के इलाक़े में रहेंगे।

अब हज़रत इब्राहीम मुल्के-कनान में ज़िंदा ख़ुदा के वाहिद गवाह थे। लगता था कि भतीजे के चले जाने के साथ ही ख़ानदान के साथ राबिते की आख़िरी कड़ी भी टूट गई है। ग़रज़ यह वक़्त इब्राहीम को निहायत मुश्किल लग रहा था। तनहाई, मायूसी और उदासी के बादल उन पर पूरी तरह छा गए। उनकी ऐन ज़रूरत के वक़्त अल्लाह ने उन पर नज़र की और उनसे हमकलाम होकर उनकी हौसलाअफ़्ज़ाई की। उसने फ़रमाया, “अपनी नज़र उठाकर चारों तरफ़ यानी शिमाल, जुनूब, मशरिक़ और मग़रिब की तरफ़ देख। जो भी ज़मीन तुझे नज़र आए उसे मैं तुझे और तेरी औलाद को हमेशा के लिए देता हूँ। मैं तेरी औलाद को ख़ाक की तरह बेशुमार होने दूँगा। जिस तरह ख़ाक के ज़र्रे गिने नहीं जा सकते उसी तरह तेरी औलाद भी गिनी नहीं जा सकेगी। चुनाँचे उठकर इस मुल्क की हर जगह चल-फिर, क्योंकि मैं इसे तुझे देता हूँ।”

इस कलाम से हज़रत इब्राहीम इस क़दर तक़वियत मिली कि उदासी और मुस्तक़बिल के बारे में उनकी सोच एकदम बदल गई। उन्हें महसूस हुआ कि सिर्फ़ अल्लाह ही ऐसी हस्ती है जिस पर मैं हर हाल में भरोसा कर सकता हूँ। अब उन्होंने जान लिया कि ख़ुदा की मुहब्बत ने ही यह मुनासिब जाना कि लूत के साथ राबिता जाता रहे। उनकी रूहानी तरक़्क़ी के लिए इसी क़दम की ज़रूरत थी।

उन दिनों हज़रत इब्राहीम ने शहर हबरून से तक़रीबन तीन मील के फ़ासिले पर ममरे के बलूतों के झुंड-तले डेरे डाले हुए थे। हबरून एक तंग घाटी के सिरे पर एक ख़ुशनुमा मक़ाम था। यहाँ के अंगूरिस्तान इसे अनोखा रूप देते थे जब कि ज़ैतून के झुंड और दीगर फलदार दरख़्त इसके मंज़र की दिलकशी को चार चाँद लगाते थे। क़रीब ही हबरून की सरसब्ज़ वादी थी जो जुनूब में तक़रीबन 30 या 40 मील तक फैली हुई थी। यहाँ पर उनके चरवाहों को बहुत उम्दा चरागाहें मिल गई थीं। वैसे भी ज़िंदगी के इस मोड़ पर अल्लाह ने अपने ख़ादिम पर गूनागूँ रहमतों की बारिश बरसाई। अब कहीं ज़रख़ेज़ ज़मीन की तलाश के लिए सारे इलाक़े में गश्त लगाने की ज़रूरत न थी। उन्होंने अपनी ख़ैमागाह को आए दिन बदलना भी छोड़ दिया। जब नई चरागाहों की ज़रूरत होती तो वह अपने क़ाबिले-एतबार गल्लाबानों को गल्लों के साथ नई चरागाहों में भेज देते, लेकिन ख़ुद वहीं के वहीं रहते थे।

वह लोग कैसे थे जो हज़रत इब्राहीम से पहले हबरून के इलाक़े में आबाद हुए थे? यहाँ पर कई मुख़तलिफ़ क़बीले बूदो-बाश करते थे जिन में से अमनपसंद हित्ती और वहशी और तुंदख़ू अमोरी ज़्यादा क़ाबिले-ज़िक्र हैं। तीन भाई अमोरी क़बीले के सरदार थे जिनके नाम आनेर, ममरे और इसकाल हैं। वह हज़रत इब्राहीम के मुस्तक़िल दोस्त बन गए थे। वह पहचान चुके थे कि हज़रत इब्राहीम जैसे असरो-रसूख़वाले से दोस्ती बहुत मुफ़ीद होगा। उनके दानिशमंदाना मशवरे और माली इमदाद हमारे मुआशरे को मज़ीद इस्तेहकाम दे सकेंगे। अगर दुश्मन का सामना करना पड़े तो वह हमारे साथ मुत्तहिद होकर मुक़ाबला करेंगे। उनका यह ख़याल दुरुस्त भी साबित हुआ। पहले बाब में जिस वाकिये का ज़िक्र है वह हज़रत इब्राहीम के ममरे के क़ियाम के दौरान ही पेश आया था। जब शाह किदरलाउमर हज़रत लूत और दीगर सदूमियों को असीर करके ले गया तो हज़रत इब्राहीम और अमोरियों ने मिलकर किदरलाउमर पर फ़तह हासिल की और क़ैदियों को रिहा करवा लिया।

इस बड़ी फ़तह के बाद रब फिर अपने ख़ादिम पर ज़ाहिर हुआ। रात के वक़्त वह उनसे हमकलाम हुआ, "मैं रब हूँ जो तुझे कसदियों के ऊर से यहाँ ले आया ताकि तुझे यह मुल्क मीरास में दे दूँ।" यों अल्लाह चौथी मरतबा उनसे हमकलाम हुआ।

होते होते हज़रत इब्राहीम अल्लाह की आवाज़ को ख़ूब पहचान गए थे। वह ख़ासी हद तक उसकी सीरत को जान गए थे। इस मरतबा उन्हें महसूस हुआ गोया ख़ुदा चाहता है कि मैं दिल खोलकर अपनी मुश्किलात और ख़दशात उस पर ज़ाहिर करूँ। कि जिस तरह बच्चे जवाब पाने का यक़ीन करके बाप से सवाल पूछते हैं उसी तरह मैं भी अल्लाह से सवाल करूँ। हाँ हज़रत इब्राहीम को यक़ीन था कि अल्लाह जवाब देगा। मुमकिन है कि वह फ़ौरन जवाब न दे। उसे तो मालूम है कि फ़िलहाल हम सब बातों की बरदाश्त नहीं कर सकते।

हज़रत इब्राहीम ने कहा, "ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, मैं किस तरह जानूँ कि इस मुल्क पर क़ब्ज़ा करूँगा?"

अल्लाह ने निहायत तहम्मुल से जवाब दिया, "मेरे हुज़ूर एक तीन-साला गाय, एक तीन-साला बकरी और एक तीन-साला मेंढा ले आ। एक क़ुमरी और एक कबूतर का बच्चा भी ले आना।"

हज़रत इब्राहीम समझ गए कि ख़ुदा मझसे कोई अहद करनेवाला है। उस ज़माने में मुआहदा करनेवाले ख़ास ख़ास जानवर लेकर हाज़िर होते। इन्हें ज़बह करके टुकड़े किया जाता था और ज़मीन पर तरतीब से दो क़तारों में यों रखा जाता था कि दरमियान में से तंग-सा रास्ता रहे। तब मुआहदा करनेवाले फ़रीक़ उस तंग रास्ते पर उन जानवरों के टुकड़ों में से गुज़रते थे। इस तरह वह अहद की तसदीक़ करते थे। जानवरों के टुकड़े उन्हें याद दिलाते थे कि अगर वह अपने अहद पर कारबंद न रहे तो उनका भी वही हाल होगा जो जानवरों का हुआ।

ग़रज़ हज़रत इब्राहीम ने ऐसा ही किया और फिर हर एक जानवर को दो हिस्सों में काटकर उनको एक दूसरे के आमने-सामने रख दिया। लेकिन परिंदों को उसने सालिम रहने दिया। फिर वह इंतज़ार करने लगे। इंतज़ार करते करते वह थक गए, फिर भी अल्लाह ज़ाहिर न हुआ। उधर गोश्त की बू से गिद्ध सर पर मंडलाने लगे और फिर रफ़्ता रफ़्ता क़रीब से क़रीबतर होते गए। हज़रत इब्राहीम बड़ी कोशिश से उनको मुतवातिर हँकाते रहे। लग रहा था कि यह शिकारी परिंदे किसी बदशुगूनी की अलामत हैं। वह सोचने लगे कि इस सारी काररवाई से ख़ुदा मुझे क्या सबक़ सिखाना चाहता है?

अब सूरज ग़ुरूब होने लगा और अल्लाह का बंदा सारी काविश से थककर गहरी नींद सो गया। लेकिन यह नींद तरो-ताज़गी बख़्शनेवाली नींद न थी। ख़्वाब में उन्होंने अपने इर्दगिर्द हौलनाक तारीकी और मुस्तक़बिल के ख़ौफ़नाक ऐयाम का मंज़र देखा। वह सहम गए। क्या तारीकी की कोई ताक़त ख़ुदा से भी ज़्यादा ज़ोरावर हो सकती है? क्या यह तारीकी मुझे ख़त्म करके ही दम लेगी? हाय इस क़दर घटाटोप अंधेरा!

तब यकायक अल्लाह की आवाज़ पहुँची जिससे उन्हें यकदम तसल्ली हो गई। अल्लाह ने फ़रमाया, "जान ले कि तेरी औलाद ऐसे मुल्क में रहेगी जो उसका नहीं होगा। वहाँ वह अजनबी और ग़ुलाम होगी, और उस पर 400 साल तक बहुत ज़ुल्म किया जाएगा। लेकिन मैं उस क़ौम की अदालत करूँगा जिसने उसे ग़ुलाम बनाया होगा। इसके बाद वह बड़ी दौलत पाकर उस मुल्क से निकलेंगे। तू ख़ुद उम्रसीदा होकर सलामती के साथ इंतक़ाल करके अपने बापदादा से जा मिलेगा और दफ़नाया जाएगा। तेरी औलाद की चौथी पुश्त ग़ैरवतन से वापस आएगी, क्योंकि उस वक़्त तक मैं अमोरियों को बरदाश्त करूँगा। लेकिन आख़िरकार उनके गुनाह इतने संगीन हो जाएँगे कि मैं उन्हें मुल्के-कनान से निकाल दूँगा।"

अब इब्राहीम ने जान लिया कि ख़ुदाए-क़ादिर सब हालात पर हावी है और हमेशा रहेगा। बेशक मेरी नसल मुस्तक़बिल में निहायत अलमनाक हालात से दोचार होगी। लेकिन अल्लाह हाल ही में उन ना-ख़ुशगवार हालात को जानता है। गो यह ऐयाम निहायत बुरे होंगे, लेकिन दरअसल हालात हर वक़्त उसके क़ाबू और इख़्तियार में होंगे। हाँ तकलीफ़ का यह सारा वक़्त उनकी बेहतरी और बहबूदी के लिए होगा।

अब आफ़ताब पूरी तरह ग़ुरूब हो चुका था और शब की सियाही फैल रही थी। तब हज़रत इब्राहीम चौंककर जागे। उनका दिल बोझल और दिमाग़ परेशान था। वह सोचने लगे कि मैं रात के अंधेरे में यहाँ आकर क्या कर रहा हूँ? तब यकायक उन्हें याद आया कि मैं मुआहदे के लिए तैयार ज़बहकरदा जानवरों के पास ठहरा हुआ हूँ।

दुनिया पर हू का आलम तारी था। हर तरफ़ गहरा सुक़ूत छाया हुआ था। किसी पत्ते तक के हिलने की आवाज़ न थी न किसी परिंदे के पर मारने का हलका-सा भी शोर। हज़रत इब्राहीम के तन-बदन पर लरज़ा तारी हो गया। ऐन उस वक़्त शब की सियाही में एक पुरअसरार जलती हुई मशअल आहिस्ता आहिस्ता पुर-वक़ार अंदाज़ में गोश्त के टुकड़ों के दरमियानी रास्ते से गुज़री। गुज़रते वक़्त आवाज़ आई, "मैं यह मुल्क मिसर की सरहद से फ़ुरात तक तेरी औलाद को दूँगा।"

बाग़े-अदन से निकाले जाने के बाद इनसान ने आज फिर पहली मरतबा मशअल की सूरत में ख़ुदा के जलाल का ज़ुहूर देखा। हज़रत इब्राहीम ने काँपते हुए अल्लाह के जलाल का मुज़ाहरा किया। उन्हें ख़ुदा की क़ुद्दूसियत का शदीद एहसास हुआ जिसके मुक़ाबले में उनकी अपनी नारास्ती और ना-अहलियत नुमायाँ नज़र आई।

अल्लाह के जलाल और नूर के ज़ुहूर से उनको इसका गहरा एहसास हुआ कि मैं ख़ुद उस मेयार पर पूरा नहीं उतर सकता जो ख़ुदा ने मेरे लिए मुक़र्रर कर रखा है। मुआहदे की तसदीक़ की ख़ातिर ख़ुद अल्लाह उन टुकड़ों के दरमियान से गुज़रा है। क्योंकि वह जानता है कि मैं और मेरी नसल अपनी ताक़त से उस अहद पर कारबंद न रह सकेगी।

उन्होंने मज़ीद सोचा कि मेरा इस मुआहदे में क्या हिस्सा है? मेरा हिस्सा यह होगा कि मैं अपनी ज़िंदगी को कुल्ली तौर पर अल्लाह के लिए मख़सूस कर दूँ। ताहम मैं जानता हूँ कि मैं इस अहद को निभा न सकूँगा। क्या अल्लाह ने अभी अभी यह बात वाज़िह न की है? यक़ीनन गोश्त के टुकड़ों के दरमियान से ख़ुदा की तजल्ली का अकेले गुज़रना इसकी दलील है।

फिर हज़रत इब्राहीम के परेशान दिल में इतमीनान की लहर दौड़ गई। उन्हें समझ आई कि अल्लाह इनसान की लग़ज़िश से वाक़िफ़ है। वह ख़ुद इसको रास्तबाज़ बनाकर अपनी हुज़ूरी में खड़ा होने के लायक़ बना सकता है।

ख़ुदाए-क़दीर ने हज़रत इब्राहीम की चशमे-बसीरत बीना कर दी ताकि वह सफ़ाई से देख सकें कि एक दिन इनसान के गुनाह मिटाए जाएँगे। इस वक़्त मैं गुनाह सरज़द होने पर जानवर की क़ुरबानी पेश करता हूँ जिसका ख़ून मेरे बदले बहाया जाता है। लेकिन यह इंतज़ाम सिर्फ़ वक़्ती है, हमेशा के लिए नहीं। आइंदा अल्लाह आसमान से एक कामिल और बेऐब लेला भेजेगा—हुज़ूर अल-मसीह जो इनसान के गुनाहों के बदले क़ुरबान हो जाएँगे। इनसान ख़ुदा के साथ किए हुए अहद पर कारबंद नहीं रह सकता, इसलिए अल-मसीह को ज़बह किया जाएगा।

हज़रत इब्राहीम का दिल उस बड़ी नजात के लिए जो ख़ुदा इनसान को मुस्तक़बिल में बख़्शिश के तौर पर देनेवाला था निहायत शादमान हुआ। उनका सर प़र्ते-तशक्कुर और अक़ीदत से झुक गया।

8

हज़रत इब्राहीम और उनकी बीवी सारा मौऊदा वारिस का बेताबी से इंतज़ार करते रहे। लेकिन वक़्त की गरदिश महीनों को सालों में बदलती चली गई और उनकी उम्मीद बर न आई। यों पाँच साल गुज़र गए। आख़िर बीबी सारा बिलकुल मायूस हो गईं। उठते-बैठते वह इसी मसले पर सोच-बिचार करने लगीं। तब उनके ज़हन में एक नया ख़याल बैठ गया। यह कि मौऊदा फ़रज़ंद को हासिल करने का एक और भी तरीक़ा है। मेरे लिए तो यह निहायत सख़्त तजरिबा होगा, लेकिन क्या करें? अल्लाह तो बड़ा सख़्तगीर है। वह यही चाहता होगा कि मैं अपने ख़ावंद के रास्ते से हट जाऊँ ताकि वह दूसरी शादी करके साहिबे-औलाद हो सकें। आह काश मैं ख़ुद उस वारिस की माँ बन सकूँ! लेकिन चूँकि यह नामुमकिन है इसलिए मुझे अपने ख़ावंद की दूसरी शादी में हाइल नहीं होना चाहिए।

कई दिन तक इस मामले पर ग़ौरो-ख़ौज़ करने के बाद बीबी सारा ने अपने मालिक की दूसरी शादी के बारे में पक्का फ़ैसला कर लिया। एक दिन दिल पर पत्थर रखकर वह उनके ख़ैमे में पहुँचीं। उधर हज़रत इब्राहीम ख़ुद भी हाल ही में इस मामले पर ग़ौर करते रहे थे। अल्लाह ने बहुत देर पहले उनसे पहली बार बेटे का ज़िक्र किया था। अब दस बरस गुज़र गए थे। वह सोच रहे थे कि ख़ुदा का क़ौल अब तक पूरा क्यों नहीं हुआ? आख़िर बच्चे पालने का भी एक वक़्त और एक उम्र होती है। मैं अब पचासी बरस का हूँ और सारा 75 बरस की। आख़िर अल्लाह का वादा पूरा क्यों नहीं होता? ग़रज़ जब बीबी सारा ने ख़ुद ही इस मौज़ू को छेड़ा तो हज़रत इब्राहीम इस पर बातचीत करने को गोया तैयार ही बैठे थे। उनकी अहलिया ने कहा, “मैं मौऊदा वारिस के मुताल्लिक़ ख़ूब ग़ौर

करती रही हूँ। अल्लाह ने आपको वारिस अता करने का वादा किया है, लेकिन इसके साथ ही उसने साबित कर दिया है कि वह मेरे बतन से नहीं होगा क्योंकि...”

“प्यारी सारा,” उन्होंने क़ता-कलामी की मगर बीबी सारा अपनी ही कहे जा रही थीं। उन्होंने अपना हाथ मज़बूती से अपने मालिक के बाज़ू पर रखा और बोलीं, “नहीं नहीं, मुझे कहने दीजिए। मुझे अपनी बात तो ख़त्म करने दें। यह तो अब साफ़ नज़र आ रहा है कि मैं बाँझ हूँ, दायमी बाँझ हूँ। क्या इसका यह मतलब नहीं कि आपको दूसरी शादी के मुताल्लिक़ जैसा कि मैंने पहले कहा था ग़ौर करना चाहिए? मैं जानती हूँ कि आपको ऐसा करना मुश्किल मालूम होता है, लेकिन ज़रा ग़ौर तो कीजिए कि अगर अल्लाह की यह मरज़ी होती कि मैं माँ बनूँ तो वह मेरे अंदरूनी निज़ाम को मुख़तलिफ़ न बनाता।”

“यानी तुम्हारा मतलब है कि वारिस के वादे के मानी यह नहीं कि वह वारिस तुम्हारे बतन ही से हो। लेकिन सारा मैं पूछता हूँ क्यों, आख़िर क्यों?”

“ख़ैर यह तो ख़ुदा ही बेहतर जानता है। मैं तो सिर्फ़ इतना ही जानती हूँ कि हम इंतज़ार में पहले ही दस क़ीमती साल ज़ाया कर चुके हैं, हमें ख़ुदादाद अक़्ल को इस्तेमाल करना चाहिए। ख़ुदा रा जल्दी कीजिए ऐसा न हो कि आपके लिए भी वक़्त हाथ से निकल जाए। हम कब तक हक़ीक़त से चश्मपोशी करते रहेंगे! क्या आप ख़ुद भी उम्ररसीदा नहीं हो रहे? हाय! अल्लाह की राहों को कौन जानता है!” हज़रत सारा आज बड़ी रवानी से कहे जा रही थीं।

हज़रत इब्राहीम ने हार मान ली और आह भरकर बोले, “शायद तुम ठीक ही कह रही हो। मगर सारा ख़्वाह कुछ भी हो मैं तुमसे मुहब्बत करता हूँ और करता रहूँगा। तुम्हारे अलावा मैं कभी किसी और से इतनी मुहब्बत नहीं कर सकता।”

बीबी सारा उदासी से मुसकरा दीं। “आह काश मैं उस वारिस की ख़ुद माँ होती!” लेकिन अब ऐसे जज़बात को हवा देने का मौक़ा न था। उसने कहा, “मैं अपनी मिसरी लौंडी बीबी हाजिरा को आपके निकाह में दूँगी। मसोपुतामिया के क़वानीन की रू से उसके बच्चे मेरे बन जाएँगे और वह ख़ुद पहले की तरह लौंडी ही रहेंगी।”

तब हज़रत इब्राहीम ने हाँ में सर हिला दिया हालाँकि उन्हें उसी वक़्त यह ख़याल आ रहा था कि यह मामला इतना आसान नहीं जितना बीबी सारा अपने बयान की रवानी से ज़ाहिर कर रही हैं। उन्हें फ़ौरन ख़दशा होने लगा कि मुस्तक़बिल में डेरे का सुकून औरतों की बहसो-तकरार से फ़ना हो जाएगा। उन्होंने इस अहम मामले को अल्लाह के सामने

क्यों पेश न किया? उन्होंने क्यों अपनी बीवी के मशवरे पर कान लगाया? क्या इसका अंजाम बख़ैर हो सकता था?

बहर हाल इस्कीम तैयार हो चुकी थी, और उस पर अमल भी एकदम शुरू कर दिया गया। लेकिन बीबी हाजिरा की शादी पर कोई बैंड-बाजे न बजाए गए, क्योंकि वह सिर्फ़ लौंडी थीं। उनकी शादी पर शादियाने बजाना उस वक़्त के दस्तूर के मुवाफ़िक़ मुनासिब नहीं था। उनकी हैसियत हज़रत सारा जैसी मंकूहा बीवी की नहीं हो सकती थी। बीबी हाजिरा को सारी सूरते-हाल समझा दी गई थी। गो उनके लिए यह क़ाबिले-क़बूल नहीं थी तो भी लौंडी की हैसियत से उन्हें सरे-तसलीम ख़म करना पड़ा। उनके अंदर ख़ामोश एहतजाज और तलख़ी का अजीबो-ग़रीब तलातुम मौजज़न हुआ। क्या अजब कि यह मिसरी लौंडी जो पहले नरमदिल और मेहरबान हुआ करती थीं अब अपनी मालिकन को अकसर सख़्ती और तलख़ी से जवाब देने लगीं। अब वह हज़रत सारा को दुख पहुँचाना चाहती थीं, क्योंकि बीबी सारा उन्हें हज़रत इब्राहीम की बीवी तसलीम करने को तैयार न थीं। वह अब तक यही दावा करती थीं कि हज़रत इब्राहीम सिर्फ़ उनके ही ख़ावंद हैं, किसी और के नहीं।

औरतों के डेरे में जहाँ हज़रत सारा अपनी मुख़तलिफ़ लौंडियों के साथ क़ियाम करती थीं बीबी हाजिरा अकसर शब की तारीकियों में आँसू बहाकर अपने दिल का ग़ुबार निकालतीं। वह सोचतीं कि "क्या कोई यह नहीं जान सकता कि मेरा दिल भी प्यार के लिए तरसता है? क्या मुझे यह हक़ नहीं पहुँचता कि मैं भी प्यार करनेवाले ख़ावंद की बीवी हूँ? ख़ानदान के सरदार की बीवी होने की हैसियत से क्या मुझे यह हक़ नहीं पहुँचता कि लोग मुझे इज़्ज़त की निगाह से देखें? आख़िर ऐसा क्यों नहीं? सिर्फ़ इसलिए कि मैं लौंडी हूँ, लेकिन ऐसी लौंडी जिससे लोग सरदार इब्राहीम के वारिस की तवक़्क़ो करते हैं।" अपनी सोच के धारे के इस मोड़ पर पहुँचकर उन्होंने अपने होंट भींच लिए और अपने आपसे बोलीं, "लेकिन मैं अपने बच्चे को आसानी से हाथ से जाने न दूँगी। आख़िर मुझे भी अपने बच्चे के पास रहने और उसे प्यार करने का हक़ है।"

जल्द ही बीबी हाजिरा को मालूम हुआ कि वह उम्मीद से हैं। पहले-पहल तो वह ज़्यादा फ़िकरमंद हुईं और सोचने लगीं कि "क्या मेरी मालिकन मझसे तवक़्क़ो करेंगी कि मैं चुप-चाप बच्चे को उनकी गोद में डाल दूँ और ख़ुद भूल जाऊँ कि मैं हाजिरा उसकी माँ हूँ?" लेकिन अफ़सोस लौंडी होने की वजह से वह इनसाफ़ के दर पर दस्तक नहीं दे

सकती थीं। उनकी पोज़ीशन बड़ी अजीब थी। वह जायज़ बीवी कहलाए बग़ैर बच्चे की माँ बननेवाली थीं।

ग़रज़ उठते-बैठते, सोते-जागते उन्हें इसी क़िस्म के ख़यालात सताते रहते। एक रात उनकी आँखें फिर से अंधेरे में ख़ला को घूरने लगीं तो उन्होंने अज़म कर लिया कि "मैं बीबी सारा पर ज़ाहिर कर दूँगी कि मैं लकड़ी या पत्थर का बुत नहीं बल्कि गोश्त-पोस्त की, धड़कते दिलवाली औरत हूँ। मैं उन पर वाज़िह कर दूँगी कि बच्चे के मुताल्लिक़ किसी वहम में न रहें। मैं उसे कभी अपने आपसे जुदा न होने दूँगी।" तब उनकी आँखों से आँसुओं का तूफ़ान दुबारा बह निकला। दिल ही दिल में वह पुकार उठीं, "क्या किसी को मेरी परवा नहीं? क्या किसी को मेरी ख़स्ताहाली की ख़बर नहीं? क्या मैं हमेशा तनहा और दुखियारी ही रहूँगी। कहाँ है वह ख़ुदा जिसका मेरे आक़ा अपने घराने के सामने प्रचार किया करते हैं? क्या वह मेरी सुन सकता है? क्या वह यहाँ मौजूद है? लेकिन उसको क्या पड़ी कि एक लौंडी के हाल में दिलचस्पी ले? वरना मुझे इसका इल्म होता और उसकी हुज़ूरी को महसूस करती।"

इंतहाई बेबसी और तलख़ी के आलम में बीबी हाजिरा ने तहैया कर लिया कि "मैं अपने हुक़ूक़ के लिए लड़ूँगी। क्या बाँझपन ख़ुदा की तरफ़ से लानत की दलील नहीं? और देखो अल्लाह ने मुझे कितनी जल्दी बच्चे की बरकत अता कर दी है। क्या मैं अपने आक़ा के लिए ज़्यादा मुफ़ीद और बेहतर बीवी नहीं हूँ? और कौन जाने मेरे हाँ लड़का होने पर मेरा मालिक मुझे असली बीवी बना ले।" अब चूँकि बच्चे के आसार हर आँख को नज़र आ रहे थे इसलिए वह थप थप करके चलते फिरते अपने आक़ा के बच्चे के बारे में बातें करतीं जो उनके दिल के पास तशकील पा रहा था।

चूँकि यह हज़रत इब्राहीम के बच्चे का मामला था जो उनका महबूब लीडर था इसलिए क़बीले के लोग बीबी हाजिरा की बाबत बहुत ख़ुश हुए। उनके साथ उनके रवैये में तबदीली एक क़ुदरती बात थी। वह सब अपने अपने तौर पर उनका ख़याल रखने लगे। बाज़ उन्हें भारी बोझ उठाने से मना करते, बाज़ औरतें उन्हें ज़्यादा मेहनत का काम करने से रोक देतीं। इस तरह क़बीले के अफ़राद की हिमायत और हमदर्दी से बीबी हाजिरा की ख़ूब हौसलाअफ़्ज़ाई होने लगी। हालात ने उन्हें तलख़ मिज़ाज तो बना ही दिया था, अब ग़ुरूर भी उनके सर में समा गया, जिसकी झलक देखकर हज़रत सारा फ़िकरमंद हो गईं।

लेकिन असली फ़ितना तो उस दिन रूनुमा हुआ जिस दिन बीबी हाजिरा ने सारा अपनी मालिकन का हुक्म मानने से दोटूक इनकार कर दिया। फिर एक दिन किसी बात पर बीबी हाजिरा ने उन्हें ख़ूब जली-कटी सुनाईं और बाँझ होने का ताना भी दिया। यह भी सुना दिया कि अब मैं अपनी मालिकन से अफ़ज़ल हूँ। तन-बदन को आग लगाने को तो बाँझपन का ताना ही काफ़ी था, लेकिन जब उन्होंने बीवी की हैसियत से भी अपनी फ़ज़ीलत का दावा किया तो गोया जलती पर तेल डाल दिया। यह सुनकर हज़रत सारा तैश में आ गईं और अच्छा-ख़ासा फ़साद बरपा हो गया।

मुमकिन है कि इसके बाद बीबी हाजिरा को ख़याल आया हो कि मैंने ज़्यादती की है। मगर अब पछताए क्या होत जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत। बीबी सारा ग़ुस्से से लाल-पीली होकर सीधी हज़रत इब्राहीम से मिलने के लिए ख़ैमे से निकलीं। रास्ते में उन्होंने सोचा कि इस ख़ादिमा की यह मजाल कि मेरी बेइज़्ज़ती करे! यह सब मेरे मालिक का किया-धरा है। उन्होंने ही उसको इतनी आज़ादी दे रखी है। वह हज़रत इब्राहीम को देखते ही बोलीं : "यह सब आप ही का क़ुसूर है। मैंने ख़ुद उस लड़की हाजिरा को आपके हवाले किया था और अब जब कि वह उम्मीद से है तो मैं उसकी नज़रों में हक़ीर हो गई हूँ। मैं यह ज़िल्लत बरदाश्त नहीं कर सकती। मुझ पर ज़ुल्म हुआ है और ख़ुदा ही इसका इनसाफ़ करेगा।"

हज़रत इब्राहीम ने इससे पहले कभी अपनी बीवी को इस क़दर तैश में न देखा था। आख़िरी फ़िकरा सुनकर वह हक्का-बक्का रह गए। "यह तो सब कुछ सारा की अपनी तजवीज़ और मनसूबे के मुताबिक़ हुआ है और अब जब कि इसका फ़रक़ नतीजा निकला है तो वह सारा इलज़ाम मुझी पर धरने लगी हैं।" साथ साथ वह यह भी पहचान गए कि इस वक़्त बीवी का दिल ज़ख़मी हिरनी की मानिंद मजरूह है। लिहाज़ा वह अपने ग़ुस्से को पूरी तरह क़ाबू में रखकर बड़े सब्रो-तहम्मुल से बोले, "देखो, यह तुम्हारी लौंडी है और तुम्हारे इख़्तियार में है। जो तुम्हारा जी चाहे उसके साथ करो।"

सीधी-सी बात यह है कि हज़रत इब्राहीम उसी वक़्त बीबी हाजिरा से बात करके अपने ख़ानदान से नाचाक़ी को दूर कर सकते थे। लेकिन इस मरतबा उन्होंने अपनी ज़िम्मेदारी से गुरेज़ किया। न मालूम कि आया उन्हें बीबी हाजिरा को डाँट-डपट करना मुश्किल मालूम हो रहा था या उनका मक़सद बीबी सारा को ख़ुश करना था। बहर हाल उन्होंने अपनी बीवी को इजाज़त दे दी कि वह जिस तरह जी चाहे बीबी हाजिरा के साथ करें।

हज़रत सारा ख़ुश हुईं कि बीबी हाजिरा को मेरे रहमो-करम पर छोड़ दिया गया है। वह इतनी ख़फ़ा थीं कि उन्होंने इस हक़ीक़त को भी नज़र-अंदाज़ कर दिया कि बीबी हाजिरा माँ बननेवाली हैं। तौरेत-शरीफ़ हमें नहीं बताती कि उन्होंने उनसे किस तरह बरताव किया, लेकिन इतना ज़रूर है कि उनके सुलूक में इस क़दर सख़्ती आ गई कि हालात नाक़ाबिले-बरदाश्त हो गए। नतीजे में हाजिरा बीबी दहशतज़दा और बेज़ार होकर डेरे से भाग निकलीं।

वह तन-तनहा क़ाफ़िलों की उस शाहराह पर चल पड़ीं जो मिसर को जाती है। क्या उनके दिल में यह गुमान था कि हज़रत इब्राहीम उनका ताक़्क़ुब करके उन्हें मनवाकर इज़्ज़त के साथ वापस ले जाएँगे? आख़िर वह उनके बच्चे की माँ बननेवाली थीं। लेकिन जल्द ही यह उम्मीद जाती रही। चूँकि वह अपने हमराह खाने-पीने को भी कुछ न लाई थीं इसलिए भूक और प्यास ने उनकी परेशानी और ख़स्ताहाली में और इज़ाफ़ा कर दिया। तपते सहरा में मारे मारे फिरने के बाद वह थक-हारकर एक चश्मे के पास बैठ गईं। उनका जिस्म और रूह दोनों पज़मुरदा थे। चल चलकर उनके पाँव शल हो गए थे और उनका दुखी दिल किसी को अपनी रूदाद सुनाने के लिए बेक़रार था। वह मायूसी के आलम में बैठी सोचने लगीं कि मैं कहाँ जाऊँ? हाय मैं कहाँ जाऊँ?

ऐन उसी लमहे वह एक फ़रिश्ते की आवाज़ को सुनकर चौंक गईं। अलफ़ाज़ साफ़ और सरीह थे, “सारा की लौंडी हाजिरा, तू कहाँ से आ रही है और कहाँ जा रही है?”

बीबी हाजिरा का दिल यह सोचकर बलियों उछलने लगा कि अल्लाह मेरा नाम जानता है! उसे मेरे मामले से दिलचस्पी है। अल्लाह के करम से उन्हें बोलने की जुर्रत हुई। उन्होंने जवाब दिया, “मैं अपनी मालिकन सारा से फ़रार हो रही हूँ।”

बीबी हाजिरा की तमामतर बेबसी और बेकिसी इसी एक फ़िकरे में बंद थी, यानी यह कि मैं नहीं जानती कि कहाँ जा रही हूँ। मैं सिर्फ़ इतना जानती हूँ कि मुझे अपनी बीबी से दूर भाग जाना चाहिए।

तब रब के फ़रिश्ते ने उनसे शफ़क़त से कहा, “अपनी मालिकन के पास वापस चली जा और उसके ताबे रह। मैं तेरी औलाद इतनी बढ़ाऊँगा कि उसे गिना नहीं जा सकेगा। तू उम्मीद से है। एक बेटा पैदा होगा। उसका नाम इसमाईल यानी ‘अल्लाह सुनता है’ रख, क्योंकि रब ने मुसीबत में तेरी आवाज़ सुनी। वह जंगली गधे की मानिंद होगा। उसका हाथ हर एक के ख़िलाफ़ और हर एक का हाथ उसके ख़िलाफ़ होगा। तो भी वह अपने तमाम भाइयों के सामने आबाद रहेगा।”

फ़रिश्ते के चले जाने के बाद बीबी हाजिरा कुछ देर ख़ामोश ज़मीन पर बैठी रहीं। उनका दिल ख़ुशी के तराने गाने लगा। उन्होंने अपनी ज़िंदगी में पहली मरतबा जान लिया कि ख़ुदाए-मेहरबान ने मेरी हर आह सुन ली है। उसने मेरे आँसुओं को देखा है। यह कितनी बड़ी बात है कि अल्लाह न सिर्फ़ मेरे हाल से वाक़िफ़ है बल्कि मेरा हाल पूछनेवाला भी है। अब मैं डेरे में वापस जाकर हर सज़ा भुगतने के लिए तैयार हूँ, क्योंकि मुझे रब की हिमायत हासिल है। इस हक़ीक़त को जानकर उन्हें बेपायाँ मुसर्रत हासिल हुई। अब तो वह अपनी मालिकन के साथ अपने रवैये पर नदामत भी महसूस करने लगीं।

चुनाँचे बीबी हाजिरा दुबारा अपने आक़ा के डेरे में वापस आ गईं। दिन गुज़रते गए। वक़्त पूरा होने पर अल्लाह ने उन्हें बच्चा अता किया जिसका नाम इसमाईल रखा गया। उम्ररसीदा हज़रत इब्राहीम को बहुत ख़ुशी हुई। लेकिन इस ख़ुशी में एक ख़लिश भी मौजूद थी, क्योंकि उन्हें मालूम हो चुका था कि बीबी हाजिरा को अपनी ज़ौजियत में लेकर मैंने अपनी मन-मानी की है। अब मेरे घर में नाचाक़ी पैदा हो गई है और ख़ुदा का कलाम मुझ पर नाज़िल नहीं हो रहा। उनके जिगर में यह ख़लिश काँटे की तरह चुभती रही, क्योंकि बीबी हाजिरा का सारा मामला अल्लाह के निज़ाम के मुताबिक़ न था बल्कि अल्लाह पर उनकी बेएतक़ादी का मुँह-बोलता इज़हार था।

हज़रत बीबी सारा भी ख़ामोशी से अपनी ख़ता का बुरा नतीजा भुगतती रहीं। लेकिन बीबी हाजिरा से नफ़रत की चिंगारी उनके दिल में पहले की तरह सुलगती रही। उसे बुझाना उनके बस का रोग न था। औरतों के डेरे से अमन-चैन ग़ायब हो चुका था।

इस दौरान हज़रत इसमाईल बढ़कर एक शकीलो-जमील लड़का बनते गए। लोग उन्हें हज़रत इब्राहीम का वारिस तसलीम करते थे। गोरख़र का-सा आज़ादाना मिज़ाज जल्द ही उनकी हरकतों से ज़ाहिर होने लगा। ताहम बूढ़े हज़रत इब्राहीम का दिल उनके लिए नरम रहता था। आख़िर वह उनके बेटे थे। लेकिन जब वह उनकी जल्द बाज़ और तुंदख़ू आदात को देखते तो ख़ौफ़ज़दा होकर अल्लाह से इल्तिजा करते कि बेटे को ख़तरे और हादिसे से बचाए रख।

उस वक़्त उनका दिल ख़ुदा की रिफ़ाक़त के लिए बेक़रार रहता था। बार बार वह सोचते कि काश अल्लाह के साथ मेरी पहली-सी रिफ़ाक़त दुबारा बहाल हो जाए। मैं अपने आपको अल्लाह तआला की पाक रिफ़ाक़त से क़तई महरूम पाता हूँ। ऐयाम

कितने ख़ाली ख़ाली हैं। यों मालूम होता है कि अल्लाह हमेशा के लिए मझसे दूर हो गया है।

इस कड़े तजरिबे के ज़रीए अल्लाह ने अपने ख़ादिम पर ज़ाहिर किया कि ज़िंदगी के किसी अहम मोड़ पर ख़ुदा को नज़र-अंदाज़ कर देना कितनी बड़ी बेवुक़ूफी है। वह चाहता था कि हज़रत इब्राहीम हर वक़्त उसकी मरज़ी तलाश करें, कि वह अपनी पूरी ज़िंदगी अल्लाह के लिए वक़्फ़ कर दें। यह एक कड़ा और सख़्त सबक़ था जिसे सीखने में हज़रत इब्राहीम को पूरे पंद्रह साल गुज़ारने पड़े।

9

हज़रत इब्राहीम को अल्लाह की आवाज़ सुने अब तक़रीबन पंद्रह साल हो चुके थे। रूहानी क़ह्तसाली के इस दौर में वह अपनी ज़िंदगी का ख़ूब तजज़िया करने लगे। तब उन्हें महसूस हुआ कि गुज़श्ता सालों में ख़ुदाए-क़ादिर पर मेरा तवक्कुल और ईमान कामिल नहीं बल्कि जुज़वी रहा है। उन्हें यह दौर पै-दर-पै कोताहियों का दौर नज़र आया, ऐसी कोताहियाँ जो उनकी कम एतक़ादी की वजह से सरज़द हुई थीं। उन्हें वह वक़्त याद आया जब मुल्क में अनाज की क़िल्लत का इमकान था । उस वक़्त उन्होंने अल्लाह की रज़ा दरियाफ़्त करने के बजाए अपनी मरज़ी से ही मिसर का रुख़ किया था। जो कुछ वहाँ पेश आया था उसकी याद उन्हें आज भी तकलीफ़ देती थी। इसी तरह उन्होंने बीबी हाजिरा के मामले में भी ख़ुदा की मरज़ी दरियाफ़्त नहीं की थी। बीबी हाजिरा को अपनी ज़ौजियत में लाने से कितने मसायल पैदा हुए थे। अब वह बैठे बड़े दुख से यह सोच रहे थे कि “अगर अल्लाह ने मझसे मुँह मोड़ लिया है तो वह ऐसा करने में हक़ बजानिब है। मैं यक़ीनन इसका हक़दार हूँ।” उनका दिल अपनी सब ख़ताओं पर शर्मसार था। न सिर्फ़ यह बल्कि वह अल्लाह के साथ दुबारा राबिता क़ायम करने के लिए बेहद बेक़रार थे।

आख़िरकार ख़ुदाए-रहीमो-ग़फ़्फ़ार जो हमारी ख़ताओं के मुताबिक़ हमसे सुलूक नहीं करता उन पर नए सिरे से मेहरबान होकर उनसे हमकलाम हुआ। उस वक़्त उनकी उम्र 99 बरस की थी। अल्लाह ने फ़रमाया, “मैं अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ हूँ। मेरे हुज़ूर चलता रह और बेइलज़ाम हो। मैं तेरे साथ अपना अहद बाँधूँगा और तेरी औलाद को बहुत ही ज़्यादा बढ़ा दूँगा।”

हज़रत इब्राहीम प़र्ते-अक़ीदत से सर-निगूँ हो गए तो अल्लाह ने मज़ीद फ़रमाया, "मेरा तेरे साथ अहद है कि तू बहुत क़ौमों का बाप होगा। अब से तू अब्राम यानी 'अज़ीम बाप' नहीं कहलाएगा बल्कि तेरा नाम इब्राहीम यानी 'बहुत क़ौमों का बाप' होगा। क्योंकि मैंने तुझे बहुत क़ौमों का बाप बना दिया है। मैं तुझे बहुत ही ज़्यादा औलाद बख़्श दूँगा, इतनी कि क़ौमें बनेंगी। तुझसे बादशाह भी निकलेंगे।"

पंद्रह साल की तवील मुद्दत के बाद अल्लाह का हमकलाम होना हज़रत इब्राहीम के लिए बेपायाँ मुसर्रत का बाइस बना। पेशानी की त्योरी यकायक खिलती हुई मुसकराहट में बदल गई। उनकी चाल-ढाल में इनक़लाब आ गया और उनका क़दम पुरअज़्म मालूम होने लगा। यह तबदीली इस क़दर नुमायाँ थी कि डेरे के सब रहनेवालों ने इसको एकदम महसूस किया। वह सब अपने क़बीले के सरदार को पुरउम्मीद और पुरमुसर्रत देखकर दिल ही दिल में ख़ुश हुए। उन दिनों में हज़रत इब्राहीम अपने आक़ा की शफ़क़त और रहमत से कितने मसरूर और ममनून रहते थे।

एक दिन हज़रत इब्राहीम अपने ख़ैमे के दरवाज़े पर बैठे थे। दोपहर का वक़्त था। सूरज की ताबनाक शुआएं फ़िज़ा में ताना-बाना बुन रही थीं, और शाह-बलूत के झुंड-तले ख़ैमों की बस्ती आज ग़ैरमामूली तौर पर ख़ामोश और पुरसुकून नज़र आ रही थी। गरमी की वजह से बहुत-से काम करनेवालों की रफ़्तार सुस्त पड़ गई थी जब कि दीगर बहुत-से अपना काम छोड़कर थोड़ी देर के लिए सस्ताने चले गए थे।

लेकिन हज़रत इब्राहीम को सुस्ती या ग़ुनूदगी का कोई एहसास नहीं हो रहा था। वह सोच रहे थे कि "रब कितना मेहरबान है कि उसने 15 साल बाद अपने बंदे को याद फ़रमाया है। उसने मेरी ख़ताओं के लिए मुझे डाँट-डपट नहीं की बल्कि उसका हर फ़िकरा हौसलाअफ़्ज़ा था। हाँ, उसने इसी लिए इतने अरसे तक मझसे कलाम नहीं किया ताकि मैं अपनी रूहानी ज़िंदगी का जायज़ा ले सकूँ। अपने आपको बेहतर तौर पर जान जाऊँ।" अब वह पहचान गए थे कि पहले मैं पूरे तौर पर अल्लाह की तरफ़ मायल न था। गो मैं ख़ुदा पर ईमान रखता था ताहम अपने मुआमलात को तय करने के लिए अपनी समझ-बूझ पर ही तकिया करता था। लेकिन अल्लाह चाहता है कि मैं उस पर पूरा भरोसा रखूँ।

अल्लाह कितना रहीम है! उसने मेरी बीवी को भी फ़रामोश नहीं किया बल्कि फ़रमाया, "अपनी बीवी सारय का नाम भी बदल देना। अब से उसका नाम सारय नहीं बल्कि सारा यानी शहज़ादी होगा। मैं उसे बरकत बख़्शूँगा और तुझे उसकी मारिफ़त बेटा दूँगा।"

हज़रत इब्राहीम अब तक हैरान थे कि ख़ुदा ने मुझे सारा ही के बतन से बेटा बख़्शने का वादा किया है। उसने हमारे लिए कितनी बड़ी मनसूबाबंदी कर रखी है। इसकी याद दिलाने के लिए उसने हमें नए नाम भी दिए हैं। अब से मेरा नाम अब्राम नहीं बल्कि इब्राहीम होगा जिसका मतलब 'बहुत क़ौमों का बाप' है जब कि बीवी का नाम सारय नहीं बल्कि सारा होगा जिसका मतलब 'शहज़ादी' है। शुरू शुरू में तो हम एक दूसरे को भूले से पुराने नामों से पुकारते रहेंगे, लेकिन रफ़्ता रफ़्ता नए नाम भी हमारी ज़बान पर चढ़ जाएँगे। ख़ैर सबसे अहम बात तो यह है कि अल्लाह के साथ हमारा रिश्ता और राबिता दुबारा बहाल हो गया है।

फिर उन्हें हज़रत इसमाईल का ख़याल आया। "काश कि यह लड़का मेरा वारिस बने! मगर यह ख़ुदा की मरज़ी नहीं है। ख़ैर अल्लाह ने वादा किया है कि हज़रत इसमाईल भी बड़े आदमी बनेंगे, कि उनकी नसल से बारह हुक्मरान बरपा होंगे। ताहम जिस बेटे पर ख़ुदा अपनी ख़ास बरकत निछावर करने को है वह हज़रत सारा के बतन से पैदा होनेवाला है। अल्लाह ने उसका नाम तक ख़ुद ही मुक़र्रर किया है। उसका नाम इसहाक़ होगा जिसके मानी हैं, 'वह हंसता है।' ख़ुदा हज़रत इसहाक़ और उन्हीं की पुश्त से अहद बाँधेगा।"

अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम को हुक्म दिया था कि वह इस अहद की याद में अपने घराने के सब मर्दों का ख़तना करवाएँ। तब हज़रत इब्राहीम ने 99 बरस की उम्र में और हज़रत इसमाईल ने 13 बरस की उम्र में अपना अपना ख़तना करवाया। अब से हर लड़के का पैदाइश के बाद आठवें दिन ही ख़तना करवाना था।

यकायक हज़रत इब्राहीम की सोचों का सिलसिला मुंक़ते हो गया। वह अपने ख़यालों में इस क़दर ग़रक़ हो गए थे कि उन्होंने अपनी आँखों के सामने तीन अजनबी मुसाफ़िरों को भी आते न देखा था। यों मालूम हो रहा था कि वह यकदम वहाँ आ मौजूद हुए हों। हज़रत इब्राहीम फ़ौरन ही अपनी जगह से उठे और उनका ख़ैरमक़दम करने को आगे बढ़े। वह बोले, "मेरे आक़ा, अगर मुझ पर आपके करम की नज़र है तो आगे न बढ़ें बल्कि कुछ देर अपने बंदे के घर ठहरें। अगर इजाज़त हो तो मैं कुछ पानी ले आऊँ ताकि आप अपने पाँव धोकर दरख़्त के साय में आराम कर सकें। साथ साथ मैं आपके लिए थोड़ा-बहुत खाना भी ले आऊँ ताकि आप तक़वियत पाकर आगे बढ़ सकें।"

अजनबी मुसाफ़िर दरख़्त के साय-तले बैठ गए जब कि हज़रत इब्राहीम ख़ैमे की तरफ़ दौड़कर सारा के पास आए और कहा, "जल्दी करो! 16 किलो ग्राम बेहतरीन मैदा ले और उसे गूँधकर रोटियाँ बना।"

हज़रत सारा ने हैरत से अपने ख़ावंद पर नज़र डाली। न जाने कितने लोग मेहमानों के साथ खाना खाएँगे। तीन मेहमानों के लिए इतनी रोटियाँ तो हद से ज़्यादा हैं। इतने में हज़रत इब्राहीम अपने गल्ले में पहुँच चुके थे जहाँ उन्होंने एक मोटा-ताज़ा बछड़ा चुन लिया जिसका गोश्त नरम था और उसे नौकर को देकर कहा, "इसे ज़बह करके लज़ीज़ क़ोरमा तैयार करो।" इसके बाद भी वह आराम से न बैठे बल्कि खाने की तैयारी में हर मरहले पर निगरानी करते रहे। जब सब कुछ तैयार हो गया तो उन्होंने दूध, दही, रोटी और गोश्त का सालन ख़ुद अपने हाथ से मेहमानों की ख़िदमत में पेश किया।

मुअज़्ज़ज़ मेहमान जब खाना तनावूल फ़रमा रहे थे तो हज़रत इब्राहीम उनके पास दरख़्त के नीचे उनकी ख़िदमत में खड़े रहे। अब उनकी तेज़ निगाहें अपने मेहमानों का जायज़ा लेने लगीं। उन्होंने जल्द ही जान लिया कि उन में से एक ज़्यादा बा-इख़्तियार और उनका सरदार मालूम होता है। वह सोचने लगे कि वह कौन हो सकता है? न जाने मैं उसकी तरफ़ इस क़दर मायल क्यों हूँ? अचानक उनकी आवाज़ ने उन्हें तख़ैयुल की दुनिया से हक़ीक़त की दुनिया में ला खड़ा किया।

"तेरी बीवी सारा कहाँ है?" उन्होंने सवाल किया।

बुज़ुर्ग इब्राहीम इस सवाल पर हक्का-बक्का रह गए। वह मेरी बीवी का नाम क्योंकर जानते हैं, हालाँकि वह तो उनकी नज़रों से ओझल काम कर रही है? हज़रत इब्राहीम उन्हें हैरानी से देखते हुए बोले, "वह ख़ैमे में है।"

तीनों में से जो सरदार मालूम होता था बुलंद आवाज़ से बोला, "ऐन एक साल के बाद मैं वापस आऊँगा तो तेरी बीवी सारा के बेटा होगा।"

बहुत-सी मुतजस्सिस औरतों की तरह हज़रत सारा मेहमानों की बातें ख़ैमे के परदे के पीछे सुन रही थीं। वह अजनबी मेहमानों की यह बात सुनकर हैरान रह गईं। फिर वह अंदर ही अंदर हंस पड़ीं और अपने आपसे बोलीं, "यह कैसे हो सकता है? क्या जब मैं बुढ़ापे के बाइस घिसे-फटे लिबास की मानिंद हूँ तो जवानी के जोबन का लुत्फ़ उठाऊँ? और मेरा शौहर भी बूढ़ा है।"

लेकिन अगले ही लमहे उनकी हैरत की कोई इंतहा न रही। बोलनेवाले की आवाज़ साफ़ सुनाई दी, "सारा क्यों हंस रही है? वह क्यों कह रही है, 'क्या वाक़ई मेरे हाँ बच्चा

पैदा होगा जब कि मैं इतनी उम्ररसीदा हूँ?' क्या रब के लिए कोई काम नामुमकिन है? एक साल के बाद मुक़र्ररा वक़्त पर मैं वापस आऊँगा तो सारा के बेटा होगा।"

हज़रत सारा ख़ैमे के अंदर हैरत से बुत बनी खड़ी रहीं। यह किस क़िस्म का मेहमान है जो दिल की सोचों को भी जानता है! डर के मारे उनके बदन पर राशा तारी हो गया और वह ख़ैमे के दरवाज़े में से बोलीं, "मैं नहीं हंस रही थी।"

लेकिन मेहमानों के सरदार ने कहा, "नहीं, तू ज़रूर हंस रही थी।"

हज़रत सारा अपनी ज़िंदगी में कभी इस क़दर मुतअस्सिर नहीं हुई थीं। वह सोचने लगीं कि यह कौन हो सकता है जो मेरे ज़ाहिर और बातिन दोनों ही से वाक़िफ़ है। सिर्फ़ ख़ुदा ही ज़ाहिर और बातिन, अयाँ और निहाँ दोनों को जान सकता है। और सिर्फ़ ख़ुदा ही नामुमकिन को मुमकिन बनाकर मोजिज़े कर सकता है। ज़िंदगी में पहली मरतबा हज़रत सारा अपने सारे दिल से अल्लाह पर ईमान रखने लगीं। अब वह जान गईं कि अल्लाह ने मुझे इसलिए इतने अरसे तक बाँझ नहीं छोड़ा कि मुझे दुख पहुँचाए बल्कि इसलिए कि मेरा ईमान पुख़्ता हो जाए। अब उन्हें यक़ीन हो गया कि यह ख़ुदा की पाक रज़ा थी कि मुझे बुढ़ापे में फ़रज़ंद अता करे। शायद अल्लाह ने मुझे इससे पेशतर इसलिए बेटा नहीं बख़्शा कि वह चाहता था कि हज़रत इसहाक़ की माँ पूरे दिल से ख़ुदा पर ईमान रखे। अब तक मैं इस मेयार पर पूरी नहीं उतरी थी।

लेकिन अब तीनों मुसाफ़िर उठ खड़े हुए। हज़रत इब्राहीम उनको रुख़सत करने के लिए ताज़ीमन उनके साथ साथ हो लिए। कुछ क़दम चलने के बाद वह नीचे सदूम की तरफ़ देखने लगे। यकायक वह रुक गए। मेहमानों के सरदार ने हज़रत इब्राहीम से कहा, "मैं इब्राहीम से वह काम क्यों छुपाए रखूँ जो मैं करने के लिए जा रहा हूँ? इसी से तो एक बड़ी और ताक़तवर क़ौम निकलेगी और इसी से मैं दुनिया की तमाम क़ौमों को बरकत दूँगा। उसी को मैंने चुन लिया है ताकि वह अपनी औलाद और अपने बाद के घराने को हुक्म दे कि वह रब की राह पर चलकर रास्त और मुंसिफ़ाना काम करें। क्योंकि अगर वह ऐसा करें तो रब इब्राहीम के साथ अपना वादा पूरा करेगा।"

हज़रत इब्राहीम ख़ौफ़ज़दा हो गए। क्या रब उसे अपना राज़दान बनाना चाहता है? वह बड़े अदब से रब की बात सुनने लगे। रब ने फ़रमाया, "सदूम और अमूरा की बदी के बाइस लोगों की आहें बुलंद हो रही हैं, क्योंकि उनसे बहुत संगीन गुनाह सरज़द हो रहे हैं। मैं उतरकर उनके पास जा रहा हूँ ताकि देखूँ कि यह इलज़ाम वाक़ई सच हैं जो मुझ तक पहुँचे हैं। अगर ऐसा नहीं है तो मैं यह जानना चाहता हूँ।"

दूसरे दो आदमी सदूम की तरफ़ आगे निकले जब कि रब कुछ देर के लिए वहाँ ठहरा रहा। हज़रत इब्राहीम उसके सामने खड़े रहे। उसकी पाक हुज़ूरी में उनका दिल उन शहरों के बदबख़्त बाशिंदों के लिए रहम से भर गया। अचानक उनका दर्द उनका अपना दर्द और उनकी परेशानी उनकी ज़ाती परेशानी बन गई। उन्हें यह महसूस हुआ कि रब ख़ुद मुझे उन बद-नसीबों की सिफ़ारिश करने की जुर्रत अता कर रहा है। लिहाज़ा उन्होंने दिलेरी के साथ रब से कहा, "क्या तू रास्तबाज़ों को भी शरीरों के साथ तबाह कर देगा? हो सकता है कि शहर में 50 रास्तबाज़ हों। क्या तू फिर भी शहर को बरबाद कर देगा और उसे उन 50 के सबब से माफ़ नहीं करेगा? यह कैसे हो सकता है कि तू बेक़ुसूरों को शरीरों के साथ हलाक कर दे? यह तो नामुमकिन है कि तू नेक और शरीर लोगों से एक जैसा सुलूक करे। क्या लाज़िम नहीं कि पूरी दुनिया का मुंसिफ़ इनसाफ़ करे?"

रब ने जवाब दिया, "अगर मुझे शहर में 50 रास्तबाज़ मिल जाएँ तो उनके सबब से तमाम को माफ़ कर दूँगा।"

तब हज़रत इब्राहीम ने फिर बोलने की जुर्रत की और कहा, "मैं माफ़ी चाहता हूँ कि मैंने रब से बात करने की जुर्रत की है अगरचे मैं ख़ाक और राख ही हूँ। लेकिन हो सकता है कि सिर्फ़ 45 रास्तबाज़ उस में हों। क्या तू फिर भी उन पाँच लोगों की कमी के सबब से पूरे शहर को तबाह करेगा?"

रब ने कहा, "अगर मुझे 45 भी मिल जाएँ तो उसे बरबाद नहीं करूँगा।"

हज़रत इब्राहीम ने अपनी बात जारी रखी, "और अगर सिर्फ़ 40 नेक लोग हों तो?"

"मैं उन 40 के सबब से उन्हें छोड़ दूँगा।"

फिर हज़रत इब्राहीम ने कहा, "रब ग़ुस्सा न करे कि मैं एक दफ़ा और बात करूँ। शायद वहाँ सिर्फ़ 30 हों।"

रब ने जवाब दिया, "फिर भी उन्हें छोड़ दूँगा।"

हज़रत इब्राहीम अब तक मुतमइन न थे। "मैं माफ़ी चाहता हूँ कि मैंने रब से बात करने की जुर्रत की है। अगर सिर्फ़ 20 पाए जाएँ?"

रब ने कहा, "मैं 20 के सबब से शहर को बरबाद करने से बाज़ रहूँगा।"

हज़रत इब्राहीम ने एक आख़िरी दफ़ा बात की, "रब ग़ुस्सा न करे अगर मैं एक और बार बात करूँ। शायद उस में सिर्फ़ 10 पाए जाएँ।"

रब ने कहा, "मैं उसे उन 10 लोगों के सबब से भी बरबाद नहीं करूँगा।"

इन बातों के बाद रब चला गया और हज़रत इब्राहीम अपने घर को लौट आए।

10

अहले-सदूम के वहमो-गुमान में भी न था कि कोई अलमिया उनके शहर के ऊपर मनहूस गिद्ध की तरह मंडला रहा है। लिहाज़ा उन में से बहुत-से अपने मामूल के मुताबिक़ आज शाम भी शहर के फाटक पर बैठे मज़े से ख़ुश-गप्पियों में वक़्त गुज़ार रहे थे। शहर का यह फाटक एक चौड़ा और मेहराबदार दरवाज़ा था जिस में बैठने के लिए दोनों तरफ़ निशस्तें बनी हुई थीं। सुबह के वक़्त शहर के बुज़ुर्ग इन्हीं निशस्तों पर बैठकर शहरियों के झगड़े निपटाते और अदलो-इनसाफ़ के तक़ाज़े पूरे करते थे। कारोबारी हज़रात के आपस के मुआहदे भी इसी जगह तय किए जाते थे। लेकिन शाम के वक़्त इस जगह का रंग ही कुछ और होता था। तब यह जगह तफ़रीही गप-शप के लिए इस्तेमाल की जाती थी। जो ताज़ातरीन ख़बरें सुनने के शौक़ीन होते वह सरे-शाम ही यहाँ का रुख़ करते थे। यों फाटक पर अच्छी-ख़ासी रौनक़ होती थी।

अहले-सदूम किस क़िस्म के लोग थे? सबके सब तन-आसान और परले दर्जे के ऐयाश थे। शहर का हर घराना शहवतपरस्ती की बदतरीन क़िस्म की बदकिरदारी में मुलव्वस था, हत्ता कि ग़ैरफ़ितरी जरायम का इरतिकाब भी खुले बंदों होता था। हरामकारी और शहवतपरस्ती इस शहर का तुर्राए-इम्तियाज़ बन चुका था। हज़रत इब्राहीम के भतीजे हज़रत लूत इसी क़िस्म के शहर में मुक़ीम थे।

शाम को हज़रत लूत भी हसबे-मामूल अपनी मख़सूस निशस्त पर मौजूद थे। दिन के वक़्त तो वह इसे बतौरे-मजिस्ट्रेट इस्तेमाल करते जब कि शाम को वह इसी जगह बैठकर सदूमियों की रिफ़ाक़त से लुत्फ़अंदोज़ होते थे। अब वह उनकी टेढ़ी-मेढ़ी बातों और अख़लाक़ से गिरे हुए हंसी-मज़ाक़ के आदी हो चुके थे। बाज़ औक़ात जब बातचीत

में अख़लाक़ी गिरावट हद से ज़्यादा तजावुज़ कर जाती तो वह दबी ज़बान से एहतजाज करने की कोशिश करते। लेकिन वह ख़ूब जानते थे कि पुरज़ोर एहतजाज करने का मतलब अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना होगा। हज़रत लूत चूँकि इस शहर की तन-आसान ज़िंदगी और लोगों में अपने बुलंद मक़ाम को पसंद करते थे इसलिए वह बहुत-से उमूर की तरफ़ से अपनी आँखें और कान बंद कर लेते थे ताकि चैन से गुज़र-बसर होती रहे। वह मसलहत-पसंद और ज़मानासाज़ थे। वह शादीशुदा और बच्चों के बाप भी थे। उन्होंने सदूमियों के दरमियान अपने मक़ाम को मुस्तहकम करने के लिए अपनी दो बेटियों की निसबत दो सदूमी जवानों से ठहरा दी थी। हज़रत लूत रब के अहकाम को जानते तो थे मगर उनकी पैरवी सिर्फ़ उसी हद तक करते जिस हद तक ज़िंदगी में कोई ख़लल न पड़ता हो।

इस वक़्त वह फाटक पर बैठे दूसरे शहरियों के साथ हलकी-फुलकी बातें कर रहे थे। क्या देखते हैं कि दो अजनबी शहर में दाख़िल हो रहे हैं। सदूमियों ने भी उन्हें देखा बल्कि ग़ौर से देखा, मगर किसी ने उन्हें ख़ुशआमदीद कहने की ज़हमत गवारा न की और न किसी ने उन्हें अपने हाँ आने की दावत ही दी। ताहम न जाने क्यों वह उन्हें घूर घूरकर देख रहे थे। किसी वजह से उनकी मौजूदगी अहले-सदूम को ना-गवार थी।

मेहमानों के चेहरों की क़ुदरती आबो-ताब पाक ज़िंदगी की अक्कासी करती थी। हज़रत लूत ने एकदम भाँप लिया कि सदूम जैसे शहर के लोग उन जैसे शरीफ़-उन-नफ़स अफ़राद को अमन से न बैठने देंगे, लिहाज़ा ज़रूर उनका ख़याल रखना चाहिए। हज़रत इब्राहीम ने उन्हें सिखाया था कि अजनबियों की मेहमान-नवाज़ी करना लाज़िम है, और वह यह सबक़ अब तक नहीं भूले थे। वह खड़े हुए और आगे बढ़कर मुअद्दबाना बोले, “साहिबो, अपने बंदे के घर तशरीफ़ लाएँ ताकि अपने पाँव धोकर रात को ठहरें और फिर कल सुबह-सवेरे उठकर अपना सफ़र जारी रखें।”

दर-हक़ीक़त यह दो अफ़राद फ़रिश्ते थे जो इनसान के रूप में हज़रत इब्राहीम से मुलाक़ात के बाद रब से पहले सदूम चले आए थे। पहले तो उन्होंने इनकार किया और बोले, “कोई बात नहीं, हम चौक में रात गुज़ारेंगे।”

दरअसल इस इनकार से वह यह मालूम करना चाहते थे कि हज़रत लूत वाक़ई उनकी महरबानी करना चाहते हैं या यों ही रस्मी तौर पर कह रहे हैं। हज़रत लूत यह सुनकर निहायत घबरा गए और बोले, “जनाब यह शहर सारे मुल्क में बदनाम है। मैं ख़ुद भी

रात के वक़्त घर से बाहर क़दम रखने की जुर्रत नहीं करता और आप अजनबी हैं। मैं आपसे पुरज़ोर दरख़ास्त करता हूँ कि आप बाज़ार में न ठहरें।"

उनके इसरार पर वह उनके घर चले गए। घर की ख़वातीन खाना तैयार करने में मसरूफ़ हो गईं, और जल्द ही उनके सामने पुर-तकल्लुफ़ दस्तरख़ान तैयार हुआ। मेहमान मुश्किल से अभी खाना ख़त्म ही करने पाए थे कि घर के सामने हलचल-सी मच गई। शहर के बहुत-से बूढ़े और जवान मर्द उसका मुहासरा किए खड़े थे। वह ज़ोर ज़ोर से पुकारकर बोले, "वह आदमी कहाँ हैं जो रात के वक़्त तेरे पास आए? उनको बाहर ले आ ताकि हम उनके साथ हरामकारी करें।"

हज़रत लूत बड़ी दिलेरी से निकलकर उनके पास दरवाज़े पर आए, लेकिन बाहर क़दम रखते ही उन्होंने अपने पीछे दरवाज़े की कुंडी चढ़ा दी। हुजूम को मुतमइन करने की कोशिश करते हुए उन्होंने कहा, "मेरे भाइयो, ऐसा मत करो, ऐसी बदकारी न करो। मेहमानों के भी कुछ हुक़ूक़ होते हैं। हमें उन हुक़ूक़ का एहतराम करना चाहिए।"

"रास्ता छोड़ो, तुम हमें बुरा-भला समझानेवाले कौन होते हो!" हुजूम में से एक ने क़दम बढ़ाते हुए सीना तानकर कहा।

उनके बदले हुए तेवर देखकर हज़रत लूत ने जल्दी से कहा, "मेरी सुनो! मेरी दो कुँवारी बेटियाँ हैं। उन्हें मैं तुम्हारे पास बाहर ले आता हूँ। फिर जो जी चाहे उनके साथ करो। लेकिन इन आदमियों को छोड़ दो, क्योंकि वह मेरे मेहमान हैं।"

लेकिन हुजूम अब पूरी तरह मुश्तइल हो चुका था। उन में से एक गरजकर बोला, "देखो, यह शख़्स जब हमारे पास आया था तो अजनबी था, और अब यह हम पर हाकिम बनना चाहता है।"

"अब तेरे साथ उनसे ज़्यादा बुरा सुलूक करेंगे।" एक और ने पुरज़ोर लहजे में एलान किया।

इतना कहकर बाज़ हज़रत लूत पर पल पड़े और बाज़ दरवाज़े की तरफ़ आगे बढ़े ताकि किवाड़ तोड़कर अंदर दाख़िल हों। हज़रत लूत को लगा कि वह न सिर्फ़ मेहमानों को बल्कि अपने आपको भी हुजूम के हाथों से नहीं बचा सकेंगे। लेकिन ऐन उस वक़्त दरवाज़ा जिसे बाहर से बंद किया गया था खुल गया, और मेहमानों ने उन्हें पकड़कर अंदर खींच लिया। फिर उन्होंने दरवाज़े को अंदर से मज़बूती से बंद कर दिया। हज़रत लूत अभी तक अपने हवास दुरुस्त भी न करने पाए थे कि उन्हें एहसास हुआ कि दरवाज़े के सामने कोई नई खलबली मच गई है। लोग आपस में टकरा रहे थे और कह रहे थे

कि दरवाज़ा यकायक कहाँ चला गया। दरअसल मेहमान फ़रिश्तों ने हमलाआवर मर्दों को ख़्वाह बूढ़े ख़्वाह जवान सब ही को अंधा कर दिया था। फिर उन्होंने अपने आपको हज़रत लूत पर ज़ाहिर किया और आमद की वजह बयान करते हुए कहा, "सदूम का शहर तबाह होनेवाला है। तुम अपने अज़ीज़ रिश्तेदारों को लो और हमारे साथ शहर से भाग निकलो।"

यह सुनकर हज़रत लूत अपने दामादों के पास गए और कहा, "जल्दी करो और शहर से बाहर भाग निकलो। रब इस शहर को नेस्तो-नाबूद करनेवाला है।" लेकिन वह उनकी बात मानने पर आमादा न हो सके बल्कि ज्यों के त्यों बैठे उन्हें यों तकने लगे गोया उनसे कह रहे हों कि हम किसी सर-फिरे की बात पर अमल करने के लिए तैयार नहीं। आख़िर जब हज़रत लूत ने देखा कि उनकी बात का उन पर कोई असर नहीं हो रहा तो नाचार उन्होंने अपने घर की राह ली। रास्ते में उनकी निगाह बहुत-सी मानूस जगहों पर पड़ी तो उनसे मनसूब यादें उनके दिमाग़ में उभर आईं। उन्हें इन जगहों से कितनी मुहब्बत थी! अब इन पर नज़र डालते हुए शहर को तर्क करने की नीयत डाँवाँडोल हो गई।

हज़रत लूत किस क़दर जल्द यह भूल बैठे कि कल रात ही सदूमी अख़लाक़ और तहज़ीब की सारी हदें फलाँग गए थे। क्या यह उनका फ़र्ज़ नहीं बनता था कि अपनी बेटियों को ला-मज़हब और बेराहरौ मर्दों की सरज़मीन से दूर ले जाएँ? क्या यह ज़रूरी नहीं था कि वह अपनी बीवी को सदूम की बदचलन औरतों की बुरी सोहबत और बुरे असर से दूर ले जाएँ? क्या इस शहर से वक़्त पर फ़रार होने से उन्हें नए सिरे से ज़िंदगी शुरू करने का सुनहरी मौक़ा नहीं मिल रहा था? इन तमाम बातों के बावुजूद आज वह शहर को छोड़ने पर आमादा नहीं थे। वह तज़बज़ुब और शशो-पंज में उलझ गए। ख़ानदान की ख़वातीन मामले में मज़ीद रोड़े अटकाने लगीं। वह चिकनी-चुपड़ी बातें करके उन्हें मेहमानों की नसीहत पर अमल न करने का मशवरा देने लगीं। कहने लगीं कि यह लोग अजीब कहानियाँ सुना रहे हैं, भला पूरी वादीए-यरदन को जिस में पाँच बड़े बड़े शहर हैं किस तरह तबाह किया जा सकता है। और अगर ऐसा हो भी सकता है तो आख़िर क्यों? मुल्क के दूसरे लोग क्या बहुत नेक-पाक हैं? ग़रज़ हज़रत लूत बड़ी कशमकश में मुब्तला हो गए।

लेकिन फ़रिश्तों ने उन्हें उनके हाल पर न छोड़ा बल्कि उन्हें बार बार शहर से निकलने को कहते रहे। आख़िर जब हज़रत लूत सुबह तक फ़ैसला न कर पाए तो फ़रिश्तों ने उनका और उनकी बीवी और बेटियों का हाथ पकड़कर उन्हें शहर से बाहर ले आए और

उनसे कहा, “अपनी जान बचाकर चला जा। पीछे मुड़कर न देखना। मैदान में कहीं न ठहरना बल्कि पहाड़ों में पनाह लेना, वरना तू हलाक हो जाएगा।”

हज़रत लूत ने जवाब दिया, “नहीं मेरे आक़ा, ऐसा न हो। मैं पहाड़ों में पनाह नहीं ले सकता। वहाँ पहुँचने से पहले यह मुसीबत मुझ पर आन पड़ेगी और मैं हलाक हो जाऊँगा। देख, क़रीब ही एक छोटा क़सबा है। वह इतना नज़दीक है कि मैं उस तरफ़ हिजरत कर सकता हूँ। मुझे वहाँ पनाह लेने दे।”

अब रब ख़ुद अपने दो फ़रिश्तों के साथ आ मिला था। उसने रहम से हज़रत लूत पर निगाह डाली। उसके लिए यह बात किस क़दर मायूसकुन थी कि हज़रत लूत और उनके अहलो-अयाल इस नाज़ुक घड़ी में भी बदस्तूर ख़ुदग़रज़ बने हुए हैं और रब के कहे पर चलने को तैयार नहीं। ताहम रब ने हज़रत लूत को जवाब दिया, “चलो, ठीक है। तेरी यह दरख़ास्त भी मंज़ूर है। मैं यह क़सबा तबाह नहीं करूँगा। लेकिन भागकर वहाँ पनाह ले, क्योंकि जब तक तू वहाँ पहुँच न जाए मैं कुछ नहीं कर सकता।”

हज़रत लूत जब उस शहर में पहुँचे तो सूरज तुलू हो रहा था। अफ़सोस कि उनकी बीवी इस क़सबे तक पहुँचने में कामयाब न हुईं। अपने ख़ानदान के अक़ब में चलते चलते वह मुड़कर पीछे देखने की हमाक़त कर बैठी थीं। रब के हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी करते ही उन्हें इसकी सज़ा मिली थी। वह एकदम नमक के खंबे में तबदील हो गई थीं।

उधर सदूमी अचानक बुड़बुड़ाकर उठ बैठे। “हाय यह क्या हो रहा है? यह कैसा शोर है?” वह एक दूसरे से पूछने लगे।

आसमान का रंग गहरा सुर्ख़ था। साथ साथ गाहे बगाहे गड़गड़ाहट की आवाज़ सुनाई देने लगी। क्या आसमान गरज रहा था? यकलख़्त ज़मीन हिल गई। शायद ज़लज़ला आ रहा है, बाज़ ने सोचा। तब गंधक का धुआँ चारों तरफ़ फैलने लगा। लोगों का दम घुटने लगा। अब सब सख़्त घबरा गए और आव देखा न ताव वहाँ से भागने लगे। अफ़रा-तफ़री और नफ़सानफ़्सी का आलम बरपा हुआ। मर्द अपना साँस रोके अहलो-अयाल को भूलकर बेतहाशा शहर के फाटक की तरफ़ दौड़े। उन्हें सिर्फ़ अपनी जान बचाने की पड़ी थी। औरतें अपने शौहरों को पुकार उठीं और बच्चे अपने माँ-बाप को। लेकिन सबको अपनी जान के लाले पड़े थे। ज़मीन में जा बजा शिगाफ़ पड़ते गए। कई लोग एकदम उन में ज़िंदा दफ़न हो गए। दूसरे जो अभी तक चल-फिर रहे थे, उन्हें जीते-जी जहन्नुम का नज़ारा नज़र आया। भागती हुई औरतें और बच्चे गरम राख की बारिश-तले

दब गए। उधर कोई उम्ररसीदा दादा अपने घराने के जवानों को मदद के लिए पुकारता रहा, लेकिन जवाब में उसे फ़क़त जिगरपाश चीख़ें और देवताओं पर लान-तान के फ़िकरे सुनाई दिए। फिर सबके सब जलते मकानों के नीचे दब गए।

धड़ाधड़ जलती हुई आग की कड़कड़ाहट के साथ जाँ-कनी में लबों से निकली हुई दबी दबी दिलदोज़ आहो-बुका की आवाज़ें गडमड होती गईं। जल्द ही सब नुफ़ूस आग के शोलों की भेंट चढ़ गए, और दरयाए-यरदन के सैलाब ने रही-सही कसर पूरी कर दी। जल्द ही शहर की तबाही पूरी और मुकम्मल हो गई।

यह सारा इलाक़ा दुनिया के लिए जाए-इबरत है। यह इस हक़ीक़त की याद दिलाता है कि अल्लाह को गुनाह से कितनी नफ़रत है।

11

सदूम और अमूरा की हौलनाक तबाही हुए एक साल गुज़र गया। हज़रत इब्राहीम की उम्र पूरे सौ बरस और उनकी बीवी की नव्वे बरस की थी। राहे-हयात का इतना सफ़र तय करने के बाद वह ज़िंदगी से और क्या तवक़्क़ो कर सकते थे! मगर अल्लाह जिसका नाम अजीब और क़ादिर है उन पर ख़ास तौर पर मेहरबान हुआ। उसके वादे के मुताबिक़ हज़रत सारा की गोद हरी हुई। अब हज़रत इब्राहीम और बीबी सारा की ज़िंदगी नए सिरे से जोश और जज़्बे से भर गई। उनको ज़िंदगी में नया मक़सद मिल गया था। दोनों के चेहरों से मुसर्रत फूटी पड़ती रही। अब मौऊदा फ़रज़ंद की आमद पक्की हो गई थी।

सारे डेरे में ख़ुशी की लहर दौड़ गई। सबको महसूस हुआ कि यक़ीनन अल्लाह हमारे सरबराह के साथ है। आख़िर नव्वे बरस की औरत के हाँ बच्चे की पैदाइश किसी के देखने-सुनने में न आई थी। हाँ, औरतें बीबी सारा के लिए फ़िकरमंद हुईं कि वह अपनी मुश्किल घड़ी के वक़्त क्या करेंगी। ताहम इस ख़बर का मजमुई तअस्सुर ख़ुशी ही का था। सारा डेरा वादा किए गए वारिस के इंतज़ार में दिन गिनने लगा।

ख़ुदा ख़ुदा करके वह दिन आ गया जिसकी पेशगोई अल्लाह ने 25 साल पहले सुनाई थी। मियाँ-बीवी की हालत अजीब थी। जिस घड़ी का इंतज़ार वह नौ माह से कर रहे थे वह आ पहुँची। हज़रत इब्राहीम अपनी बीवी की तकलीफ़ को देखकर अपने आपको निहायत बेबस महसूस कर रहे थे। काश वह किसी तौर से मदद कर सकते, उनका दुख बाँट सकते! ख़ैमे से बाहर बैठे वह बेचैनी से तड़पते रहे। बैठे बैठे उन्होंने सोचा कि मैं कितनी मुद्दत से इस दिन का इंतज़ार करता आया हूँ। ख़ुदा के वादे को अब तक 25

साल गुज़र गए हैं। अब अगर मेरी बीवी मर गई तो? लेकिन फिर अल्लाह ने शुकूक के यह बादल दूर करके उन्हें यक़ीन दिलाया कि वह ख़ुद उनकी बीवी का मददगार है।

आख़िरकार फ़िकर और तशवीश की घड़ियाँ ख़त्म हुईं और दिल ख़ुशी और शादमानी से भर गया। बेटे की पैदाइश की ख़बर हज़रत इब्राहीम को पहुँचाई गई तो वह उनका ख़ैरमक़दम करने को बेताब हुए, लेकिन उन्हें कुछ देर और इंतज़ार करना पड़ा।

आनन-फ़ानन डेरे के हर ख़ैमे में यह ख़बर पहुँच गई कि सारा बीबी के लड़का हुआ है। बस फिर क्या होना था। मर्द, औरतें, लड़के-लड़कियाँ हत्ता कि बूढ़े लोग भी अपना काम-काज ज्यों का त्यों छोड़कर सारा बीबी के ख़ैमे की तरफ़ भागे। उनकी ख़ुशी सच्ची और दिली थी। सबकी मुबारकबाद में कितना ख़ुलूस था और बुज़ुर्गों की दुआओं में बच्चे के लिए कितनी अक़ीदत! यों पूरे डेरे में हलचल मच गई और नन्हे बच्चे हज़रत इसहाक़ का हर छोटे-बड़े ने इंतहाई गरमजोशी से ख़ैरमक़दम किया। सिर्फ़ बीबी हाजिरा और उनके बेटे के लिए यह दिन सब्रआज़मा था। उन्हें बदलते हालात का पूरा पूरा एहसास हुआ। नए वारिस ने आते ही हज़रत इसमाईल की जाए-इज़्ज़तो-मरतबत सँभाल ली है। क्या अजब कि हसद की जो चिंगारी दिल में दबी पड़ी थी फिर से सुलगने लगी।

कुछ अरसा निहायत अमन-चैन से गुज़र गया। होते होते हज़रत इसहाक़ का दूध छुड़वाने का वक़्त आ गया। उनकी कमसिन और मासूम ज़िंदगी में यह मरहला भी ख़ूब तय हो गया। हज़रत इब्राहीम ने इस मौक़े पर बड़ी ज़ियाफ़त का एहतमाम किया। मुमकिन है उस वक़्त हज़रत इसहाक़ की उम्र तीन साल की हो। बहुत-से मुअज़्ज़ज़ मेहमान इस तक़रीब की ख़ुशी में शरीक हुए। क्या अजब कि हज़रत इसमाईल के दिल में हसद की आग भड़क उठी।

जब सब हलकी-फुलकी बातें कर रहे थे तो सोलह-सत्रह-साला हज़रत इसमाईल हंसी-मज़ाक़ करने लगे। लेकिन हर बात में कमसिन हज़रत इसहाक़ उनके मज़ाक़ का निशाना बनते गए। बीबी सारा ने यह बात देखी तो दिल ही दिल में जल-भुन गईं। आख़िर उनसे रहा न गया। वह ग़ुस्से से अपने ख़ावंद की तरफ़ देखकर बोलीं, "इस लौंडी हाजिरा और उसके बेटे को निकाल दीजिए। उसका बेटा मेरे बेटे इसहाक़ के साथ वारिस न होगा, मैं यह बात हरगिज़ गवारा नहीं कर सकती।"

यह सुनकर हज़रत इब्राहीम हक्का-बक्का रह गए। बीवी के अलफ़ाज़ ने तक़रीब का सारा मज़ा किरकिरा कर दिया था। देरीना हसद की झलक साफ़ नज़र आ रही थी।

हज़रत इब्राहीम ने सोचा, “सारा इस बात को क्यों नहीं समझती है कि इसमाईल भी मेरा बेटा है? क्या वह नहीं जानती कि वह मुझे किस क़दर गहरा सदमा पहुँचा रही है?”

उस रात वह निहायत परेशानी के आलम में बिस्तर पर जा लेटे। उनकी इस हालत में अल्लाह उनसे रात को हमकलाम हुआ। उसने फ़रमाया, “जो बात सारा ने अपनी लौंडी और उसके बेटे के बारे में कही है वह तुझे बुरी न लगे। सारा की बात मान ले, क्योंकि तेरी नसल इसहाक़ ही से क़ायम रहेगी। लेकिन मैं इसमाईल से भी एक क़ौम बनाऊँगा, क्योंकि वह तेरा बेटा है।”

वह थोड़ी देर के लिए बिस्तर पर लेटे लेटे इस मामले के नशेबो-फ़राज़ पर ग़ौर करते रहे। काश मैं अपनी बीवी से खुलकर बातचीत कर सकूँ! काश वह मेरे एहसासात को समझने की कोशिश करती! लेकिन हक़ीक़ते-हाल कुछ और ही थी। हज़रत सारा बीबी हाजिरा का नाम तक सुनना बरदाश्त न कर सकती थीं। हज़रत इब्राहीम को इस बात का ख़दशा था कि क्या इसमाईल मझसे अलग रहकर सच्चे ख़ुदा के अहकाम की पैरवी करेगा?

हज़रत इब्राहीम जान गए थे कि क्या करना है, कि उनकी अलहदगी बेहतर होगी। मगर ऐसा करना आसान तो न था। साथ साथ उस वक़्त कोई हज़रत इब्राहीम का हमख़याल न था। कोई उनका दुख-दर्द बटानेवाला न था। वह अपने बेटे इसमाईल से हमेशा हमेशा के लिए जुदाई के ख़याल से सख़्त उदास और परेशान थे। वह ख़यालों में बिस्तर पर लेटे लेटे ही हज़रत इसमाईल को अलविदा होते देख रहे थे। उन्हें उनकी हसरत-भरी निगाहें यह कहती मालूम हुईं कि “मुझे आपसे यह तवक़्क़ो न थी।”

यह बड़ा मुश्किल मरहला था, लेकिन देर करना उनकी आदत न थी। सुबह-सवेरे वह डेरे में किसी और के उठने से पहले ही उठ बैठे। वह नहीं चाहते थे कि कोई उन्हें अलविदा कहते हुए देखे। वह बीबी सारा की नज़र से भी अपने जज़बात को ओझल रखना चाहते थे। उन्होंने बड़ी एहतियात से चंद खानेवाली चीज़ें तैयार कीं और उन्हें अच्छी तरह थैले में बंद कर दिया। साथ साथ उन्होंने मशकीज़ा लेकर उसे पानी से लबालब भरा। तब उन्होंने बीबी हाजिरा और हज़रत इसमाईल को जगाकर सूरते-हाल बयान की। उन्हें इसकी विज़ाहत करते हुए मुनासिब अलफ़ाज़ कहने में दिक़्क़त महसूस हो रही थी। अगर अल्लाह उनकी मदद न करता तो वह इस हुक्म की पैरवी करने में शायद कोताही या देर कर देते।

उनको सुबह-सवेरे जगाने की वजह बयान करने के बाद उन्होंने मशकीज़ा लेकर उसे बीबी हाजिरा के शाने पर लटका दिया और बाक़ी सामान उनके हवाले किया। ऐसा करते हुए उन्होंने आह भरी कि "काश यह दोनों जान सकें कि मैं ख़ुद उनके दुख में शरीक हूँ, उनकी परेशानी से परेशान हूँ!" फिर उन्होंने आख़िरी मरतबा अपने बेटे इसमाईल को बोसा दिया और माँ-बेटे दोनों को ख़ुदा हाफ़िज़ कहकर रुख़सत कर दिया। ख़ुद वह खड़े होकर देर तक उन्हें फ़ासिलों में सिमटता देखने लगे। उन्हें ख़याल आया कि "जाने यह माँ-बेटा क्या सोच रहे हैं? उनके दिलों का क्या हाल है? क्या वह बेइनसाफ़ी के दुख-दर्द सह सहकर बेहिस हो गए हैं? या क्या वह राह में चलते चलते सारा के ख़िलाफ़ ज़हर उगल रहे हैं? आह अगर इस तलख़ तजरिबे ने उन्हें सच्चे ख़ुदा से मुनहरिफ़ कर दिया या उस पर शक करने पर मजबूर कर दिया तो फिर क्या होगा?"

उधर माँ-बेटा बतदरीज छोटे से छोटे होते जा रहे थे हत्ता कि आख़िर में सिर्फ़ गर्दो-ग़ुबार का छोटा-सा बादल रह गया। उनका बेटा इसमाईल उनसे जीते-जी हमेशा के लिए जुदा हो चुका था और उनका दिल उसके लिए ख़ून के आँसू रो रहा था।

उतने में बीबी हाजिरा और हज़रत इसमाईल का क्या हाल रहा? वह बेचारे मिसर का रुख़ करना चाहते थे। मगर चलते चलते वह राह से भटककर कई दिनों तक बयाबान में मारे मारे फिरने लगे। अब उनकी कोई मनज़िल न रही। बला की गरमी पड़ रही थी। जहाँ तक नज़र उठती सहरा की रेत ही रेत नज़र आती। गरमी, गर्दो-ग़ुबार और रेत से उनकी जान हलकान हुई जाती थी। फिर भी शुरू के चंद दिन तो ज्यों त्यों गुज़र ही गए। मगर अब उनकी ख़ुराक ख़त्म हो गई और ज़ुल्म पर ज़ुल्म यह कि पानी का मशकीज़ा भी ख़ाली हो गया जब कि सहरा में दूर दूर तक कहीं पानी का नामो-निशान तक नज़र न आया।

अब वह भूक से निढाल, प्यास से बदहाल क़दम मारते चलते गए। प्यास की शिद्दत से उनके हलक़ में काँटे-से पड़ गए और होंटों पर पपड़ियाँ जम गईं। हज़रत इसमाईल में अब चलने की सकत बाक़ी न रही थी। वह डगमगाते क़दमों से माँ के साथ साथ चलने की कोशिश करते रहे, लेकिन रफ़्ता रफ़्ता वह कमज़ोर से कमज़ोरतर होते चले गए। आख़िरकार वह हार मानकर बोले, "अम्मी जान! अब मैं बिलकुल चल नहीं सकता। बस अब हम मर जाएँगे।" यह कहकर वह निढाल होकर वहीं बैठ गए।

बीबी हाजिरा ने अपने आँसू पोंछते हुए आह भरी कि किसी को हमारी परवा नहीं। अब तो अल्लाह को भी हमारे हाल पर रहम नहीं आता। फिर वह इसी तरह के ख़यालों

में ग़रक़ गिरती-पड़ती अपने बेटे को उठाकर एक झाड़ी के साय में ले गईं और ख़ुद तक़रीबन सौ गज़ के फ़ासिले पर जा बैठीं। वह जानती थीं कि उनका बेटा जान ब-लब है। वह अपने बेटे का मरना न देख सकती थीं, इसलिए ज़रा दूर बैठकर इंतहाई बेबसी के आलम में फूट फूटकर रोने लगीं।

यकायक उन्हें ख़याल आया कि हम हक़ीक़त में लमहा भर को तनहा नहीं हैं। अल्लाह हमारे साथ है। वह मेरा और बेटे का निगरान है। वह तो सिर्फ़ इस इंतज़ार में है कि मैं उससे फ़रियाद करूँ और अपनी ज़रूरत को उसके सामने पेश करूँ। ऐन उस वक़्त किसी की आवाज़ सुनाई दी, "हाजिरा, क्या बात है?"

बीबी हाजिरा ने आँसुओं से तर चेहरा आसमान की तरफ़ उठा दिया। किसने बात की? रब के फ़रिश्ते ने आसमान पर से पुकारकर कहा, "मत डर, क्योंकि अल्लाह ने लड़के का जो वहाँ पड़ा है रोना सुन लिया है। उठ, लड़के को उठाकर उसका हाथ थाम ले, क्योंकि मैं उससे एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा।"

अब उनके आँसू ख़ुश्क हो गए और अचानक क़रीब ही एक कुआँ नज़र आया। वह लपककर अपना मशकीज़ा भर लाईं और तेज़ी से अपने बेटे के पास पहुँचीं, उसे पानी पिलाया और वह ताज़ादम हो गया। बेटे को फ़रिश्ते का सारा पैग़ाम सुनाकर उनके दिल ख़ुशी और उम्मीद से कितने भर गए होंगे।

दोनों माँ-बेटा आख़िरकार फ़ारान के बयाबान में रहाइश-पज़ीर हुए। उन्हें यह जगह बहुत अच्छी लगी, क्योंकि हज़रत इसमाईल की आज़ादाना तबीयत बाहर की खुली फ़िज़ा में बहुत ख़ुश रहती थी। यह जगह हज़रत इब्राहीम के डेरे के उस ख़ैमे से कहीं बेहतर थी जहाँ कई लौंडियाँ माँ के साथ रहती थीं। यहाँ वह किसी के मातहत नहीं थे। यहाँ किसी की तीखी नज़रें उनका ताक़्क़ुब नहीं करती थीं और यहाँ के वसीओ-अरीज़ मैदान में वह गोरख़र की-सी आज़ाद-तबा की तसकीन के लिए ख़ूब घूम-फिर सकते थे। कुछ अरसे बाद उन्होंने तीर-अंदाज़ी में ख़ूब महारत हासिल की।

ताहम उन्होंने अपने वालिद के साथ मुकम्मल तौर पर क़ताए-ताल्लुक़ न किया। शायद वह समझ गए थे कि मेरे बाप ने ख़ुशी से नहीं बल्कि हालात की मजबूरी के तहत हमें अपने से अलहदा कर दिया था।

12

अब हज़रत इब्राहीम बड़े आरामो-सुकून से ज़िंदगी गुज़ारने लगे। सबसे बड़ी ख़ुशी यह थी कि उनके नूरे-नज़र हज़रत इसहाक़ एक ताबेफ़रमान बेटे थे। उनके मिज़ाज में बाप की दीनदारी की झलक नज़र आती थी। अब बाप-बेटा दोनों अल्लाह की राह में चलते थे। ख़ुदा हज़रत इब्राहीम को अपनी रिफ़ाक़त से मुस्तक़िल नवाज़ता रहा था। नतीजे में वह उसकी आवाज़ सुनने के आदी हो गए थे।

"इब्राहीम! इब्राहीम!"

रात का वक़्त था। हज़रत इब्राहीम अपने ख़ैमे में आराम की नींद सो रहे थे कि उन्हें अल्लाह की मख़सूस आवाज़ सुनाई दी। चूँकि उनके कान इस आवाज़ को सुनने के लिए तैयार रहते थे इसलिए उन्हें समझ आई कि अल्लाह मुझ पर कोई नया और शानदार मुकाशफ़ा ज़ाहिर करना चाहता है। वह जल्दी से बोल उठे, "जी, मैं हाज़िर हूँ।"

रब ने फ़रमाया, "अपने इक्लौते बेटे इसहाक़ को जिसे तू प्यार करता है साथ लेकर मोरियाह के इलाक़े में चला जा। वहाँ मैं तुझे एक पहाड़ दिखाऊँगा। उस पर अपने बेटे को क़ुरबान कर दे। उसे ज़बह करके क़ुरबानगाह पर जला देना।"

हज़रत इब्राहीम को यों महसूस हुआ जैसे आसमान सर पर आ गिरा हो। वह बुड़बुड़ाकर जाग उठे गोया उन्होंने निहायत ही ख़ौफ़नाक ख़्वाब देखा हो। घबराहट की शिद्दत से उनके पसीने छूट गए। रात की स्याह तारीकी में उनका पहला ख़याल यह था कि यह नामुमकिन है। यह ख़ुदा की फ़ितरत और सीरत के ख़िलाफ़ है। ख़ुदाए-रहीमो-करीम

ऐसा कर ही नहीं सकता। लेकिन फिर उन्हें वह हुक्म लफ़्ज़ बलफ़्ज़ याद आया। इस में शक की कोई गुंजाइश न थी। अल्लाह ने उनसे यही तलब फ़रमाया था।

वह सोचने लगे कि इस मरतबा अल्लाह ने मेरे साथ अपने रवैये को क्यों बदल दिया है? आम तौर पर वह सबसे पहले अपना तआरुफ़ कराता है, फिर कोई हुक्म देता और साथ ही कोई अहद या वादा करता है जिससे मेरी हौसलाअफ़्ज़ाई हो जाए। मगर आज जब मुझे तसल्ली दिलानेवाले अलफ़ाज़ या किसी अहद की अशद्द ज़रूरत है तो ख़ुदा ने मुझे सिर्फ़ हुक्म देकर ही बात ख़त्म कर दी है।

उन्हें इसहाक़ का ख़याल आया तो उनकी आँखों में बेइख़्तियार आँसू उमड आए। "अल्लाह को मालूम है कि मैं अपने इस बेटे को किस क़दर अज़ीज़ रखता हूँ।" यकायक उनके जिस्म में कपकपी की लहर दौड़ गई। "क्या अल्लाह दूसरे देवताओं की तरह ज़ालिम है? वह मुझे अपने ही लख़्ते-जिगर को मौत के घाट उतारने को किस तरह कह सकता है? क्या आस-पास के बुतपरस्त लोग यही नहीं करते? फिर मुझ में और उन में क्या फ़रक़ रहेगा?"

रफ़्ता रफ़्ता बुज़ुर्ग इब्राहीम पर यह ज़ाहिर हुआ कि यह एक इम्तिहान है।"क्या अल्लाह मालूम करना चाहता है कि मैं ज़िंदा ख़ुदा को अपने बेटे से ज़्यादा प्यार करता हूँ? क्या वह मेरे ईमान की आज़माइश कर रहा है? आख़िर इसहाक़ के मरने के बाद जिस नसल का ख़ुदा ने वादा किया है ख़त्म हो जाएगी।" मामले की सारी ऊँच-नीच पर ग़ौर करके हज़रत इब्राहीम को पूरा यक़ीन हो गया कि अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ है और कि वह इसहाक़ को ख़ाक में से उठा खड़ा कर सकता है। तो भी जब वह हुक्म की तामील के लिए अगले दिन सुबह-सवेरे उठे तो उनका दिल ख़ून के आँसू रो रहा था। यह उनकी ज़िंदगी की सबसे कड़ी आज़माइश थी। ताहम उन्होंने अल्लाह का हुक्म बजा लाने में एक दिन भी ताख़ीर न की।

इससे पहले कि बीबी सारा उठतीं उन्होंने अपने बेटे और दो ख़ादिमों को जगाया और क़ुरबानी के लिए लकड़ियाँ चुनकर गधे पर लाद दीं। आग लगाने के लिए चक़माक़ और बड़ी छुरी भी गधे पर लदे सामान में रख ली गई। लेकिन लग रहा था कि इस बार वह क़ुरबानी का लेला रास्ते में ख़रीदेंगे। फिर बाप-बेटा गधे को लेकर दोनों ख़ादिमों के साथ उस जगह की तरफ़ रवाना हो गए जो अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम को बताई थी। क़ुरबानी गुज़रानने के लिए घर से निकलना कोई नई बात न थी, लिहाज़ा किसी ने उन पर ध्यान न दिया।

हज़रत इसहाक़ अपने वालिद के साथ इधर-उधर की हलकी-फुलकी बातें करते गए। वह अपने वालिद के साथ सफ़र से ख़ूब लुत्फ़अंदोज़ हो रहे थे। सुबह के सुहाने वक़्त में गिर्दो-पेश के बदलते मंज़र उनके मासूम दिल को लुभा रहे थे। उन्हें ख़याल तक न आया कि बुज़ुर्गवार वालिद किस कशमकश और तज़बज़ुब से दोचार हैं। यह शशो-पंज वालिद के दिमाग़ में सफ़र के साथ साथ तीन दिन तक जारी रही। जो रातें उन्हें रास्ते में गुज़ारनी पड़ीं वह हज़रत इब्राहीम पर क़ियामत जैसी भारी थीं। वह पल भर को सो न सके। सोच सोचकर उनका दिमाग़ चकरा जाता।

कभी वह यह सोचते कि क्या ख़ुदा ने यह मोहलत इसी लिए दी हो कि मैं उसके हुक्म की तामील जल्दबाज़ी से नहीं बल्कि ठंडे दिल से सोच-समझकर करूँ? चलते चलते वह तीसरे दिन उस पहाड़ पर पहुँचे जिसकी अल्लाह ने निशानदिही की थी। अब सबसे मुश्किल मरहला शुरू होने को था।

सब रुक गए तो हज़रत इब्राहीम ने ख़ादिमों से कहा, "यहाँ गधे के पास ठहरो। मैं लड़के के साथ वहाँ जाकर परस्तिश करूँगा। फिर हम तुम्हारे पास वापस आ जाएँगे।"

हज़रत इब्राहीम ने लकड़ियाँ लेकर हज़रत इसहाक़ के कंधे पर रखीं और काँपते हाथों से छुरी और आग जलाने के लिए चक़माक़ का पत्थर उठा लिया। छुरी को हाथ में लेते वक़्त उन्हें ख़याल आया कि अल्लाह मेरे अज़ीज़ बेटे को मुरदा नहीं रहने देगा, वह उसे ज़रूर ज़िंदा कर देगा। वह उसे सहीह-सलामत कर देगा। लेकिन अपने अज़ीज़ इक्लौते बेटे को अपने हाथ से अज़ियत देने का ख़याल निहायत जानलेवा था।

काश हज़रत इब्राहीम यह जानते कि जिस तलख़ जान-कनी का तजरिबा वह कर रहे थे ऐन वही तजरिबा ख़ुद अल्लाह बाद में गवारा करेगा। ख़ुदा का दिल इसी तरह ज़ख़मी होगा जब उनके अपने इक्लौते फ़रज़ंद अल-मसीह इनसान के गुनाहों की सज़ा बरदाश्त करके सलीबी मौत गवारा करेंगे। सदियों बाद हज़रत ईसा उसी इलाक़े में मसलूब होंगे जहाँ हज़रत इब्राहीम और उनके बेटे अब निहायत ख़ामोशी से पहाड़ की चढ़ाई पर चढ़े चले जा रहे थे।

अचानक लड़के की बारीक-सी आवाज़ ख़ामोशी में गूँज उठी, "अब्बू!"

बाप ने कहा, "जी बेटा।"

"अब्बू, आग और लकड़ियाँ तो हमारे पास हैं, लेकिन क़ुरबानी के लिए भेड़ या बकरी कहाँ है?"

इस सवाल ने सिर्फ़ फ़िज़ा की ख़ामोशी ही नहीं बल्कि हज़रत इब्राहीम के दिल को भी चीरकर रख दिया। उनका गला ख़ुश्क हो गया और आवाज़ साथ न दे सकी। लेकिन उन्होंने दिलेराना जवाब दिया, "अल्लाह ख़ुद क़ुरबानी के लिए जानवर मुहैया करेगा, बेटा।"

अब वह बड़े इनकिसार के साथ दुआ करने लगे। मुमकिन है कि इस दौरान हज़रत इसहाक़ पर राज़ खुल गया हो। लेकिन वह तनदुरुस्तो-तवाना होने के बावुजूद वहाँ से फ़रार न हुए हालाँकि ऐसा करने के लिए उनके पास काफ़ी वक़्त था। लेकिन नहीं, बाप-बेटे की गहरी रिफ़ाक़त ने आपस के एतमाद को चटान की तरह मज़बूत कर दिया था। उन में यकदिली और हमआहंगी थी। वह बाप की बेहद परेशानी को भाँप रहे थे। उन्होंने देखा कि उनके वालिद बार बार अपने ख़ुश्क होंटों पर ज़बान फेर रहे हैं। वह कुछ कहना चाहते हैं पर कह नहीं पाते जैसे कहने को सहीह अलफ़ाज़ न मिल रहे हों। बेटे पर वाज़िह हो गया कि वालिद के तन-बदन पर जो राशा तारी हो गया है वह महज़ थकान नहीं बल्कि हैजान है। वह उनको तसल्ली देने को चुप-चाप उनके और क़रीब जा खड़े हुए। माहौल कुछ पुरअसरार-सा हो चला था। हर तरफ़ ख़ामोशी थी। अब बाप की तरह बेटे के क़दम भी बोझल-से हो चले। उन्हें आनेवाले लमहात से किसी क़दर ख़ौफ़ महसूस होने लगा। और यह बात क़ुदरती थी क्योंकि उनके वालिद ख़ुद इंतहाई परेशान नज़र आ रहे थे।

आख़िरकार वह पहाड़ की चोटी पर पहुँच गए। हज़रत इब्राहीम ने रुककर कहा, "यही वह जगह है।" हज़रत इसहाक़ ने लकड़ियाँ नीचे रख दीं, और वालिद ने छुरी और चक़माक़ ज़मीन पर एक तरफ़ रख दिए। दोनों ज़रा दम लेने को बैठ गए। लेकिन यह दम लेने का वक़्त हज़रत इब्राहीम पर किस क़दर भारी था! यह सिर्फ़ वह ख़ुद या उनका ख़ुदा जानता था। किसी दूसरे के लिए इसको बयान करना या उनके जज़बात की तरजुमानी करना नामुमकिन है।

थोड़ी देर बाद दोनों उठ खड़े हुए। हज़रत इब्राहीम पत्थरों का चबूतरा बनाने लगे। हज़रत इसहाक़ मुअद्दब खड़े अपने वालिद को पत्थरों पर पत्थर तरतीब से रखते देखते रहे। जब क़ुरबानगाह तैयार हो गई तो उस पर लकड़ियाँ चुनने का मरहला आया। उनकी नक़लो-हरकत यहाँ तक पहुँचते बहुत सुस्त हो गई। बिलआख़िर यह मरहला भी तय हो गया।

फिर वह लमहा आया जब बेटे को लकड़ियों के ऊपर लिटाना था। हम यह नहीं जानते कि हज़रत इब्राहीम ने किन अलफ़ाज़ में बेटे पर ज़ाहिर किया कि तू ही वह लेला है जिसे मुझे अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ क़ुरबान करना है। लेकिन इतना हम जानते हैं कि जब क़ुरबानगाह पर क़ुरबानी रखने का वक़्त आया तो बेटा आमादा और मुस्तैद थे। वह इतना जानते थे कि वालिद मुझे जी-जान से प्यार करते हैं और मुझ पर जान छिड़कते हैं। अगर आज वह मुझ पर छुरी चलाएँगे तो उनके पेशे-नज़र कोई इलाही मक़सद होगा। आह! जब बाप-बेटा आख़िरी बार बग़लगीर हुए होंगे तो वह मंज़र कितना जाँगुदाज़ होगा और हज़रत इब्राहीम पर क्या गुज़री होगी। यक़ीनन उन्हें उस वक़्त इसहाक़ के बचपन के हसीन मंज़र याद आ रहे होंगे। वालिद को पहचानकर वह पहली खिलती हुई मुसकराहट या लड़खड़ाती टाँगों से उठाए हुए उनके पहले दो चार क़दम। ख़ैमे में हश्शाश-बश्शाश बच्चे के खिलखिलाते, खनखनाते क़हक़हे। और आज सबसे ज़्यादा तकलीफ़दिह बात उनकी पुरएतमाद मुहब्बत जिसकी वजह से वह बग़ैर मुज़ाहमत किए मज़बह पर लेट गए।

अब बाप ने अपने बेटे को रस्सियों से बाँध दिया ताकि क़ुरबानी की सारी रुसूम पूरी तरह अदा की जाएँ। छुरी हाथ में लेने से पहले उन्होंने बेटे को क्या कहा होगा? बाप ने बेटे को यक़ीन दिलाया होगा कि ख़ुदाए-क़ादिर तुझे दुबारा ज़िंदा करने की क़ुदरत रखता है।

किस क़दर अज़ीम थे यह दोनों बाप-बेटे! यह कहना मुश्किल है कि दोनों में से ज़्यादा क़ाबिले-तहसीन कौन हैं। बाप जिन्होंने हुक्मे-ख़ुदा की पाबंदी और पैरवी में छुरा हाथ में पकड़ लिया कि अपने जिगर-गोशे को मौत के घाट उतार दें या बेटा जिन्होंने बाप की रज़ा के सामने बेचूनो-चिरा सरे-तसलीम ख़म कर दिया। ख़ैर अब उनके ईमान की आज़माइश आख़िरी मरहले पर थी। हज़रत इब्राहीम ने जी कड़ा करके छुरी को हाथ में लिया और उसे मज़बूती से वार करने के लिए थामा।

वह पूरे दिल से नीयत कर चुके थे। छुरी ऊपर उठ चुकी थी, मगर ऐन उस वक़्त आसमान से अल्लाह के फ़रिश्ते की आवाज़ आई, “इब्राहीम! इब्राहीम!”

“जी, मैं हाज़िर हूँ” उन्होंने कहा।

“अपने बेटे पर हाथ न चला, न उसके साथ कुछ कर। अब मैंने जान लिया है कि तू अल्लाह का ख़ौफ़ रखता है, क्योंकि तू अपने इक्लौते बेटे को भी मुझे देने के लिए तैयार है।”

उसी वक़्त झाड़ी में पत्तों की खड़खड़ाहट-सी हुई और हज़रत इब्राहीम ने देखा कि एक मेंढा वहाँ खड़ा है जिसके सींग झाड़ी में फंसे हुए हैं। उन्होंने उसे लपककर पकड़ लिया और अपने बेटे की जगह जकड़कर क़ुरबान कर दिया। तब उन्होंने उस मक़ाम का नाम "यहोवाह यरी" रखा यानी "ख़ुदा मुहैया करता है।"

अब बाप-बेटा शुक्रगुज़ारी और अक़ीदत से अल्लाह के हुज़ूर सिजदे में गिर गए। उनके ऐन सामने मेंढा आहिस्ता आहिस्ता आग में जलकर भस्म हो रहा था जब कि हज़रत इसहाक़ का बाल तक बीका न हुआ था। वह ज़िंदा-सलामत थे।

अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम को इस तलख़ जाम का सिर्फ़ आख़िरी क़तरा पीने से बाज़ रखा। लेकिन याद रहे कि यही वह प्याला था जो ख़ुदा ने ख़ुद आख़िरी क़तरे तक पी लिया, यानी सदियों बाद जब उसने अपने फ़रज़ंद हज़रत ईसा को सलीबी मौत गवारा करने दी। उसने उनके साथ हर मरहले पर दुख सहा, मसलन जब हज़रत ईसा के मुँह पर थूका गया और उन्हें ऐसे सख़्त कोड़े लगाए गए कि उनका बदन लहू-लुहान हो गया। अल्लाह ने काफ़िरों को उनके सर पर काँटों का ताज गाड़ने से बाज़ न रखा। आख़िर में उसने अपने इक्लौते को सलीब पर कीलों से जड़े हुए देखा। बेहिस अवाम उन्हें जान-कनी में दुख उठाते वक़्त ठट्ठों में उड़ा रहे थे, गोया दोज़ख़ और तारीकी की सारी क़ुव्वतें आज़ाद कर दी गई हों। हज़रत इब्राहीम और हज़रत इसहाक़ की तरह अल्लाह और ईसा अल-मसीह के लिए यह वक़्त कितना कड़ा था। ख़ुदा ने दुनिया के गुनाहों का बोझ उन पर लाद दिया। सबकी नफ़रतें, कुदूरतें, क़तल, हसद, नापाक ख़्वाहिशात, फ़रेबकारियाँ, ग़ैज़ो-ग़ज़ब और ना-मेहरबानियाँ, सबकी सब उन्हीं पर रख दी गईं। हाँ उन्हीं पर जो ख़ुद गुनाह से नाआशना थे। उस वक़्त अल्लाह और अल-मसीह दोनों ही को इंतहाई अज़ियत पहुँची। हज़रत ईसा के लिए यह लमहा निहायत संगीन था। इनसान के गुनाहों के बोझ के बाइस अल्लाह और उन में जुदाई की दीवार हाइल हो गई जो इससे पहले कभी न हुई थी, यहाँ तक कि वह चिल्ला उठे, "ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ मेरे ख़ुदा, तूने मुझे क्यों तर्क कर दिया है?"

लेकिन यह हक़ीक़त है कि उन्होंने यह तमाम अज़ियत और जान-कनी मेरे और आपके लिए सही। उस बेऐब लेले ने सलीब पर हमारे गुनाहों का फ़िद्या दिया ताकि हम गुनाह की सज़ा से बरी क़रार दिए जाएँ। नजात पाने के लिए हमें सिर्फ़ यह करना है कि दिल की गहराइयों से उन पर ईमान लाएँ जिन्होंने हमारी ख़ातिर अपनी जान दे दी ताकि हमें अल्लाह के फ़रज़ंद होने का शरफ़ हासिल हो।

हज़रत इब्राहीम और हज़रत इसहाक़ को यह दिन हमेशा हमेशा याद रहा। इसे वह कभी भूल नहीं सकते थे। अल्लाह के फ़रिश्ते ने भी इसकी अहमियत पर ज़ोर दिया। उसने दुबारा आसमान से पुकारकर हज़रत इब्राहीम से कहा, "रब का फ़रमान है, मेरी ज़ात की क़सम, चूँकि तूने यह किया और अपने इक्लौते बेटे को मुझे पेश करने के लिए तैयार था इसलिए मैं तुझे बरकत दूँगा और तेरी औलाद को आसमान के सितारों और साहिल की रेत की तरह बेशुमार होने दूँगा।...तेरी औलाद से दुनिया की तमाम क़ौमें बरकत पाएँगी।"

13

उस अज़ीम इम्तिहान के बाद हज़रत इब्राहीम ने चंद साल निहायत आराम और इतमीनान से गुज़ारे। आरामो-आसाइस के यह साल उनकी रूहानी ज़िंदगी में किसी लिहाज़ से भी रुकावट साबित न हुए। उन्हें इन ऐयाम में हमा-वक़्त ख़ुदाए-क़ादिर की मुस्तक़िल हुज़ूरी का भरपूर एहसास रहा। यों अल्लाह के साथ उनकी मुहब्बत और अक़ीदत तरक़्क़ी करती और गहरी होती चली गई। इसी तरह ज़िंदगी के शबो-रोज़ गुज़रते गए।

अब हज़रत इब्राहीम की बीवी हज़रत सारा रोज़ बरोज़ कमज़ोर होती जा रही थीं। उनकी उम्र 127 बरस हो चुकी थी। एक दिन हज़रत इब्राहीम को जल्दी से हज़रत सारा के ख़ैमे में बुलाया गया। अफ़सोस जब वह उनके बिस्तर के पास पहुँचे तो वह वफ़ात पा चुकी थीं।

उन पर निगाह डालते हुए हज़रत इब्राहीम के दिमाग़ में पुरानी यादें उभर आईं। उन्हें वह नौजवान और ख़ूबसूरत औरत याद आई जिससे उनकी शादी हुई थी। यह हसीनो-जमील बीवी ज़िंदगी भर उनकी किस क़दर फ़रमाँबरदार और वफ़ादार रही थीं। जहाँ कहीं वह गए वहाँ उनका साथ देने पर आमादा और रज़ामंद रहीं हालाँकि ऐसा करना अकसर उनके लिए बहुत मुश्किल और तकलीफ़दिह होता था। उनकी मुहब्बत की याद से उनकी आँखों से दुबारा आँसू रवाँ हो गए।

फिर उन्हें उनके बाँझपन का ज़माना याद आया। आह! सारा के लिए यह दौर कितना ग़मनाक और सब्रआज़मा था। वह इस दौर में कितनी बदल-सी गई थीं। इसी वजह से वह हाजिरा से इतना हसद करने लगी थीं। उनसे कितनी सख़्ती करने लगी थीं। लेकिन यह सारा उस सारा से कितनी मुख़तलिफ़ थी जो बाद में इसहाक़ की माँ बनी। उन्होंने

कितनी मुहब्बत और शफ़क़त से अपने बेटे की परवरिश की थी। इस ख़याल के आते ही हज़रत इब्राहीम का दिल भर आया। आह! यह मुअज़्ज़ज़ ख़ातून जो तक़रीबन 80 बरस अपने शौहर की रफ़ीक़ा और हमदम रही थीं उनसे जुदा हो चुकी थीं। यही वह रफ़ीक़ा थीं जिनसे उनकी बचपन की यादें वाबस्ता थीं। वह ऊर शहर में क़ियाम के वाक़ियात की हमराज़, वह हारान शहर के रिश्तेदारों से वाक़िफ़ हत्ता कि उनके भाई हारान को भी जानती थीं। फ़क़त एक शख़्सियत की वफ़ात पर हज़रत इब्राहीम के कई रिश्ते, कई राबिते चकनाचूर हो गए थे। आह सारा!

ताहम अपनी बीवी के लिए हज़रत इब्राहीम के मातम में मायूसी का उनसुर नहीं था। वह मुतमइन थे कि वह सच्चे ख़ुदा पर ईमान रखनेवाली रही थीं। वह उनकी रेहलत पर ग़मगीन तो थे, मगर वह जानते थे कि इस मौत के बाद एक और ज़िंदगी है। मेरी बीवी अब उसी ख़ुदा की हुज़ूरी में है जिस पर वह ईमान रखती थी। हज़रत इब्राहीम को पूरा यक़ीन था कि एक दिन हम दोनों फिर मिलेंगे ताकि हमेशा अल्लाह की हुज़ूरी में रहें। ख़ुद वह उस दिन के बेताबी से मुंतज़िर थे। कुछ देर मातम करने के बाद वह उठे और हबरून शहर के बुज़ुर्गों से बातचीत करने के लिए बाहर आए।

शहर के फाटक पर चंद बुज़ुर्ग मौजूद थे जो बड़े अदब से उनसे मिले। हज़रत इब्राहीम ने कहा, “मैं आपके दरमियान परदेसी और ग़ैरशहरी की हैसियत से रहता हूँ। मुझे क़ब्र के लिए ज़मीन बेचें ताकि अपनी बीवी को अपने घर से ले जाकर दफ़न कर सकूँ।”

उन लोगों में से एक ने कहा, “हमारे आक़ा, हमारी बात सुनें! आप हमारे दरमियान अल्लाह के रईस हैं। अपनी बीवी को हमारी बेहतरीन क़ब्र में दफ़न करें। हम में से कोई नहीं जो आपसे अपनी क़ब्र का इनकार करेगा।”

तब हज़रत इब्राहीम ताज़ीम में झुककर बोले, “अगर आप इसके लिए तैयार हैं कि मैं अपनी बीवी को अपने घर से ले जाकर दफ़न करूँ तो सुहर के बेटे इफ़रोन से मेरी सिफ़ारिश करें कि वह मुझे मकफ़ीला का ग़ार बेच दे। वह उसका है और उसके खेत के किनारे पर है। मैं उसकी पूरी क़ीमत देने के लिए तैयार हूँ ताकि आपके दरमियान रहते हुए मेरे पास क़ब्र भी हो।”

इफ़रोन उस वक़्त दूसरों के साथ वहाँ मौजूद था। उसने अदब से जवाब दिया, “नहीं, मेरे आक़ा! मेरी बात सुनें। मैं आपको यह खेत और उस में मौजूद ग़ार दे देता हूँ। सब जो हाज़िर हैं मेरे गवाह हैं, मैं यह आपको देता हूँ। अपनी बीवी को वहाँ दफ़न कर दें।”

हाज़िरीन जानते थे कि यह पेशकश महज़ रस्मी है। इसका असल मतलब यह है कि इफ़रोन ग़ार और खेत को उस अजनबी सरदार इब्राहीम के हाथों फ़रोख़्त करने पर आमादा है। हज़रत इब्राहीम फिर से हबरून के बुज़ुर्गों के सामने झुककर आदाब बजा लाए और इफ़रोन से कहा, "मेहरबानी करके मेरी बात पर ग़ौर करें। मैं खेत की पूरी क़ीमत अदा करूँगा। उसे क़बूल करें ताकि वहाँ अपनी बीवी को दफ़न कर सकूँ।"

इफ़रोन ने जवाब दिया, "मेरे आक़ा, सुनें। इस ज़मीन की क़ीमत सिर्फ़ 400 चाँदी के सिक्के है। आपके और मेरे दरमियान यह क्या है? अपनी बीवी को दफ़न कर दें।"

सब लोग इतनी बड़ी रक़म का ज़िक्र सुनकर दम बख़ुद रह गए। हज़रत इब्राहीम ख़ुद ख़ूब जानते थे कि इफ़रोन बहुत ज़्यादा क़ीमत तलब कर रहा है। लेकिन बहसो-तकरार करना उनके मिज़ाज और वक़ार के ख़िलाफ़ था। नीज़ वह उन लोगों के हुक़ूक़ का एहतराम करते, उनके क़वानीन पर चलते थे और उनके साथ अदब और अख़लाक़ से पेश आते थे। गो अल्लाह ने उनसे वादा किया था कि यह सारा मुल्क एक दिन तेरी मिलकियत होगा तो भी उन्होंने चाँदी के 400 सिक्के अदा करके इफ़रोन का खेत ख़रीद लिया। इस तरह ग़ार, खेत और उसके सारे दरख़्त उनकी मिलकियत बन गए। तब जाकर उन्होंने हज़रत सारा के कफ़न-दफ़न का इंतज़ाम किया। यों ममरे के नज़दीक मकफ़ीला के खेत में उनकी रफ़ीक़ाए-हयात की ज़िंदगी का सफ़र तमाम हुआ। जब उन्हें इस आरामगाह में रखा गया तो बहुत-से लोगों की आँखों से आँसू रवाँ हो गए। ताहम हज़रत इब्राहीम को यह तसल्ली थी कि उन्होंने अपनी बीवी के साथ अच्छे दिन गुज़ारे थे। गो उनका चेहरा भी बाक़ी सबकी तरह आँसुओं से तर था तो भी वह पुरइतमीनान थे। उन्हें यक़ीन था कि जो क़ादिर और अज़ीम ख़ुदा ज़िंदगी भर मेरी राहनुमाई करता आया है और मुझे यहाँ तक ले आया है वह उस अनदेखे जहान में भी बीबी सारा के साथ होगा।

ख़ुदाए-रहीमो-करीम के फ़ज़ल से हज़रत इब्राहीम अपनी अहलिया की वफ़ात के बाद अड़तालीस साल तक ज़िंदा रहे। इतने में उन्होंने अपने बेटे हज़रत इसहाक़ की शादी अपने ख़ानदान की एक ख़ुश-शक्ल लड़की से रचाई और उन्हें हंसी-ख़ुशी ज़िंदगी बसर करते देखा। लेकिन फिर रफ़्ता रफ़्ता इस दुनिया और उसके धंधों से उनकी दिलचस्पी कम से कमतर होती गई। उनका जिस्म कमज़ोर से कमज़ोरतर होता गया, और उनके दिल में इस ख़ैमे की ज़िंदगी को छोड़कर आसमानी शहर में जाने की ज़बरदस्त ख़्वाहिश सर उठाने लगी। ज़िंदगी की शाहराह के यह मुसाफ़िर जिन्होंने अल्लाह के इशारे पर थके-

माँदे क़दमों से तवील मसाफ़त तय की थी अब दूसरे जहान के लिए रख़्ते-सफ़र बाँधने को तैयार थे। अल-ग़रज़ वह 175 साल की लंबी उम्र पाकर निहायत इतमीनान से अपने ख़ालिक़े-हक़ीक़ी से जा मिले।

उनके बेटे हज़रत इसहाक़ और हज़रत इसमाईल अपने अज़ीम वालिद के मुश्तरका ग़म में एक दूसरे के शरीक थे। वह दोनों जनाज़े और आख़िरी रुसूमात के वक़्त वहाँ हाज़िर हुए। उन्होंने मिलकर अपने वालिद और क़बीले के बुज़ुर्ग की मैयित को उठाकर उनकी वफ़ादार बीवी सारा की क़ब्र के पास दफ़न किया। इस तरह उन्होंने और क़बीले के बाक़ी सब अफ़राद ने अपने सरदार को अलविदा कहा जो हर हाल में, हर क़ीमत पर अल्लाह के हुक्म को मानते रहे थे। अब वह बिलआख़िर ख़ैमों की ना-पायदार जाए-रिहाइश तर्क करके मुस्तहकम बुनियादोंवाले आसमानी शहर के मकीन बन गए थे। थके-माँदे मुसाफ़िर अपने हक़ीक़ी वतन और असली घर पहुँच गए थे। अब वह उस ख़ुदा को रूबरू देख सकते थे जिस पर उन्होंने ता-दमे-मर्ग ईमान रखा था। अब वह अपनी हक़ीक़ी मनज़िल को पहुँच चुके थे। इस जहान से कूच के बाद उनके लिए एक बेहतर और ज़्यादा भरपूर ज़िंदगी का आग़ाज़ हो चुका था।